

जून 2024 ■ वर्ष : 69 ■ अंक : 09 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹ 60

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि



अपुरुद

पर्यावरण
और अर्थशास्त्र



अनुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

द्वारा

अपने गौरवशाली प्रकाशन राष्ट्रीय बाल मासिक



बच्चों का देश

की रजत जयंती के अवसर पर आयोजित

बाल साहित्य अमानम्

बाल-साहित्य
सृजन विमर्श

स्कूली बच्चों
के साथ संवाद

सम्मान
व स्मृति-चिन्ह

बालोदय दीर्घा
अवलोकन

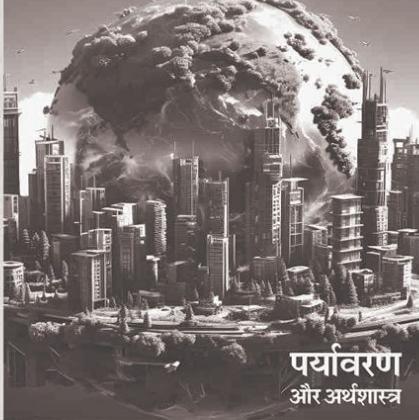
आयोजन स्थल

काव्य
गोष्ठी

16-18
अगस्त,
2024

चिल्डन 'स पीस पैलोस, राजसमंद
राजस्थान

अणुव्रत



पर्यावरण
और अर्थशास्त्र

वर्ष 69 • अंक 9 • कुल पृष्ठ 60 • जून, 2024

आचार्यश्री तुलसी जी अणुव्रत
आन्दोलन के माध्यम से मानव
कल्याण के लिए मानव समुदाय
को जागृति का सन्देश दे रहे हैं।
वह जागृति है नैतिकता की,
मनुष्य के चरित्र-निर्माण की।
देश के जन-जीवन के विकास
के लिए सच्ची खुशी और स्थायी
सुख के लिए मानव-चरित्र पर
बहुत कुछ निर्भर करता है। इसी
चरित्र के आधार पर हमें
संस्कृति के गौरव की गरिमा प्राप्त
हुई है। मनुष्य जीवन के लिए
मनुष्य का चरित्र उसका एक
मूल्यवान अलंकार है।

-बी.डी. जत्ती



सम्पादक

संचय जैन

सह-सम्पादक

मोहन मंगलम



टाइपसेटिंग व लेआउट

मनीष सोनी

क्रिएटिव्स

आशुतोष रॉय

चित्रांकन

मनोज त्रिवेदी

अविनाश नाहर अध्यक्ष	भीखम सुराणा महामंत्री
राकेश बरड़िया कोषाध्यक्ष	सुरेन्द्र नाहटा संयोजक, पत्रिका प्रसार

:: सदस्यता शुल्क विवरण ::

एक अंक	- ₹ 60
एक वर्षीय	- ₹ 750
त्रैवर्षीय	- ₹ 1800
पंचवर्षीय	- ₹ 3000
दसवर्षीय	- ₹ 6000
योगक्षेमी (15 yrs)	- ₹ 15000

:: बैंक विवरण ::

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
केनरा बैंक

A/c No. 0158101120312
IFSC : CNRB0000158

:: ऑनलाइन भुगतान के लिए ::



इस क्यूआर
कोड को स्कैन करें

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली-110002



अणुविभा

anuvrat.patrika@anuvibha.org
www.anuvibha.org

दूरभाष : 011-23233345, मोबाइल : 9116634512



अणुव्रत | जून, 2024 | 03

अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाठ्य

■ पर्यावरण और अर्थशास्त्र आचार्य तुलसी	06
■ सह-अस्तित्व अनुप्रेक्षा आचार्य महाप्रज्ञ	09
■ पृथ्वी के समान सहिष्णु बनें आचार्य महाश्रमण	13

आलेख

■ अणुव्रत आंदोलन के श्रेष्ठ पहलू शिवाजी भावे	15
■ आचार्य तुलसी का शिक्षा दर्शन डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम'	18
■ कानून एवं नैतिकता डॉ. बसंतीलाल बाबेल	22
■ सहज स्वीकार्यता का सुख सीताराम गुप्ता	23
■ सत्संग के पारस से... सनत	25
■ जीवंत रहकर लें जीवन... कविता विकास	27
■ अपनाएँ स्वास्थ्यपद जीवनशैली गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'	29
■ ये कहाँ जा रहे हम... सुधारानी तैलंग	31
■ प्रगति की रेखा रेनू सैनी	33

कहानी

■ सामंजस्य नंदन पंडित	35
--------------------------	----

काव्य

■ अब इतिहास रचें... प्रिया देवांगन 'प्रियू'	26
■ प्रेम की गंगा बहे नीता अवस्थी	34
■ संपादकीय	05
■ दीक्षा कल्याण महोत्सव : एक रिपोर्ट	41
■ अणुव्रत चुनावशुद्धि अभियान	45
■ अणुव्रत कार्यकर्ता सम्मान	48
■ अणुव्रत बालोदय शिविर	49
■ जीवन विज्ञान प्रशिक्षक प्रशिक्षण	50
■ अणुव्रत काव्यधारा	51
■ पाठक परख	54
■ अणुव्रत समाचार	56
■ अणुव्रत की बात	57



- अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन—मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- इमेल द्वारा संप्रेति कम्पोज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जायेगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। व्हाट्सएप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।
- इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।



पर्यावरण संरक्षण किसकी है जिम्मेदारी?

प

र्यावरण का क्षरण आज दुनिया के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती बन गया है। जैसे-जैसे जागरूकता बढ़ रही है, पर्यावरण संरक्षण की दिशा में प्रयास भी बढ़ रहे हैं। लेकिन पिछली एक सदी में हमने पर्यावरण का जितना नुकसान किया है, ये प्रयास नाकाफी सिद्ध हो रहे हैं। सरकारों को पर्यावरण संरक्षण की बात जहाँ उनके 'विकास' के एजेंडे में रुकावट जान पड़ती है, वहीं आम इंसान इसे 'सुख-सुविधा' से भरी जिंदगी में बाधा मान बैठा है।

प्रकृति हो या प्राणी
इस दुनिया में
हर किरदार की
एक कीमत है...
पर सीमित है।

हर सीमा में किंतु
फैला है समाज्य
असीमता का
हर किरदार की जहाँ
कीमत है
जो असीमित है।

असीमित सीमाओं से घिरा
हर किरदार
यहाँ टटोल रहा है
अपनी सीमाएं
आंक रहा है अपनी कीमत
तौल रहा है अपना बजूद!

क्या वह अपनी सीमाएं
जान पाएगा कभी?
क्या वह अपनी असीमता
खोज पाएगा कभी?
सीमा में रह कर भी
असीम बने रहने,
और असीम बन कर
सीमा में सिकुड़ने की
अपनी अतुल्य क्षमता से
वो रूबरू
हो पाएगा कभी?

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के प्रति चिंताएँ 20वीं सदी के प्रारम्भ में ही मुखरित होने लगी थीं, जब 1910 में यूरोप, अमेरिका और अफ्रीका के मध्य एक समझौते पर हस्ताक्षर किये गये। संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्त्वावधान में 1972 में आयोजित 'यूनाइटेड नेशंस कॉन्फ्रेंस ऑन द ह्यूमन एनवायर्नमेंट' में मानव के लिए 'स्वस्थ पर्यावरण का अधिकार' सिद्धांत स्थापित किया गया। इस दिशा में 1997 का 'क्योटो प्रोटोकॉल' और 2015 का 'पेरिस एग्रीमेंट' महत्वपूर्ण हैं जिन्हें दुनिया के लगभग सभी देशों ने स्वीकार किया। इन अनुबंधों के माध्यम से पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाले कारकों के संदर्भ में सरकारों की जिम्मेदारी तय की गयी थी। लेकिन, पर्यावरण को बचाने की दिशा में चिंतन और निर्णय की जो मंद गति रही है, क्रियान्वयन की गति उससे भी अधिक निराशाजनक है।

23 सितम्बर 2019 को संयुक्त राष्ट्र संघ मुख्यालय में आयोजित 'यूएन क्लाइमेट एक्शन समिट' में स्वीडन की 16 वर्षीया पर्यावरण एक्टिविस्ट ग्रेटा थनबर्ग ने वहाँ उपस्थित विश्व नेताओं को ललकारते हुए कहा था - "आपकी हिम्मत कैसे हुई? आप भावी पीढ़ी के साथ धोखा कर रहे हैं। अब भी आपने कुछ नहीं किया तो हमारी पीढ़ी आपको कभी माफ नहीं करेगी।" ग्रेटा की चिंताओं का किसीके पास जवाब नहीं था। आश्वर्य, आसन्न खतरे को देखते हुए भी सरकारें अनजान बनी हैं और 'पहले आप, पहले आप' की तर्ज पर दूसरे देशों पर ठीकरा फोड़ने की होड़ में लगी हैं।

सामान्यतः पर्यावरण को हुए नुकसान में विकसित देशों को सबसे अधिक जिम्मेदार माना जाता है। अमेरिका में हुए एक शोध में 65 प्रतिशत नागरिकों का यह मानना था कि सरकार इस दिशा में बहुत कम प्रयास कर रही है। कमोबेश यही विश्वासीत हर देश की है। सरकारों एक तरफ विकास के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों के अंथाधुंध दुरुपयोग की इजाजत देती नजर आती है, वहीं दूसरी ओर पर्यावरण संरक्षण के लिए बजट देने में ना-नुकुर करती हैं। पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों में भारत की स्थिति अत्यंत चिंतनीय है। 2022 की 'एनवायर्नमेंटल परफॉरमेंस इंडेक्स' में भारत की रैंक 180 देशों में 180वीं है। सबसे अंतिम स्थान! यह अत्यंत चिंतनीय है।

लेकिन, सरकारों तब जागरूक होती हैं, जब जनता जागरूक होती है। जनता की प्रखर आवाज के अभाव में पर्यावरण संरक्षण जैसे विषय सरकारों की प्राथमिकता सूची में सबसे नीचे खिसक जाते हैं। भारत में ऐसी आवाजें समय-समय पर मुखर होती रही हैं और उनका प्रभाव भी सरकारी नीतियों पर पड़ता हुआ देखा गया है। 70 के दशक में हिमालय क्षेत्र में किया गया 'चिपको आंदोलन', विशाल बांधों के खिलाफ 1985 में शुरू हुआ 'नर्मदा बचाओ आंदोलन', 1980 में झारखण्ड में हुआ 'जंगल बचाओ आंदोलन' और हाल ही के वर्षों में मुंबई में हुआ 'आरे बचाओ आंदोलन' नागरिकों की जागरूकता को दर्शाता है। लद्धाख की वादियों में 6 मार्च 2024 से प्रसिद्ध पर्यावरणविद् सोनम वांगचुक के 21 दिवसीय अनशन से एक नये आंदोलन की शुरूआत हुई है।

लेकिन, शक्तिशाली सरकारों को झंझोड़ने के लिए लगता है कि ये आवाजें भी पर्यास नहीं हैं। अब हर नागरिक को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक होना होगा और अपनी आवाज को बुलांद कर उठ खड़ा होना होगा। यह तभी संभव है जब वह स्वयं अपने जीवन में पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशील हो। स्वयं की प्रतिबद्धता के बिना उसकी आवाज निस्सेज ही सिद्ध होगी। अणुव्रत इसी व्यक्तिगत प्रतिबद्धता की बात करता है। अणुव्रत आचार सहिता का यह व्रत - मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा - पर्यावरण को पहुँचाये जाने वाले किसी भी नुकसान के खिलाफ अहिंसक प्रतिरोध की आधारभूमि तैयार करता है। आइए, पर्यावरण संरक्षण के लिए हम अपनी क्षमता के अनुरूप योगदान अवश्य दें ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ सुरक्षित रह सकें।

सं. जै.

sanchay_avb@yahoo.com



अणुव्रत | जून 2024 | 05

पर्यावरण और अर्थशास्त्र

पर्यावरण की समस्या किसी एक राष्ट्र की समस्या नहीं है। इससे पूरा विश्व प्रभावित हो रहा है। इस समस्या को अनेक कारणों से देखने और इसका स्थायी हल खोजने की जरूरत है। समय हमारे हाथ से निकलता जा रहा है। अभी कुछ नहीं हुआ तो फिर कुछ होने का भी नहीं है।

आ ज संसार के सामने पर्यावरण की समस्या सबसे अधिक विकट है। एक समय था, जब आणविक अस्त्रों की समस्या भयावह थी। एक से एक शक्तिशाली और संहारक अस्त्रों का निर्माण हो रहा था। विश्व की महाशक्तियां आतंकित थीं। परस्पर संदेह का वातावरण था।

परमाणु अस्त्र बनाने की पहल सन् 1945 में अमेरिका ने की। उस वर्ष तीन बम बनाने की सामग्री एकत्रित हो गयी। एक बम का परीक्षण न्यू मेक्सिको में किया गया था। वह विश्व का प्रथम परमाणु परीक्षण था। शेष दो बम नागाशाकी और हिरोशिमा पर गिराये गये। सोवियत संघ ने पहला परमाणु परीक्षण सन् 1946 में किया। उसके बाद ब्रिटेन, फ्रांस और चीन ने भी अपनी परमाणु-क्षमता का परीक्षण किया।

विश्व में सन् 1945 से 1964 तक अठारह सौ से अधिक परमाणु परीक्षण किये जा चुके थे। लगभग पाँच सौ परीक्षण बायमंडल में हुए और शेष परीक्षण भूमिगत हुए। परीक्षणों की प्रतिस्पर्धा के दुष्परिणाम देखकर परमाणु अस्त्रों के निर्माण और परीक्षण पर एक सीमा तक प्रतिबन्ध लगा। अब परमाणु अस्त्र-संकट की चर्चा काफी पुरानी पड़ गयी।

मुड़कर देखने का मौका

पर्यावरण की समस्या एक साथ उभरकर सामने आयी तो पूरा विश्व चौकटा हो गया। एक दृष्टि से यह अच्छा हुआ। इसके कारण लोगों की सोच तो बदली। अन्यथा इस विषय में कोई किसी की बात सुनने के लिए तैयार नहीं था। मनुष्य के सामने एक ही लक्ष्य था - जैसे-तैसे समृद्धि बढ़े, सब सम्पन्न बनें - यह नारा जितना लुभावना था, उतना ही घातक था। सम्पन्नता के नशे में प्रकृति का असीम दोहन होने लगा। इससे पर्यावरण की समस्या पैदा हुई। लोगों को सोचने का मौका मिला। छाया की तरह अनुगमन कर रही विनाश-लीला को मुड़कर देखने का मौका मिला। कोई बचेगा ही नहीं तो सम्पन्नता किस काम आएगी, इस चिन्तन ने मनुष्य को सजग किया।

समस्या की जड़

धरती और सूरज के बीच ओजोन छतरी है। यह पृथ्वी की सतह से दस से पन्द्रह किलोमीटर ऊपर समताप मण्डल में स्थित एक विरल परत है। यह अन्तरिक्ष से आने वाली पराबैंगनी जैसी हानिकारक किरणों को पृथ्वी तक पहुँचने से रोकती है। प्राकृतिक असन्तुलन और प्रदूषण के कारण उसमें छेद हो गये हैं।





प्रकृति के पास भी इतनी सम्पदा है कि मानव जाति कितना ही उपयोग करे, वह कभी समाप्त नहीं हो सकती। किन्तु जब से उसका दुरुपयोग होने लगा है, अतिमात्रा में दोहन होने लगा है, उसके अस्तित्व को खतरा हो गया है।

छेद बढ़ते जा रहे हैं। धरती पर जीवन की सुरक्षा ओजोन के कारण है। उसके क्षतिग्रस्त होने से जीवन के लिए खतरा बढ़ रहा है। स्थान-स्थान पर भूकम्प, बाढ़, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप जनजीवन को अस्त-व्यस्त कर रहे हैं।

ज्वालामुखी फटने की संभावनाएं प्रबल हो रही हैं। ऐसी स्थिति में सम्पन्नता का भोग कौन करेगा? कैसे करेगा? आज विश्व के मूर्धन्य व्यक्तियों को यह चिन्ता सता रही है कि पृथ्वी का क्या होगा? यदि पृथ्वी नहीं बची तो मनुष्य नहीं बचेगा और मनुष्य नहीं होगा तो यह सम्पन्नता अर्थहीन हो जाएगी।

मनुष्य जैसे दूरदर्शी, चिन्तनशील और विवेकशील प्राणी के लिए यह एक ऐसी चुनौती है, जिसका मुकाबला करना बहुत आवश्यक है। मुकाबले की तैयारी से पहले सोचें कि समस्या किस बात की है। मेरे अभिमत से समस्या की जड़ है मनुष्य का एकांगी दृष्टिकोण।

महावीर ने अनेकान्त दृष्टिकोण का मूल्य समझा, उसका उपयोग किया और उसके बारे में जानकारी दी, पर लोग अपनी इस दार्शनिक और सांस्कृतिक धरोहर को भूलते जा रहे हैं। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की सीमाओं को अनदेखा कर एक ही दिशा में

आगे बढ़ रहे हैं। उन्हें और कुछ नहीं चाहिए, सम्पन्नता और सुविधा चाहिए। पता नहीं, यह दृष्टिकोण व्यक्ति को कहाँ ले जाकर छोड़ेगा। और इससे उसका कौन-सा हित सधेगा?

महावीर ने दृष्टिकोण को सम्यक् और स्थिर बनाने पर अत्यधिक बल दिया। उन्होंने कहा - "सम्यक् दृष्टिकोण सब धर्मों का मूल है और मिथ्या दृष्टिकोण सब पापों का मूल है। संसार में जितने पाप हैं, उनमें सबसे बड़ा पाप दृष्टिकोण का मिथ्यात्व है। जो सम्यक् दृष्टि से संपत्ति होता है, वही समत्वदर्शी होता है। 'समत्तदंसी न करेइ पाव' - महावीर की यह अनुभूति एक बहुत बड़े सत्य की अभिव्यक्ति है। यदि मनुष्य का दृष्टिकोण सही होता, उसमें एकांगिता नहीं होती तो वह अर्थ को ही सब कुछ नहीं मानता। अर्थ ही सब कुछ नहीं होता तो प्रकृति का इतना दोहन नहीं होता, इतना औद्योगिकरण नहीं होता। यह सब हो रहा है क्योंकि मनुष्य का दृष्टिकोण सही नहीं है।

प्राकृतिक संपदा को खतरा

संसार में जो जैसे हैं, वे वैसे ही रहें तो कहीं कोई अव्यवस्था नहीं होती। प्राकृतिक व्यवस्था के साथ छेड़छाड़ करने से ही असंतुलन बढ़ता है। मनुष्य ने पृथ्वी, पानी क्या, आकाश की छेड़छाड़ शुरू कर दी। वायुमण्डल में ऐसी गैसें छोड़ी जा रही हैं, जो 'ओजोन परत' को अधिक से अधिक नुकसान पहुँचा रही हैं। यदि वह ऐसा नहीं करता तो प्राकृतिक सम्पदा का इतना क्षरण कभी नहीं होता।

मैंने एक ऐसे व्यक्ति को देखा है, जो सम्पन्नता के शिखर पर था। उसकी जमीन में सोना गड़ा हुआ था। उसके मकान की दीवारों में हीरे-पत्ते जड़े हुए थे। उसके कमरों के कपाट सोने के थे। उसके पास इतना वैभव था कि उसकी सात पीढ़ियां खुले हाथ धन बाँटतीं तो भी कोई कमी नहीं आती। वह व्यक्ति जुए-सट्टे के चंगुल में फँसकर बर्बाद हो गया। यह कोई कहानी नहीं, आँखों देखी घटना है। प्रकृति के पास भी इतनी सम्पदा है कि मानव जाति कितना ही उपयोग करे, वह कभी समाप्त नहीं हो सकती। किन्तु जब से उसका दुरुपयोग होने लगा है, अतिमात्रा में दोहन होने लगा है, उसके अस्तित्व को खतरा हो गया है।

प्रकृति का असीम दोहन करने वाले लोग कहते हैं कि यह अभियान सब लोगों की संपन्नता के लिए है। मुझे तो नहीं लगता कि ऐसा कोई चिन्तन है। सबकी कौन देखता है? जो कुछ लोग संपत्ति हैं, वे अतिसम्पन्न हो रहे हैं। शेष लोग विपन्नता का अभिशाप भोग रहे हैं। एक बात और है, यदि सब लोग सम्पन्न हो जाएंगे तो सम्पन्नता का कोई महत्व ही नहीं रहेगा।

सम्पन्नता नहीं है समाधान

एक पौराणिक कहानी है। इन्द्र और इन्द्राणी स्वर्गलोक से मनुष्यलोक में आये। वे एक गाँव के निकट ठहरे। उन्होंने देखा, गाँव में अधिसंख्य लोग दरिद्र हैं, संकटग्रस्त हैं। इन्द्राणी ने कहा - "आप तो संकटमोचक हैं। इनका संकट दूर करें।" इन्द्र बोले - "सबको संकटमुक्त नहीं किया जा सकता।" इन्द्राणी इस मुद्दे पर



अङ्ग गयीं। उन्होंने कहा - "आप चाहें और वह काम न हो, यह मैं नहीं मानती। आपको कुछ करना ही होगा।" स्त्रीहठका मुकाबला इन्द्र नहीं कर सके। वह बोले- "मुझे विश्वास तो नहीं है। फिर भी तुम कहती हो तो मैं एक प्रयास करके देखता हूँ।"

इन्द्र ने अपनी दिव्यशक्ति का उपयोग किया। गाँव के मोड़-मोड़ पर सोने के ढेर लग गये। थोड़ी-सी देर में यह संवाद सब लोगों तक पहुँच गया। स्त्री, पुरुष, बच्चे आदि गाँव के सभी लोग तत्परता से घरों से बाहर आये। जिसके पास थैला, पेटी, टोकरी आदि जो भी साधन था, उसे सोने से भर लिया। पूरा गाँव दरिद्रता के अभिशाप से मुक्त हो गया। सबके पास सुख-सुविधा के पर्यास साधन हो गये।

कुछ समय बाद इन्द्र और इन्द्राणी-दोनों फिर उसी गाँव में आये। उन्होंने देखा कि गाँव के लोग सम्पत्ति हैं, पर प्रसन्न नहीं हैं। उनकी आकृतियों पर विषाद की गहरी छाया है। विषाद का कारण समझ में नहीं आया। कुछ लोग वहाँ खड़े आपस में बतिया रहे थे। एक व्यक्ति बोला - "पता नहीं, किस मूर्ख का काम है। सब लोगों को सम्पत्ति बना दिया। अब हम अपनी संपदा किसे दिखाएँ? यहाँ तो कोई देखने वाला भी नहीं है।"

इन्द्राणी की ओर देखकर इन्द्र बोले - "तुमने कहा कि इनका संकट मिटा दो। मैंने सबको सम्पत्ति बना दिया, किन्तु इनका संकट कम होने के स्थान पर बढ़ा है। तुम इस बात को समझ लो कि संकट विपन्नता का नहीं होता, वृत्तियों का होता है। जब तक वृत्तियों का परिमार्जन नहीं होगा, संकट भी दूर नहीं होगा। जब तक दृष्टि सम्पर्क नहीं होगी, नये-नये संकट आते रहेंगे।"

मैं अकेला कैसे पहन सकता हूँ?

महात्मा गांधी एक दृष्टिसम्पन्न व्यक्ति थे। शरीर से दुबले-पतले, पर मन से उदार। कम भोजन करते और कम कपड़े पहनते। केवल विचारों से ही नहीं, आचरण से सच्चे समाजवादी थे। उनका चिन्तन था कि जब देश के नागरिक भूखे रहते हैं, वे भरपेट कैसे खा सकते हैं?

एक बार एक बालक गांधी के पास जाकर बोला- "बापू! आप इतनी छोटी धोती और गंजी क्यों पहनते हैं? मैं आपको पूरी पोशाक देना चाहता हूँ।"

गांधी ने कहा- "बेटा! तुम्हारे चाहने से क्या होगा, तुम्हारी माँ पूरी पोशाक नहीं देगी।"

बालक ने आग्रह करके कहा- "बापू! आप मना न करें। मेरी माँ बहुत अच्छी और उदार है। मैं जो कहूँगा, वही कर लेगी।"

गांधीजी उसे समझाते हुए बोले- "बेटा! एक पोशाक से मेरा काम नहीं चलेगा। मुझे तीस करोड़ पोशाकें चाहिए। तीस करोड़ न मिले तो मैं अकेला कैसे पहन सकता हूँ?"

गांधीजी स्वयं कम खाते और कम पहनते, वे यहीं पर रुके नहीं। उन्होंने देश की जनता को संयम और सादगी का रास्ता

प्रकृति के साथ मनुष्य का तादात्म्य जुड़ा होता तो वह बिना सोचे-विचारे इस प्रकार उसका दोहन नहीं कर पाता। प्रकृति का अनियन्त्रित दोहन सीधा प्रलय को आमंत्रण है। जब तक उसकी आर्थिक दृष्टि स्वस्थ और संतुलित नहीं होती, पर्यावरण संतुलित कैसे रहेगा?

दिखाया। वे देश को दरिद्र रखना नहीं चाहते थे। उन्होंने जनता का ध्यान लघु उद्योगों की ओर आकृष्ट किया। घर-घर में चरखा लाकर उन्होंने बेरोजगारी की समस्या का नया समाधान प्रस्तुत किया।

तादात्म्य का अनुभव

वि. सं. 2005 में मैंने कुछ साधुओं को सौराष्ट्र भेजा। वहाँ भयंकर विरोध का वातावरण बना। साधुओं को ठहरने के लिए उपयुक्त स्थान नहीं मिलता। खाने के लिए पूरा भोजन नहीं मिलता। यह संवाद प्राप्त होने के बाद मैंने दूध छोड़ दिया और खाद्य पदार्थों की संख्या सीमित कर दी। किसी को कुछ बताये बिना मैं यह प्रयोग करता रहा। साधुओं में ऊहापोह हुआ।

मेरे सामने प्रश्न आया- "स्वास्थ्य ठीक नहीं है क्या? भोजन में अन्तर कैसे आ गया?" मैंने बात आयी-गयी कर दी। मेरे मन में साधुओं के प्रति संवेदना का भाव जागृत था। वे भूखे रहें और मैं भरपेट भोजन करूँ, यह मेरे लिए असह्य हो गया।

कुछ समय के बाद सौराष्ट्र से संवाद आये कि वहाँ साधुओं को कोई कठिनाई नहीं है, तब मैंने पुनः व्यवस्थित भोजन शुरू कर दिया। गांधी महान थे, उनका चिन्तन भी महान था। मेरा प्रयोग एक छोटे परिवेश में था, पर तादात्म्य की बात दोनों प्रसंगों के साथ जुड़ी हुई है।

फिर कुछ नहीं होगा

प्रकृति के साथ मनुष्य का तादात्म्य जुड़ा होता तो वह बिना सोचे-विचारे इस प्रकार उसका दोहन नहीं कर पाता। प्रकृति का अनियन्त्रित दोहन सीधा प्रलय को आमंत्रण है।

प्राकृतिक स्थितियों में आये बदलाव से मनुष्य की सोच बदली है, पर आचरण नहीं बदला। जब तक उसकी आर्थिक दृष्टि स्वस्थ और संतुलित नहीं होगी, पर्यावरण संतुलित कैसे रहेगा?

पर्यावरण की समस्या किसी एक राष्ट्र की समस्या नहीं है। इससे पूरा विश्व प्रभावित हो रहा है। इस समस्या को अनेक कोणों से देखने और इसका स्थायी हल खोजने की जरूरत है। समय हमारे हाथ से निकलता जा रहा है। अभी कुछ नहीं हुआ तो फिर कुछ होने का भी नहीं है।



सह-अस्तित्व अनुप्रेक्षा

महावीर की अहिंसा का मुख्य आधार है - सह-अस्तित्व। इनके अनुसार परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाले तत्व साथ रह सकते हैं। महावीर के समता के सिद्धांत ने भारतीय मानस को बहुत प्रभावित किया। यह सिद्धांत शाश्वत सिद्धांत है। ढाई छार वर्ष पहले प्रतिपादित ये सिद्धांत वर्तमान युग के लिए भी बहुत मौलिक और उपयोगी हैं।

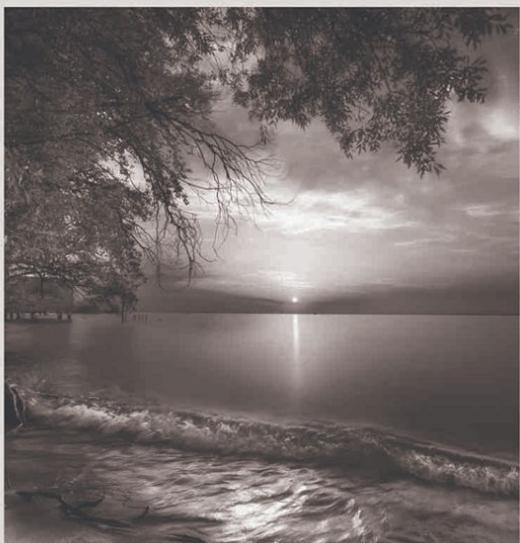
सा मंजस्य के द्वारा विचार-भेद रहते हुए भी विचार-भेद से उत्पन्न होने वाले संघर्ष को मिटाया जा सकता है, विचार-भेद से उठने वाले स्फुलिंगों को शांत किया जा सकता है। अनेक व्यक्ति रहें, अनेक विचार रहें। और उनके रहते हुए भी विचारों की टकराहट न हो, स्फुलिंग न उछलें, संघर्ष न हो-यह सम्भव हो सकता है। इस दर्शन के आधार पर महावीर ने एक सूत्र दिया - सह-अस्तित्व का। इसका तात्पर्य है कि विरोधी व्यक्तियों, विरोधी विचारों और विरोधी धर्मों का सह-अस्तित्व हो सकता है। वे एक साथ रह सकते हैं।

सामान्य धारणा यह है कि दो विरोधी धर्म एक साथ नहीं रह सकते। भगवान महावीर ने कहा, "दो विरोधी धर्म एक साथ रह सकते हैं।" दार्शनिक भाषा में नित्य-अनित्य, सामान्य-विशेष-ये एक साथ रहते हैं। नित्य अनित्य का और अनित्य नित्य का विरोधी है, सामान्य विशेष का और विशेष सामान्य का विरोधी है, पर एक साथ रहते हैं। अस्ति और नास्ति, होना और न होना - दोनों साथ-साथ रहते हैं। दोनों विरोधी हैं, पर उनका सह-अस्तित्व है। जहाँ अस्ति और नास्ति, नित्य और अनित्य, सामान्य और विशेष - इनका सह-अस्तित्व प्रतिपादित किया गया, वहाँ समझाया गया कि जिन्हें हम विरोधी मानते हैं, वे वस्तुतः विरोधी नहीं हैं। इस

जगत में एक भी तत्त्व ऐसा नहीं है, जिसे हम कह सकें कि यह इसका सर्वथा विरोधी है या सर्वथा अविरोधी है। जिसे हम विरोधी मानते हैं, वह अविरोधी भी है। जिसे हम अविरोधी मानते हैं, वह विरोधी भी है। दोनों धर्म एक साथ चलते हैं। दोनों का सह-अस्तित्व है।

व्यवहार के धरातल पर महावीर ने सह-अस्तित्व का प्रतिपादन किया और कहा, "एक साथ रहा जा सकता है।" हम जानते हैं कि जहाँ सर्दी है, वहाँ गर्मी नहीं है और जहाँ गर्मी है वहाँ सर्दी नहीं है, किन्तु यह सच्चाई नहीं है। सर्दी और गर्मी में मात्र डिग्री का अंतर है, मात्रा का भेद है। जब शरीर का तापमान 98 डिग्री होता है, तब हम कह देते हैं कि तापमान सामान्य है, ज्वर नहीं है। जब वह बढ़कर 100 डिग्री हो जाता है, तब हम कह देते हैं कि ज्वर हो गया। गरम-ठंडा, अच्छा-बुरा - ये सब हमारी अपेक्षाएं हैं और इसका निर्णय सापेक्षता के आधार पर ही होता है। यदि हम सापेक्षता को न देखें और निरपेक्ष विचार करें तो किसी को गरम या ठंडा, अच्छा या बुरा नहीं कह सकते। सब एक अपेक्षा से जुड़े हुए हैं। और उस अपेक्षा के आधार पर हम ये सारे विश्लेषण करते हैं और कहते हैं - यह गरम है, यह ठण्डा है। यह बुरा है, यह अच्छा है।





जब आदमी समन्वय की चेतना से समाधान खोजता है तो कठिन कार्य भी सरल बन जाता है। प्रत्येक समस्या का समाधान हो सकता है। समस्या है तो समाधान भी है। ऐसी एक भी समस्या नहीं है जिसका समाधान न हो। जहाँ समन्वय की चेतना का विकास होता है, जहाँ सापेक्षता की चेतना जागृत होती है, वहाँ कुछ भी असम्भव नहीं होता।

अग्नि को ठण्डा भी कहा जा सकता है और बर्फ को गरम भी कहा जा सकता है। ये जितने सापेक्ष धर्म हैं, उन्हें हम किसी एक दृष्टिकोण से नहीं देख सकते। महावीर ने कहा, "सापेक्षता के बिना हम सत्य का प्रतिपादन नहीं कर सकते। जहाँ सापेक्षता से हम सत्य का प्रतिपादन करते हैं, उसका फलित होगा सह-अस्तित्व।"

सह-अस्तित्व और समन्वय

वर्तमान में राजनीति के मंच से सह-अस्तित्व की ध्वनि मुख्य हुई है। संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे अंतरराष्ट्रीय मंच से सह-अस्तित्व की चर्चा सुनायी देती है, किन्तु यदि हम यह जानना चाहें कि इस सिद्धांत का प्रतिपादन सबसे पहले किसने किया तो भगवान महावीर का नाम सबसे पहले स्मृति-पटल पर उभरेगा। सह-अस्तित्व का विस्तार के साथ यदि कहीं प्रतिपादन मिलता है तो वह स्याद्वाद में, अनेकांतवाद में, सापेक्षवाद में। सबसे अच्छा मार्ग है - सहन करना, समन्वय करना और सह-अस्तित्व की चेतना को विकसित करना।

आदमी भिन्नता से कब तक लड़ेगा? कब तक संघर्ष करता रहेगा? लड़ाई का कभी कहीं अंत नहीं होता। अंत तब होता है जब मनुष्य जाति ही समाप्त हो जाती है। लड़ते-लड़ते सब समाप्त हो-

जाएंगे तब लड़ाई स्वतः बन्द हो जाएगी, किन्तु यह समस्या का समाधान नहीं है। यदि मनुष्य जाति को जीना है, जीवित रहना है तो उसे कोई विकल्प ढूँढ़ना पड़ेगा, मार्ग निकालना होगा। वह विकल्प और मार्ग है - सह-अस्तित्व और समन्वय की चेतना का विकास। इसके विकास के द्वारा ही असहिष्णुता की भावना को मिटाया जा सकता है।

पंडित नेहरू ने एक राष्ट्र और दूसरे राष्ट्र के बीच सह-अस्तित्व की बात पर बल दिया था। आज हम उस बात की चर्चा न करें, पर क्या पारिवारिक जीवन में सह-अस्तित्व आवश्यक नहीं है? परिवार में सह-अस्तित्व अत्यन्त अपेक्षित है। तभी शांत सहवास रह सकता है, अन्यथा नहीं। शांत सहवास जीवन की सबसे बड़ी सफलता है। साथ में रहना और प्रेमपूर्वक रहना बहुत बड़ी बात है। बहुत अधिक प्रेम हो और वे यदि कुछ काल तक साथ में रह जाएं तो प्रेम टूटते देरी नहीं लगती। दो को साथ में रखकर देख लो कि उनका घनिष्ठ प्रेम कैसे खंड-खंड होकर बिखर जाता है। जब तक साथ नहीं रह लें, तब तक घनिष्ठता बनी रहती है। साथ रहे कि घनिष्ठता टूटी। साथ रहकर घनिष्ठ प्रेम बनाये रखना, लम्बे समय तक बनाये रखना एक बहुत बड़ी उपलब्धि है क्योंकि आदमी पग-पग पर टकरा जाता है। यह टकराव स्वार्थ के कारण, मान्यताओं के कारण, धारणाओं के कारण होता है। उस स्थिति में सह-अस्तित्व और समन्वय की चेतना से ही वह तनाव या टकराव समाप्त हो सकता है।

जीवन जीने की कला है खिंचाव और ढील का समन्वय। सह-अस्तित्व के लिए दोनों जरूरी हैं। खिंचाव के साथ ढील देने की कला भी हम जानें। एक तथ्य बहुत स्पष्ट है कि जहाँ भेद होता है, तनाव होता है, वहाँ विरोध की स्थिति पैदा हो जाती है। यह क्यों होता है? निकट की रिश्तेदारी में भी यह अपवाद नहीं है। जहाँ भेद रेखा आयी कि चेतना बदल गयी। चेतना का परिवर्तन क्यों होता है? जब आदमी समन्वय की चेतना से समाधान खोजता है तो कठिन कार्य भी सरल बन जाता है। प्रत्येक समस्या का समाधान हो सकता है। समस्या है तो समाधान भी है। ऐसी एक भी समस्या नहीं है जिसका समाधान न हो। जहाँ समन्वय की चेतना का विकास होता है, जहाँ सापेक्षता की चेतना जागृत होती है, वहाँ कुछ भी असम्भव नहीं होता।

एक अँगुली को दूसरी अँगुली की अपेक्षा रहती है। विरोध कहाँ नहीं है। हम हाथ को देखें। चार अँगुलियाँ और अँगूठा विरोधी हैं। दोनों भिन्न दिशाओं में हैं। पूरी मानव-जाति का विकास इस विरोध के आधार पर हुआ है। यदि अँगूठा अँगुलियों की समरेखा में होता तो मनुष्य जाति का विकास कभी नहीं होता, संस्कृति और सभ्यता का विकास कभी नहीं होता। सभ्यता और संस्कृति का विकास इसी विरोध के कारण हुआ है। अँगूठा अँगुलियों की विरोधी दिशा में है, इसलिए लिपि का, चित्रकारिता का और शिल्प का विकास हुआ है। दोनों की भिन्न दिशागमिता ने विकास में योग दिया है। इनमें भिन्नता है, पर हम समन्वय करना जानते हैं, इसलिए कोई टकराव नहीं होता। अँगूठा भी नहीं लड़ता



और अँगुलियां भी नहीं लड़तीं। आवश्यकतावश दोनों सामंजस्य स्थापित कर लेते हैं। लिखना है तो अँगुली मिल जाती है अँगूठे से। कोई कार्य करना है तो दोनों परस्पर मिल जाते हैं।

प्रश्न होता है कि समन्वय की चेतना का विकास कैसे होता है? जो व्यक्ति अपने स्वार्थ, मान्यता और असहिष्णुता - इन तीनों वृत्तियों पर शासन करता है, उसमें समन्वय का विकास होता है। जिस व्यक्ति में स्वार्थ की प्रबलता है, जिसमें मान्यता का आग्रह है और जो असहिष्णु है, वह समन्वय की चेतना को जागृत नहीं कर सकता। स्वार्थ का भी समीकरण करना होता है।

पुराने समय में साम्प्रदायिक संघर्ष और जातीय संघर्ष - ये दो संघर्ष थे। आज तीसरा संघर्ष और सामने आया है। वह है - वर्ग संघर्ष। इसका जन्म आज की राजनीति से हुआ है। यह वर्ग-संघर्ष भी तब तक नहीं मिट सकता, जब तक स्वार्थ का समीकरण नहीं होता। आज एक वर्ग के स्वार्थ दूसरे वर्ग के स्वार्थों से टकराते हैं। मिल मालिकों का स्वार्थ मजदूरों से टकराता है। संपन्न व्यक्ति के स्वार्थ गरीब आदमी से टकराते हैं। यह टकराव इसलिए है कि स्वार्थ का समीकरण नहीं होता।

एक घटना है। कुम्हार की दो लड़कियां थीं। एक किसान के यहाँ ब्याही थी और दूसरी का विवाह एक कुम्हार के यहाँ हुआ था। एक दिन पिता पुत्रियों से मिलने गया। किसान के यहाँ विवाहित बेटी ने कहा - "पिताजी ! बड़ी मुसीबत है। खेत बो दिये हैं। बरसात नहीं आ रही है। आकाश में बादल हैं ही नहीं। सारा श्रम नष्ट हो जाएगा। आप प्रार्थना करें कि बरसात आ जाये।" पिता दूसरी बेटी के यहाँ गया। उसने कहा - "पिताजी ! सारे भांड आवे में पक रहे हैं। कहीं बरसात न आ जाये।" पिता की समस्या थी कि वह किसके कल्याण की कामना करे।

पिता किसान के यहाँ ब्याही पुत्री के पास जाकर बोला, "एक काम करना। वर्षा आ जाये, खेती अच्छी हो तो आधा हिस्सा अपनी बहन को दे देना।" उसने स्वीकार कर लिया। फिर पिता कुम्हार के यहाँ ब्याही पुत्री के पास जाकर बोला - "वर्षा न आये, खेती न हो, आवा ठीक पके तो आधा हिस्सा अपनी बहन को दे देना।" उसने स्वीकार कर दिया। यह समीकरण होने पर दोनों प्रसन्न हो गयीं।

महाराज जयसिंह और सिद्धराज्य - ये दो गुजरात के प्रसिद्ध शासक हुए हैं। ये समन्वयवादी थे। आचार्य हेमचन्द्र उनके गुरुतुल्य थे। एक बार महाराज सिद्धराज शिवमंदिर में गये। आचार्य हेमचन्द्र साथ थे। वहाँ किसी व्यक्ति ने कहा कि आचार्य हेमचन्द्र आपके साथ तो हैं, पर ये शिव की स्तुति नहीं करते। महाराज ने पूछा - "आचार्यवर ! क्या आप शिव की स्तुति कर सकते हैं?" उन्होंने कहा - "क्यों नहीं कर सकता? कर सकता हूँ।" उन्होंने तत्काल महादेव पर चौवालीस श्लोक कहे। प्रथम श्लोक में उन्होंने कहा -

'भवबीजांकुरजनना, रागाद्या : क्षयमुपागता : यस्य।
ब्रह्मावाविष्णुर्वा, हरोजिनो वानमस्तस्मै॥'

मुझे नाम से कोई मोह नहीं है। मुझे आकार से कोई मोह नहीं

हम भेद में से अभेद खोज सकें, विरोध में अविरोध का खोज सकें और समन्वय के द्वारा टकराव की स्थिति को टाल सकें, सह-अस्तित्व और समन्वय का विकास कर सकें तो समाज सुन्दर होगा, स्वस्थ होगा और हमारा सामाजिक स्वारूप विकसित होगा। इसके बिना सामाजिक स्वारूप की कल्पना नहीं की जा सकती।

है। जिस आत्मा के भव-बीज के उत्पादक राग-द्वेष समाप्त हो चुके हैं, क्षीण हो चुके हैं, फिर चाहे वह ब्रह्मा हो, विष्णु हो, महादेव हो या जिन हो, उन सबको मेरा नमस्कार।

बात सारी समन्वय में बदल गयी। यह आवश्यक है कि हमारी समन्वय की चेतना जागे। हम भेद में से अभेद खोज सकें, विरोध में अविरोध को खोज सकें और समन्वय के द्वारा टकराव की स्थिति को टाल सकें, सह-अस्तित्व और समन्वय का विकास कर सकें तो समाज सुन्दर होगा, स्वस्थ होगा और हमारा सामाजिक स्वास्थ्य विकसित होगा। इसके बिना सामाजिक स्वास्थ्य की कल्पना नहीं की जा सकती। जो लोग प्रशासन में जाने वाले हैं, प्रशासन के क्षेत्र में जिन्हें काम करना है, उनके लिए बहुत आवश्यक है कि वे सह-अस्तित्व और समन्वय की चेतना को जागृत करने का अभ्यास करें।

पक्ष और प्रतिपक्ष

प्रत्येक पदार्थ अपने विरोधी पदार्थ से जुड़ा हुआ है। अनेकांत का मूल आधार है - विरोधी के अस्तित्व की स्वीकृति, प्रतिपक्ष की स्वीकृति। इस स्वीकृति से ही अनेकांत का विकास होता है। अनेकांत कहता है - सत्य को एक दृष्टि से मत देखो। सत्य को अस्तित्व की दृष्टि से देखते हो तो साथ-साथ उसे नास्तिक की दृष्टि से भी देखो। स्वीकृति के साथ अस्वीकृति - दोनों साथ-साथ चलनी चाहिए। एक से काम नहीं चलता।

सह-अस्तित्व की खोज

यह संसार ही ऐसा है। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह जैसा बोलता है, सब वैसे ही बोलें। वह जैसा चलता है, सब वैसे ही चलें। वह जैसे कपड़े पहनता है, सब वैसे ही कपड़े पहनें। वह जैसा आचरण या व्यवहार करता है, सब वैसा ही आचरण या व्यवहार करें। यह चाह सबकी होती है। पर ऐसा होता नहीं। विरोधी रुचियां हैं। विरोधी प्रकृतियां और विरोधी विचार हैं। विरोधी स्वभाव और विरोधी आदर्तें हैं। इन्हीं का परिणाम है - टक्कर, संघर्ष और लड़ाइयां। पहले ये बीज के रूप में पैदा होते हैं। बढ़ते-बढ़ते महायुद्ध का रूप धारण कर लेते हैं। एक-दो व्यक्तियों का झगड़ा विश्वयुद्ध बन जाता है। महायुद्ध कोई बड़ी बात के लिए नहीं होता। उसका मूल छोटा होता है। कारण बहुत ही सुख्म होता है। महायुद्ध का कोई बड़ा कारण नहीं मिलेगा। छोटे-छोटे कारणों

के लिए ही महायुद्ध लड़े गये हैं। थोड़ी-सी भूमि के लिए महायुद्ध हुए हैं। पत्नी को छुड़ाने के लिए महायुद्ध हुए हैं। हल्के से तिरस्कार के लिए महायुद्ध हुए हैं।

क्या यह संसार लड़ने के लिए ही है? क्या मनुष्य सदा लड़ता ही रहेगा। क्या वह अपनी रुचि और विचारों को दूसरों पर थोपता ही रहेगा? क्या इसके अतिरिक्त कोई तीसरा रास्ता भी है? क्या ऐसा मार्ग भी है कि हम विरोधों के बीच में रहते हुए भी अविरोध का जीवन जी सकें? अनेक भेदों के बीच रहते हुए भी अभेद का जीवन जी सकें? यह प्रश्न उभरता है। अनेकांत ने इस प्रश्न को समाहित करने के लिए मार्ग की खोज की। वह मार्ग है सह-अस्तित्व।

सह-अस्तित्व : प्रकृति का नियम

आज राजनीतिक क्षेत्र में सह-अस्तित्व पर बहुत बल दिया जाता है। को-एगिस्टेन्स का सिद्धांत महत्वपूर्ण माना जाता है। जीवन की विभिन्न प्रणालियों में सह-अस्तित्व जरूरी है। एक समाजवादी विचारधारा है। दूसरी पूँजीवादी विचारधारा है। एक लोकतंत्र की प्रणाली है तो दूसरी एक-तंत्र की प्रणाली है। दोनों प्रकार की विचारधाराएं, दोनों प्रकार की प्रणालियां आज संसार में प्रचलित हैं। दोनों विरोधी हैं। ऐसी स्थिति में होना तो यह चाहिए कि या तो समाजवाद रहे या पूँजीवाद, या तो लोकतंत्र रहे या एकतंत्र। दोनों नहीं रह सकते, क्योंकि दोनों एक-दूसरे के विरोधी हैं। या तुम रहोगे या मैं रहूँगा। दोनों साथ नहीं रह सकते।

यदि इस भाषा में सोचा जाये कि या समाजवाद रहेगा या पूँजीवाद रहेगा, या तो लोकतंत्र रहेगा या एकतंत्र रहेगा, तब युद्ध के सिवाय दुनिया में कोई विकल्प शेष नहीं रहेगा। जब यह अनुभव किया गया कि युद्ध सबसे बड़ा शत्रु है और यह मनुष्य जाति को अपार संकट में डालने वाला है, तब उसको टालने की बात उठी। यदि विरोधी को समाकरने की नीति पर चलें तब युद्ध को टालने की बात आती ही नहीं। तो फिर एक विकल्प निकालना पड़ा। राजनीति के मंच पर यह घोषणा की गयी कि सबका सह-अस्तित्व होना चाहिए। दोनों रह सकते हैं, दोनों जी सकते हैं। दोनों को जीने का अधिकार प्राप्त है। इस सह-अस्तित्व की नीति के आधार पर राष्ट्र-संघ जैसे संगठनों में जहाँ समाजवादी संगठन का प्रतिनिधित्व होता है तो वहाँ पूँजीवादी संगठन का भी प्रतिनिधित्व होता है। जहाँ लोकतंत्र प्रणाली का प्रतिनिधित्व है तो वहाँ एकतंत्र का भी प्रतिनिधित्व है। सह-अस्तित्व की घोषणा राजनीति के क्षेत्र में नयी है, किंतु प्राकृतिक नियमों के आधार पर यह बहुत प्राचीन है। यह कोई नयी बात नहीं है। बनना और बिंगड़ना, बनना और बिंगड़ना - यह पुराना क्रम है।

हमारे शरीर में खरबों कोशिकाएं हैं। प्रति सेकण्ड पाँच करोड़ कोशिकाएं नष्ट होती हैं और पाँच करोड़ कोशिकाएं उत्पन्न होती हैं। यह सह-अस्तित्व बना रहता है। जनमना और मरना। पैदा होना और नष्ट होना। कोशिकाएं नष्ट न हों तो शरीर मुर्दा बन जाता है। कोशिकाएं पैदा न हों तो शरीर टूट जाता है। दोनों चालू रहते हैं

तब शरीर टिकता है। जीना और मरना - ये दोनों विरोधी हैं, किंतु दोनों साथ-साथ रहते हैं, साथ-साथ चलते हैं। जीवन और मरण की ये विरोधी घटनाएं साथ-साथ चलती हैं।

परस्परोपग्रहो जीवनाम्

यदि हम इस सहावस्थान के नियम को समझ लेते हैं तो फिर संघर्ष के लिए कोई अवकाश नहीं रहता। तत्त्वार्थ सूत्र का एक महत्वपूर्ण सूत्र है - 'परस्परोपग्रहो जीवनाम्' - परस्पर में एक-दूसरे का सहारा - यह प्रकृति का नियम है, यह जीव सृष्टि का अटल नियम है। एक-दूसरे का सहारा मिलता है, इसमें कोई विरोध नहीं है। विरोध इसलिए पनपा कि सह-अस्तित्व के नियम को भुला दिया गया। विरोधी युगल साथ रह सकते हैं - यह नियम जब आँखों से ओझल हो जाता है, तब विरोध पनपता है। व्यक्ति एक ही कोण से देख पाता है।

समाजशास्त्रियों ने यह घोषणा की कि जीवन के लिए संघर्ष अनिवार्य है, क्योंकि उन्होंने विरोधी युगलों के सहावस्थान तथा प्रतिपक्ष के सिद्धांत को नहीं समझा। जिन्होंने सह-अस्तित्व और विरोधी युगलों के सिद्धांत को समझा, उन्हें अनेकांत की दृष्टि का हार्द प्राप्त हुआ। उन्होंने शाश्वत घोषणा की कि प्रत्येक प्राणी दूसरे के लिए आलम्बन बनता है, सहारा है। एक पदार्थ दूसरे पदार्थ के लिए आलम्बन बनता है। संघर्ष प्रकृति का नियम नहीं है। वह आरोपण है।

महावीर ने कैवल्य प्राप्त कर जिस धर्म का प्रतिपादन किया, उसकी आत्मा है - समता। उनके धर्म की उत्पत्ति समता से होती है और उसकी निष्पत्ति भी समता से होती है। अहिंसा, अपरिग्रह, सह-अस्तित्व, समन्वय, सापेक्षता और अनेकांत - ये सब उसी समता के अंग हैं। महावीर की अहिंसा में विषमता के लिए कोई स्थान नहीं है। ढाई हजार वर्ष पहले कुछ लोग धन के आधार पर बड़े-छोटे माने जाते थे। कुछ लोग जातीयता के आधार पर बड़े-छोटे माने जाते थे। कुछ लोग शास्त्रीय ज्ञान के आधार पर बड़े-छोटे माने जाते थे। किन्तु महावीर ने इन मान्यताओं को अवास्तविक बतलाया और उन्होंने कहा- "मनुष्य में मौलिक एकता है, समता है। उसे इन काल्पनिक मूल्यों द्वारा विखंडित नहीं करना चाहिए। बड़ा वह नहीं है, जो धनी है। बड़ा वह है जिसमें त्यागने की क्षमता है। बड़ा वह नहीं है, जो तथाकथित उच्च कुल में जन्मा है। बड़ा वह है जो सच्चरित्र है। बड़ा वह नहीं है जो शास्त्रों का पंडित है। बड़ा वह है जो संयमी है। बड़पन और छुटपन, ये सापेक्ष मूल्य हैं। सच्चाई यह है कि सही अर्थ में बड़ा वह है जिसमें त्याग की शक्ति, सच्चरिता और संयम है।"

महावीर के समता के सिद्धांत ने भारतीय मानस को बहुत प्रभावित किया। ढाई हजार वर्ष के बाद वह प्रभाव बढ़ा है, उसमें कोई कमी नहीं आयी है। आज का मनुष्य समता के सिद्धांत को जितना मूल्य देता है, उतना ढाई हजार वर्ष पहले का मनुष्य नहीं देता था। यह सिद्धांत शाश्वत सिद्धांत है। जो शाश्वत होता है, उसमें युगीन होने की क्षमता होती है। महावीर ने ढाई हजार वर्ष पहले जिन सिद्धांतों का प्रतिपादन किया, वे सिद्धांत वर्तमान युग के लिए भी बहुत मौलिक और उपयोगी हैं। ■



पृथ्वी के समान सहिष्णु बनें

हम जीवन में सहिष्णुता का विकास करने का प्रयास करें। जिन्दगी में कभी वीमारियां आ जाती हैं, कभी अपमान हो जाता है। इन बातों को लेकर हमारा मन विचलित नहीं होना चाहिए। हम सहन करना सीखें। सहन करने वाला व्यक्ति बड़ा होता है। जो सहन करना नहीं जानता, वह बड़ा नहीं होता।

आर्हत वाङ्मय में कहा गया- 'पुढ़वीसमो मुणि हवेज्जा' साधु को पृथ्वी के समान होना चाहिए। पृथ्वी के समान होने से तत्पर्य है कि पृथ्वी समतामूर्ति होती है। वह सब कुछ सहने वाली होती है। संस्कृत व्याकरण का एक ग्रन्थ है कालुकामूदी, जो तेरापंथ धर्मसंघ में साधु-साधियों द्वारा याद भी किया जाता है। मैंने भी उसको कंठस्थ किया था। वहां संस्कृत व्याकरण के संदर्भ में उदाहरण दिये गये- 'सर्वंसहो मुनिः; सर्वंसहा पृथ्वी।' साधु सब कुछ सहन करने वाला होता है अथवा होना चाहिए।

पृथ्वी पर कितने बाहन दौड़ते हैं, कोई उसे खोदते हैं, कोई थूकते हैं, कोई कुछ करते हैं, किन्तु पृथ्वी समता रखती है। हालाँकि एक बार मैंने एक टिप्पणी की थी कि यों तो पृथ्वी को सर्वसहा कहा गया है, परन्तु कभी-कभी उसमें कम्पन होता है। जैसे बच्चा गलतियां करता है तो कई बार माँ थप्पड़ भी लगा देती है। पृथ्वी को भी माँ कहा गया है। हम कल्पना करें कि पृथ्वी यह सोचती है कि मेरे पुत्र मानव अपराध करने लग गये हैं, भ्रष्टाचार करने लग गये हैं, इनके चपत लगानी चाहिए। मानो चपत लगाने के प्रतीक के रूप में पृथ्वी में कम्पन होता है, भूकम्प आता है। अथवा यों भी कहा जा सकता है कि धरती पुत्र भ्रष्टाचार आदि करते हैं तो पृथ्वी को भी

कष्ट होता होगा, तब उसमें कम्पन हो जाता होगा। ये सब तो कल्पना की बातें हैं। सारांश इतना-सा है कि जैसे पृथ्वी सहन करने वाली होती है, उसी प्रकार साधु को भी सब कुछ सहन करने वाला होना चाहिए। कोई उसे गाली दे, कोई पीट भी दे, कोई अपमानजनक शब्दों का प्रयोग कर ले, पर साधु को गुस्से में नहीं आना चाहिए। उत्तराध्ययन सूत्र के बारहवें अध्ययन में कहा गया है- 'महप्सासाया इसिणो हवन्ति न हु मुणि कोवपरा हवंति।' ऋषि महान प्रसाद बाले होते हैं। वे गुस्से में तत्पर नहीं बनते हैं। बौद्ध साहित्य के महान ग्रंथ धम्मपद में कहा गया है-

"पढ़वीसमो नो विरुज्जाति इन्दखीलूपमो तादि सुब्बतो।
रहदो'व अपेतकद्मो संसारा न भवन्ति तादिनो॥"

सुन्दर ब्रतधारी अर्हत पृथ्वी के समान क्षुब्ध नहीं होने वाला और इन्द्रकील के समान अकम्प्य होता है।

पृथ्वी के समान जो संत पुरुष होता है, वह कभी क्षुब्ध नहीं होता। कभी आकृष्ट नहीं होता। जो सुव्रत है, अच्छे व्रतों को धारण करने वाला मुनि है, वह मन्दर पर्वत के समान अकम्प्य होता है। उसे कोई विचलित नहीं कर सकता। कितना ही सुन्दर रूप सामने आ जाये, सुव्रत मुनि विकार भावना से कम्पित नहीं होता।





हम जीवन में सहिष्णुता का विकास करने का प्रयास करें। हर स्थिति को झेलें। जिन्दगी में कभी बीमारियां आ जाती हैं, कभी अपमान हो जाता है। इन बातों को लेकर हमारा मन विचलित नहीं होना चाहिए। हम सहन करना सीखें। सहन करने वाला व्यक्ति बड़ा होता है। जो सहन करना नहीं जानता, वह बड़ा नहीं होता।

संस्कृत साहित्य में कहा गया - विकारहेतौ सति विक्रियन्ते यानि विकार का हेतु उत्पन्न होने पर भी जिनका चित्त विकृत नहीं होता है, वे पुरुष धीर कहलाते हैं। साधु के लिए वांछनीय है कि वह धीरता सम्पन्न हो। अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति में शान्त रहने वाला हो। आदमी के जीवन में अनुकूलता-प्रतिकूलता कभी भी आ सकती है। अनुकूलता आ गयी तो आदमी खुब हर्ष में चला गया और प्रतिकूलता आ गयी तो उद्घिन हो गया - ये स्थितियां धीरता में बाधक हैं।

श्रीमद्भगवद्गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि प्रियता की स्थिति आ जाये तो प्रहर्ष में मत जाओ और अप्रिय स्थिति आ जाये तो उद्घिन मत बनो अर्थात् स्थितप्रज्ञ बने रहो। यह साधना की उच्च भूमिका है। स्थितप्रज्ञ या वीतराग बनने के लिए कामनाओं का परित्याग करना होता है, लालसा छोड़नी होती है और भौतिक चीजों के आकर्षण से दूर रहना होता है।

एक युवक धूमते-धूमते किसी संन्यासी के पास चला गया। संन्यासी ने कहा - "मेरे से गुरुमंत्र लेलो।"

युवक - "आपकी इच्छा है तो दें दो।" गुरु ने कान में कोई मंत्र बता दिया।

युवक - "इससे क्या होगा?"

संन्यासी - "तुम इसका जप करो, मैं तुमको स्वर्ग का राज्य देंगा।"

युवक - "ठीक है।"

संन्यासी - "मैंने मंत्र दिया है, अब तुम मुझे कुछ गुरु दक्षिणादो।"

युवक - "मैं आपको दिल्ली का राज्य देंगा, महाराष्ट्र का राज्य देंगा, गुजरात का राज्य देंगा। सारे राज्य आपको दे दूँगा।"

संन्यासी - "क्या ये सारे राज्य तुम्हारे बाप के हैं जो तुम मुझे दे दोगे।"

युवक ने कहा - "क्या स्वर्ग का राज्य आपके बाप का है जो मुझे दे दोगे। बाबाजी! हम तो गृहस्थ हैं। हमारे में लालसा हो सकती है, परन्तु साधु में कोई लालसा नहीं होनी चाहिए। साधु को तो कांता और कांचन यानी औरत और पैसे का त्यागी होना चाहिए। उसे आत्मकल्याण और परकल्याण का प्रयास करना चाहिए। साधु का काम है कि वह जनता को अहिंसा की, अनुकूल्या की बात सिखाये।"

धर्मपद में कहा गया कि आदमी पृथ्वी के समान बन जाये। खैर, उतना विकास न भी हो सके, पर हम जीवन में सहिष्णुता का विकास करने का प्रयास करें। हर स्थिति को झेलें। जिन्दगी में कभी बीमारियां आ जाती हैं, कभी अपमान हो जाता है। इन बातों को लेकर हमारा मन विचलित नहीं होना चाहिए। हम सहन करना सीखें। सहन करने वाला व्यक्ति बड़ा होता है। जो सहन करना नहीं जानता, वह बड़ा नहीं होता। हमारी बहनें बड़े बनाती होंगी। बड़ा भी आसानी से नहीं बनता। वह भी कितना सहन करता है। किस प्रकार दाल को साफ किया जाता है। फिर उसे पीसा जाता है। फिर तेल में तला जाता है। कितनी प्रक्रिया से गुजरता है, तब वह बड़ा बनता है। आदमी को भी बड़ा बनना है तो बहुत सहना होगा, कठिनाइयों को भी झेलना होगा। अनुकूलता और प्रतिकूलता दोनों को झेलने से आदमी बड़ा बन जाता है, महापुरुष बन जाता है।

जैनविद्या के अनुसार चौदह गुणस्थानों में अंतिम गुणस्थान है - अयोगी केवली गुणस्थान। अयोगी अर्थात् जिसने मेरा पर्वत के राज्य को प्राप्त किया, जो मेरा की तरह अकम्प हो गया। जहाँ न शरीर हिलता-डुलता है, न वाणी का प्रकम्पन है, न मन का प्रकम्पन है। चौदहवें गुणस्थान की सर्वथा अप्रकम्प अवस्था होती है। चौदहवां गुणस्थान आने के बाद तो अ ई ऊ ऋ लृ - इन पाँच हस्ताक्षरों का उच्चारण हो, इतने से कालमान के बाद वह आत्मा सिद्धत्व को प्राप्त हो जाती है। धर्मपद के अनुसार मन्दर पर्वत की तरह अकम्प हो जाना और जैन वाङ्मय के अनुसार शैलेशी अवस्था को प्राप्त हो जाना एक प्रकार की साधना की अन्तिम भूमिका होती है। उसके बाद मोक्ष का धाम प्राप्त हो जाता है। ■



■ शिवाजी भावे ■

समाज सुधार के लिए शुरू किये गये किसी भी आंदोलन की सफलता का सूत्र है उसकी उपादेयता, प्रासादिकता और स्वीकार्यता। समाज के सर्वमान्य व्यक्ति यदि उस सुधारवाली आंदोलन की उपादेयता और प्रासादिकता को मुक्त कर लेते हैं तो आमजन भी उस आंदोलन के दर्शन का अनुसरण करने की दिशा में अग्रसर होते हैं। अणुव्रत आंदोलन के प्रारम्भिक काल से ही तात्कालिक समाज के गणमान्य महानुभावों ने इसकी महत्वा को स्वीकार किया तथा इसे अभिव्यक्ति भी दी। इस माह प्रस्तुत है महान चिंतक और समाजसेवी शिवाजी भावे के अणुव्रत आंदोलन के संदर्भ में अभिव्यक्त विचार। आचार्य विनोबा भावे और आचार्य तुलसी वैचारिक दृष्टि से बहुत नज़रीक थे। अणुव्रत और सर्वोदय का आपसी तालमेल अनेक अवसरों पर देखने को मिलता रहा। इस समवैचारिक सहयोग को आगे बढ़ाने में शिवाजी भावे की बड़ी भूमिका रही। उनका स्वयं का जीवन अणुव्रत का आदर्श उदाहरण था। शिवाजी भावे को 1984 के 'अणुव्रत पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

अणुव्रत आन्दोलन के श्रेष्ठ पहलू

सद्विचारों को जीवन में उतारने और भावना-प्रसार में हृदय-परिवर्तन का सिद्धान्त अपनाया जाता है, इससे उसमें आचार-अभाव और आक्रमणशीलता का भाव पनप नहीं पाता। ये दोनों अणुव्रत आन्दोलन के सर्वोपरि श्रेष्ठ पहलू हैं, जो इसके विकास का मंगल संकेत करते हैं।

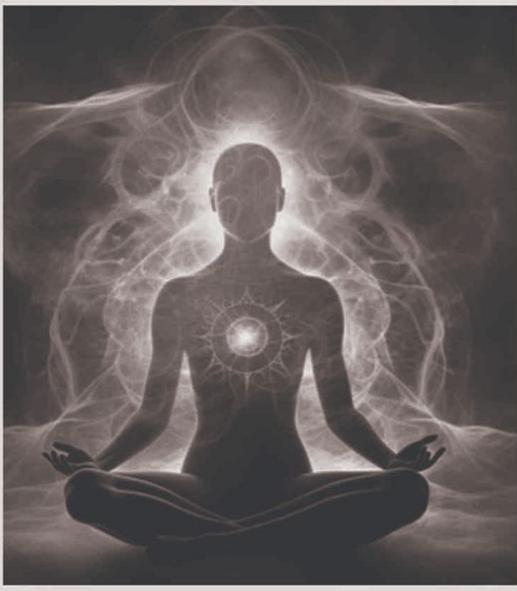
परमार्थ-सत्ता के अस्तित्व में जो संगठन या समुदाय बनता है, वह बड़ा मंगलकारी होता है। परमार्थ स्वयं मंगल होता है, वहाँ स्वार्थ की बात तो नहीं होती। अहिंसा और संयम की गंगा में गोता लगाने के लिए इतना विशाल जन-समुदाय यहाँ इकट्ठा हुआ है, इसलिए मुझे कहना चाहिए कि यह समुदाय मंगल की ओर एक-एक चरण बढ़ा रहा है।

अहिंसा और संयम के आचरण से अधिक मांगलिक कार्य और क्या हो सकता है? अतः मंगल या परमार्थ का जो पक्ष बलवान बन रहा है, वह शुभ का संकेत है और हमें इसके प्रसार के लिए प्रयास करना चाहिए। आचार्य श्री तुलसीजी इसके लिए प्रयत्नशील हैं। उनमें मैंने सामर्थ्य का अनुभव किया है। विद्या, त्याग और दाशनिकता से अधिक उनमें एक और श्रेष्ठता है - वे अकारण स्नेह के स्रोत हैं। यह हमारे लिए गौरव का विषय है। मानव-जीवन का सर्वोच्च ध्येय जीवन-शुद्धि है। मैं इसी ध्येय की

पूर्ति के लिए अणुव्रत आन्दोलन को एक आवश्यक और उपयोगी कार्य मानता हूँ। कई भाइयों ने मुझे बताया कि अणुव्रत के मूल में सम्प्रदाय सिद्धि के तत्त्व हैं। जहाँ तक मैं जान पाया हूँ, इसके पीछे यह भावना नहीं है। अगर सम्प्रदाय-सिद्धि के लिए भी अणुव्रत आन्दोलन जैसे लोकोपयोगी कार्यक्रम को चलाया जाये तो कोई खतरा आने वाला नहीं है। उस प्रयास से मानव-जीवन की शुद्धि ही होगी।

जीवन-शुद्धि के कार्य में मुख्यतः दो बाधाएँ हमारे सामने आती हैं - विचारों की अनुदारता, संकोचशीलता और प्रचार की प्रबलता या आक्रमणशीलता। ये दोनों परम्पराएँ सदा से चली आ रही हैं, जो जीवन पथ को प्रशस्त नहीं बनने देतीं।

हमारे प्राचीन ऋषियों ने एक ऐसा विचार रखा कि जो सद्विचार हमारे हृदय में अंकुरित हुए हैं, वे हमारे आचरण में आएं, किन्तु हमने उसका विपरीत अर्थ यह लगाया कि जो सद्विचार हमें



मन, शरीर और आत्मा के संयोग से व्यक्ति का निर्माण होता है। मन का स्वभाव रजोगुण, शरीर का स्वभाव तमोगुण और आत्मा का स्वभाव मुक्ति है। रजोगुण और तमोगुण का अन्त हुए बिना जीवन-मुक्ति नहीं होती, अतः इन दोनों बाधाओं को मिटाने की आवश्यकता होती है।

मिले हैं, वे दूसरे को नहीं देने चाहिए। व्यायाम विद्या में पारंगत एक व्यक्ति अपनी विद्या दूसरे को नहीं बतलाएगा, चाहे उसके अवसान के साथ उसकी विद्या भी कर्यों न समाप्त हो जाये। इस तरह हमारे समाज में ज्ञान और विद्या का संकोच होता गया। इसी तरह जाति आश्रित ऊँच-नीच की भेद-भावना भी विचार-अनुदारता को बल पहुँचाती रही। अस्पृश्यता का भाव भी कम घातक नहीं रहा। इस तरह विचारों की संकोचशीलता के कारण जीवन-शुद्धि का मार्ग अवरुद्ध होता गया।

दूसरा विचार पाश्चात्य दार्शनिकोंने हमारे सामने यह खाकि हमने जो सद्विचार ग्रहण किये हैं, उनका अधिकाधिक विस्तार करना चाहिए। किन्तु जीवन में उन्हें आचरित करके ही प्रसारित करना चाहिए, यह आग्रह उन्होंने नहीं खाका। भारतीय दर्शन का जीवन-सूत्र जहाँ 'आचारः प्रथमो धर्मः' रहा, वहाँ पाश्चात्य दार्शनिक इस जीवन-सूत्र को सामने रखकर न चले। इससे हुआ यह कि विचार-प्रसार को बल मिला, किन्तु आचार-पक्ष कमजोर और गौण बनता गया। इसी तरह वहाँ सिद्धान्तों के प्रसार की जबरदस्ती भी रही। एक हाथ में शास्त्र और दूसरे हाथ में शास्त्र की जहाँ स्थिति बनी, वहाँ विचार-प्रसार का आग्रह ही प्रमुख था। अणुव्रत आन्दोलन के बारे में जब मैं सोचता हूँ, तो ये दोनों बाधाएं

भारत का लोक-जीवन एक योगी की तरह था और यहाँ की संस्कृति योगी-संस्कृति थी। पश्चिम की संस्कृति उद्योग की संस्कृति है। वहाँ की जनता में जीवन-सन्तुलन नहीं है। अतः वहाँ अधिक साधनों और सुख-सुविधाओं की अपेक्षा रहती है और उस अपेक्षा-पूर्ति के लिए वहाँ नाना प्रयोग चलते हैं।

वहाँ नजर नहीं आती है। साम्प्रदायिक आग्रह वहाँ नहीं है, इसलिए विचार-अनुदारता को स्थान नहीं मिलता। सद्विचारों को जीवन में उतारने और भावना-प्रसार में हृदय-परिवर्तन का सिद्धान्त अपनाया जाता है, इससे उसमें आचार-अभाव और आक्रमणशीलता का भाव पनप नहीं पाता। ये दोनों अणुव्रत आन्दोलन के सर्वोपरि श्रेष्ठ पहलू हैं, जो इसके विकास का मंगल संकेत करते हैं।

इन बाधाओं की तरह कुछ सुविधाएं भी हमारे सामने हैं और उनकी भी एक परम्परा है। भारत का प्राचीन लोक-जीवन सुखी था। लोक-संख्या कम थी, इसलिए जीवन-कलह भी कम था। जीवन-कलह की कमी के कारण जीवन-सन्तुलन बना रहता था। इस स्थिति से व्यक्ति को सोचने, समझने और चिन्तन करने का अवसर मिलता था। इस तरह यहाँ का लोक-जीवन एक योगी की तरह था और यहाँ की संस्कृति योगी-संस्कृति थी। पश्चिम की संस्कृति उद्योग की संस्कृति है। वहाँ की जनता में जीवन-सन्तुलन नहीं है। अतः वहाँ अधिक साधनों और सुख-सुविधाओं की अपेक्षा रहती है और उस अपेक्षा-पूर्ति के लिए वहाँ नाना प्रयोग चलते हैं। वह प्रायोगिक संस्कृति है। मध्य-पूर्व के रेगिस्तानों में प्रवासी संस्कृति है और एक बाल-संस्कृति है, जिसे हम जंगली जातियों की संस्कृति कह सकते हैं। इस तरह पाँच संस्कृतियां हमारे सामने आती हैं। पाँचों संस्कृतियों में ही जीवन-शुद्धि के कुछ न कुछ अनुकूल तत्त्व मिल सकते हैं। हमें उन अनुकूलताओं को ग्रहण कर जीवन-शुद्धि के पथ में आगे बढ़ना चाहिए।

इसी तरह मनुष्य के व्यक्तिशः जीवन में भी दो बाधाएं और पाँच सुविधाएं हैं। मन, शरीर और आत्मा के संयोग से व्यक्ति का निर्माण होता है। मन का स्वभाव रजोगुण, शरीर का स्वभाव तमोगुण और आत्मा का स्वभाव मुक्ति है। रजोगुण और तमोगुण का अन्त हुए बिना जीवन-मुक्ति नहीं होती, अतः इन दोनों बाधाओं को मिटाने की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार पाँच सुविधाएं - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह हैं, जो जीवन-शुद्धि के मूल तत्त्व हैं। इस तरह मैंने अनुभव किया है कि अणुव्रत आन्दोलन विचार-अनुदारता और आक्रमणशीलता से परे व्रतात्मक आन्दोलन है, जिसकी जीवन-शुद्धि के लिए महती आवश्यकता है।

मैं आशा करता हूँ कि यह आन्दोलन अधिकाधिक प्रसारित होगा और आचार्य श्री तुलसी का विराट व्यक्तित्व इस पुनीत कार्य में सफलता प्रदान करेगा। ■



हेल्थ इंश्योरेंस - मेडिक्लॉम केशलेस

10 लाख
का मेडीक्लॉम
@ 39 प्रतिदिन में
'पोलिसी 3 वर्षों में
20 लाख हो जायेगी'

20 लाख
का मेडीक्लॉम
@ 49 प्रतिदिन में
'पोलिसी 3 वर्षों में
40 लाख हो जायेगी'

50 लाख
का मेडीक्लॉम
@ 55 प्रतिदिन में
'पोलिसी 3 वर्षों में
1 करोड़ हो जायेगी'

प्रेगनेंसी कवर 2 लाख
का सिर्फ 1 साल वेटिंग में
@199 प्रतिदिन में.

65 की उम्र तक हेल्थ इंश्योरेंस
बगैर मेडिकल चेकअप
लिमिटेड समय ऑफर !!!

सुपर टॉप अप
20 लाख का @ ₹ 7 प्रतिदिन में
'आपकी पुरानी पॉलिसी को
छोटी सी प्रीमियम देके बढ़ाए '

प्रिमीयम डिस्काउंट
2 वार्षिक 7.50% | 3 वार्षिक 10%

EMI हेल्थ इंश्योरेंस में
EMI फैसिलिटी ?
सिर्फ 30% प्रीमियम का डाउन पेमेंट करना
होगा. और बाकी अमाउंट EMI में लेंगे,
जिसमें 2 EMI से लेकर 30 EMI तक का
ऑप्शन सिलेक्ट कर सकते हो।

10 लाख की
एक्सीडेंटल पॉलिसी
₹. 7 प्रतिदिन में !
'एक्सीडेंट के बेड-रेस्ट से मिलेगा
हर हफ्ते ₹. 5000 सैलरी का
मुआफ़ज़ा, अगले 100 हफ्तों तक ! '

हमारे द्वारा मेडिक्लॉम में
बेस्ट फैसिलिटी

- हॉस्पिटल कमरे की कोई सीमा नहीं
- इलाज राशि की कोई सीमा नहीं
- ऑल इंडिया कैशलेस हॉस्पिटल की सुविधा
- कंस्यूमरेबल आइटम्स को कवर किया जाएगा
- क्लेम में कोई पैसा नहीं करेगा
- फास्ट वलेम सेटलमेंट की गारंटी
- 3 वर्षीय प्रीमियम पे 3 वर्ष का टैक्स बेनिफिट
- हर्ष वर्ष बढ़ता हुआ कवर

पोर्टेबिलिटी सुविधा क्या है ?

पोर्टेबिलिटी सुविधा से आप आपकी पुरानी पॉलिसी को पुराने बेनिफिट, पॉलिसी की प्रारंभ तारीख एवं
बोनस के साथ, दूसरी कंपनी में ट्रांसफर कर सकते हैं। अगर आपकी पॉलिसी 2 साल से पुरानी है, तो आपकी
पॉलिसी में वेटिंग पीरियड नहीं आएगा और आप अगले दिन से क्लेम कर सकते हैं।

हमारे हजारों क्लेम सेटलमेंट में से कुछ ग्राहकों के क्लेम राशि की झलक



संजय-नितेश धाकड़	मुलेश्वर	₹. 28,22,147/-	अर्जुन सांखला	गोरेगांव	₹. 26,95,047/-
प्रकाश सिसोदिया	मुलेश्वर	₹. 25,15,000/-	ख्यालीलाल कोठरी	मिवंडी	₹. 20,00,200/-
महेंद्र कोठरी	चेंबूर	₹. 17,11,000/-	मनोज शर्मा	चर्नी रोड	₹. 15,18,450/-
प्रवीण बघावत	वरली	₹. 14,38,372/-	दिनेश कच्छारा	मुलेश्वर	₹. 14,12,947/-
तेजराज गत्ता	सांताकूड़ा	₹. 13,42,177/-	रोशनलाल मेहता	उरण	₹. 12,11,145/-
रमेश पामेचा	नाना चौक	₹. 11,35,902/-	हस्तीमल परमार	मालाड	₹. 8,25,516/-



Ganpat Dagliya
Gold Medalist
T.O.T - U.S.A



One Stop Insurance Solution in India !

Since 40 Years | 30000+ Happy Clients | 11000+ Claims Solved | 300 Awards Won
Policies : Health | Jewellers | Factory | Building | Travel | Mutual Funds

हमारी सेवाएँ पूरे भारत में ऑनलाईन द्वारा ले सकते हैं।



Chirag Dagliya
M.B.A & Harvard Cert.
T.O.T - U.S.A

A 801/802/803, Shreepati Aradhana, 8th floor, Dr. A. M. Road, Kabutar Khana, Nr. Kalbadevi, Marine Lines (E), Mumbai - 400 002.
Email : info@niceinsure.com | www.niceinsure.com | 022 - 46090022/23/24 | Intercom: 5050

+91 98692 30444 | 98690 50031



आचार्य तुलसी का शिक्षा दर्शन

आचार्य तुलसी के शिक्षा-दर्शन में जड़ता का कोई स्थान नहीं। वहाँ सतत चैतन्य है। वे युग-परिवर्तन की पदचारों से वेरवर नहीं हैं। उनकी जीवन दृष्टि में शिक्षा में अध्यात्म और विज्ञान का मणिकांचन योग होना चाहिए। वे खीन्द्रनाथ ठाकुर के पक्षधर हैं। उनका मानना था कि विज्ञान और अध्यात्म के बिना शिक्षा पूर्ण नहीं हो सकती।

अणुव्रत आन्दोलन के प्रणेता, तपोपूत संत, विचक्षण दार्शनिक, महामाना शिक्षाविद्, महामानव आचार्य तुलसी तस्वर्ण व्यक्तित्व के धनी थे। उनकी तत्त्वाभिनवेशी जीवनदृष्टि, वचन-कर्म में उनका अपार्थक्य, मानवता के जीवन मूल्यों के प्रति उनका मनसा-वाचा-कर्मणा समर्पण, प्रभृति उनके चारित्रिक गुण उन्हें 'महाप्राण' की श्रेणी में प्रसिद्ध करते हैं। वह चरित्र निर्मात्री, संस्कार जनयित्री, व्यक्तित्व-निर्माणकर्ती शिक्षा के न केवल प्रभविष्णु प्रस्तोता थे, अपितु वे स्वयं उसके पुष्कल प्रयोक्ता भी थे।

कहना न होगा कि उनका शिक्षा-दर्शन उनके जीवन-दर्शन का ही पर्याय था। उनकी दृष्टि में शिक्षा, जीवन-निर्माण की एक महत्वपूर्ण सीढ़ी है। उनके शिक्षा-दर्शन में 'मानव कल्याण' प्रमुख घटक के रूप में विद्यमान है। व्यक्ति के सर्वांगीण परिष्कार से समाज, राष्ट्र और विश्व का परिष्कार, मानव-कल्याण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। सम्यक् शिक्षा ही हमें मानव-कल्याण के पथ पर प्रशस्त कर सकती है। उनका सम्पूर्ण जीवन मानव-कल्याण के लिए समर्पित था।

आचार्य तुलसी का शिक्षा-दर्शन उनके द्वारा अभ्यस्त और प्रयुक्त उदात्त जीवन मूल्यों का ही रूपान्तरण था। वे जन्मना

शिक्षक थे, प्रकृत्या गुरुत्व के धनी थे और कर्मणा सतत ज्ञानान्वेषी थे। वे एक आकाशधर्मी शिक्षक थे, शिक्षाधर्मी शिक्षक नहीं। उनके सञ्चित्य में रहने वाला शिष्य या शिक्षार्थी सतत विकासोन्मुख रहे, यही उनके शिक्षा-दर्शन का मूल मंत्र था। जहाँ एक ओर शिक्षाधर्मी गुरु उस पथर की शिला के समान होते हैं, जिसके नीचे दबी धास कुछ दिनों में पीली एवं निस्तेज हो जाती है। शिक्षाधर्मी गुरु विद्यार्थी पर दबाव डालता है कि मैं जो कुछ कहता हूँ, वही तुमको मानना पड़ेगा। इसके कारण वह विद्यार्थियों का स्वतंत्र विकास नहीं कर पाता। वहीं दूसरी ओर, आकाशधर्मी अध्यापक विशाल हृदय और धैर्य-सम्पन्न होता है। वह चाहता है कि उसके नीचे जो वनस्पतियाँ हैं, वे विकसित हों। वह सबके लिए प्रकाश और वायु का अवकाश रखता है तथा शिष्य की योग्यता को समझ कर उसे विकसित करने का प्रयत्न करता है। आचार्य तुलसी, जो कि एक आकाशधर्मी गुरु थे, की छत्रछाया में सैकड़ों विद्यार्थी, साधु-साधिवियों एवं समण-समणियों ने अपनी प्रतिभा का उन्मुक्त विकास किया।

आचार्य तुलसी के शिक्षा-दर्शन में 'जीवन' हेतु शिक्षा एक महत्वपूर्ण घटक है। मात्र जीविका के लिए शिक्षा, अधूरी शिक्षा है। वह शिक्षा का विखण्डित स्वरूप है। यह सही है कि





जिस शिक्षा में अनुशासन, धैर्य, सहअस्तित्व, जागरूकता आदि जीवन मूल्यों का विकास नहीं होता, उस शिक्षा की जीवनत दृष्टि के आगे एक प्रश्न चिह्न उभर आता है। वही शिक्षा अपनी प्रासंगिकता को बनाये रख सकती है जो व्यक्ति निर्माण और सहजीवन की जरूरतों के अनुसार जीवन शैली का विकास कर पाये।

'जीविका' के लिए शिक्षा जरूरी है, पर जीवन के मूल्य पर जीविका हेतु पढ़ना अहितकर है। उनका कहना है कि "पढ़ा-लिखा युक्त उस समय सघन कुंठा का शिकार हो जाता है जब वह जीविकोपार्जन में असफल हो जाता है?" जीविका के पीछे वह जीवन को भूल जाता है। जीवन के लिए जीविका की बात समझ में आती है। पर जीवन, जीविका के लिए हो जाये तो जीने की बात गौण हो जाती है। गौण को मुख्य और मुख्य को गौण करने से जो हादसे हो रहे हैं, वे तब तक होते रहेंगे जब तक मनुष्य सार्थक जीवन की तलाश में शिक्षा के साथ जीवन-मूल्यों का अभ्यास नहीं करेगा।"

'जीविका' की तलाश में प्रायः मूल्यहीनता के साथ समझौता करना पड़ता है। वहाँ जीवन मूल्य (मानवीयता, करुणा, मैत्री, मुदिता, सहअस्तित्व आदि) पिछड़ जाते हैं। शिक्षा का मंत्र 'सा विद्या या विमुक्तये' तिरोहित हो जाता है। मूल्यहीनता की हवा जिन लोगों को लग जाती है, वे भौतिक समृद्धि के शिखर पर पहुँचने के लिए संकलिप्त हो जाते हैं। किन्तु वहाँ पहुँचने के बाद उन्हें एक बार फिर से लौटना होगा, अवरोहण करना होगा। आरोहण और अवरोहण के इस निरर्थक श्रम से बचा जा सकता है। काश! मानवीय मूल्यों के अवबोध और आचरण में उनकी आस्था

हो। शिक्षा (मूल्योन्मुखी) के माध्यम से ही इस निरन्तर श्रम से बचा जा सकता है?

आचार्य तुलसी एक स्वतंत्रचेता, क्रान्तिधर्मा, प्रतिस्रोतगामी शिक्षा-दार्शनिक थे। वे वाक्षार नहीं थे, वे कर्मशूर थे। यही कारण था कि उनका शिक्षा-दर्शन ज्ञान और कर्म की एक सुन्दर युति के रूप में हमारे सामने आया। उनका मानना था कि शिक्षा की सार्थकता, आस्था, संकल्प और आचरण की युति में है। जिस शिक्षा में अनुशासन, धैर्य, सहअस्तित्व, जागरूकता आदि जीवन मूल्यों का विकास नहीं होता, उस शिक्षा की जीवनत दृष्टि के आगे एक प्रश्न चिह्न उभर आता है। वही शिक्षा अपनी प्रासंगिकता को बनाये रख सकती है जो व्यक्ति निर्माण और सहजीवन की जरूरतों के अनुसार जीवन शैली का विकास कर पाये।

हम सभी जानते हैं कि जीवन, मात्र 'श्वसन-प्रश्वसन' नहीं है। वह उससे कुछ और अर्थवान् है। नीति कहती है :

यस्य धर्मविहीनानिदिनान्यायान्ति यान्ति च।
सलोहकार भस्त्रेव श्वसत्रपि न जीवति॥

जिस व्यक्ति के जीवन में धर्म का प्रभाव नहीं है वह केवल श्वासोच्छ्वास लेता है, पर जीता नहीं है। ऐसे व्यक्ति की तुलना लुहार की धौंकनी से की जा सकती है। धौंकनी वायु खींचती है और छोड़ती है, उसमें प्राणधारा नहीं होती। इस प्रकार धर्मशून्य व्यक्ति प्राणशक्तिशून्य होता है।

स्पष्ट है कि जो बात 'धर्म' के बारे में कही गयी है, वह शिक्षा-दर्शन पर भी सटीक बैठती है। जीवनोन्मुखी शिक्षा ही वास्तविक शिक्षा कही जा सकती है।

आचार्य तुलसी के अनुसार, "शिक्षा के बिना जीवन-निर्माण की कल्पना आकाश कुसुम जैसी है।" आचार्यश्री का जीवन शिक्षा से आजीवन जुड़ा रहा। उन्होंने साधु-साध्वियों, समण-समणियों की शिक्षा के लिए शिक्षण संस्थाओं के निर्माण से ऐतिहासिक पहल की। शिक्षा में उनका एक क्रान्तिकारी कदम यह रहा कि उन्होंने शिक्षा की प्रक्रिया में 'भावात्मक विकास' को विशेष महत्व दिया। सामान्यतः शिक्षा में शारीरिक, बौद्धिक और मानसिक विकास को ही सर्वांगीण शिक्षा के तहत माना जाता है। आचार्यश्री ने भावात्मक-विकास शिक्षा का मूल्यवान प्रयोग करके व्यक्ति के आन्तरिक सकारात्मक बदलाव की भूमिका तैयार की। उसके लिए जीवन विज्ञान और प्रेक्षाध्यान की प्रविधि तैयार की गयी। उनका विश्वास था, "शिक्षा के साथ निर्माण का निश्चित अनुबंध है। जहाँ यह अनुबंध पूरा नहीं होता, वहाँ कुछ किन्तु खटकने लगता है। व्यक्ति भोजन करे और भूख न मिटे, यह उसी स्थिति में संभव है जब भोजन करने वाला भस्मक व्याधि से पीड़ित हो, अन्यथा मात्रा-भेद हो सकता है, पर भोजन के साथ भूख मिटने की अनिवार्यता है। उसी प्रकार शिक्षा मिले और जीवन का निर्माण न हो, इसमें शिक्षा-पद्धति, शिक्षक या विद्यार्थी की कोई न कोई कमी अवश्य कारण बनती है। शिक्षा पद्धति त्रुटिपूर्ण या अपूर्ण हो, शिक्षक का चरित्र, निष्ठा और पुरुषार्थ सही न हो अथवा

विद्यार्थी में शिक्षा प्राप्त करने की अर्हता न हो, उसी स्थिति में शिक्षा का उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता।"

उनके अनुसार शिक्षा की परिधि में निम्नांकित उद्देश्य शामिल हैं :

- जीवन मूल्यों की शिक्षा
- मानवीय मूल्यों की शिक्षा
- भावात्मक विकास की शिक्षा
- सिद्धान्त और प्रयोग के समन्वय की शिक्षा

आचार्य तुलसी शिक्षा प्रणाली में शिक्षार्थी, शिक्षक, अभिभावक और समाज के चारों घटकों को महत्वपूर्ण मानते हैं। वे कहते हैं, "कुएं से पानी निकालते समय केवल दो अँगुल रस्सी हाथ में रहती है तो भी पूरी रस्सी एवं पानी का डोल बाहर निकाला जा सकता है। पतंग आकाश में उड़ती है, उस समय हाथ में डोर का थोड़ा-सा हिस्सा रहता है। उसी के बल पर वह नभ की ऊँचाइयों को छूती है। उसी प्रकार जितना समय अभिभावकों एवं अध्यापकों की सत्रिधि में व्यतीत होता है, उसका समुचित उपयोग किया जाये और अपने आचरणों-व्यवहारों को उदात्त रखा जाये तो बच्चों को सही ढंग से प्रशिक्षित किया जा सकता है। निष्कर्ष के रूप में इतना ही समझा जाये कि केवल किताबी शिक्षा पर्याप्त नहीं है। वास्तविक शिक्षा जीवन से मिलती है।"

शिक्षा का व्यवहारपरक स्वरूप, निम्नांकित 'कौशलों' को अर्जित करके प्राप्त किया जा सकता है –

- शिक्षा के द्वारा कार्य कौशल
- परिवार के द्वारा व्यवहार कौशल
- आनंदमय जीवन के लिए आचार कौशल

जो शिक्षा या विद्या, शांति, तुष्टि, पवित्रता एवं आनंद - चारों तत्त्वों का जीवन में संचार नहीं करती, वह वास्तव में शिक्षा नहीं, अशिक्षा है, विद्या नहीं, अविद्या है। आचार्यश्री के अभिमत में, अच्छे संस्कारों के अभाव में शिक्षा बहुआयामी लाभ नहीं दे सकती। संस्कारविहीन शिक्षा बिना नमक की रोटी के समान है।

आचार्य तुलसी के शिक्षा-दर्शन में जड़ता का कोई स्थान नहीं। वहाँ सतत चैतन्य है। वे युग-परिवर्तन की पदचारों से बेखबर नहीं हैं। उनकी जीवन दृष्टि में शिक्षा में अध्यात्म और विज्ञान का मणिकांचन योग होना चाहिए। वे रवीन्द्रनाथ ठाकुर के 'Spiritual Orientation of Education' के पक्षधर हैं। उनका मानना था कि विज्ञान और अध्यात्म के बिना शिक्षा पूर्ण नहीं हो सकती। वैज्ञानिक दृष्टि से वे अचेषक दृष्टि तथा आध्यात्मिक दृष्टि से आत्मशक्ति, सत्यनिष्ठा, नैतिकता आदि मानवीय मूल्यों की संकांति का योग करना चाहते थे।

शिक्षा-पद्धति में वे शिक्षक की भूमिका को सबसे अधिक महत्व देते हैं। शिक्षा या विद्या का विपणन करने वाला, या मात्र वेतनभोगी शिक्षक उन्हें स्वीकार नहीं। शिक्षक का स्वयं का व्यक्तित्व मन-वचन-कर्म से अनुकरणीय होना चाहिए। वह

विद्यार्थियों के लिए एक 'रोल मॉडल' होना चाहिए। आचार्य तुलसी अपनी कविता में एक आदर्श शिक्षक के बारे में कहते हैं -

"वाणी से पहले जिसका व्यवहार, स्वयं जो बोल उठे
पुस्तक से पहले जिसका आचार, स्वयं जो बोल उठे
कार्यों से पहले जिसका संस्कार, स्वयं जो बोल उठे
जिसके संक्षेपी शब्दों में, विस्तार स्वयं जो बोल उठे
उससे बढ़कर फिर कौन कहो, बच्चों का भाग्य विधाता है
अध्यापक स्वयं पढ़ाता है।"

क्योंकि आचार्यश्री स्वयं ऐसे ही आदर्श गुरु थे, इसलिए ये भाव उनके हृदय की भावनाओं को सशक्त ढंग से अभिव्यक्त करने में समर्थ हैं।

वे बार-बार यही दोहराते हैं कि शिक्षा के द्वारा चित्त की निर्मलता, बौद्धिक और मानसिक विकास, संस्कारों का परिष्कार होना चाहिए। उनके ये शब्द वर्तमान शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में अत्यन्त प्रासंगिक हैं - "चाहे पाठ्यक्रम बदल दिये जाएँ, भले विविध शिक्षा आयोग बैठा दिये जाएँ, यदि शिक्षा आत्मा और मस्तिष्कीय शक्ति का जागरण नहीं करती, भीतर के रसायन नहीं बदलती, तो वह विकलांग कही जाएगी।"

संक्षेप में आचार्य तुलसी के शिक्षा-दर्शन के मुख्य बिन्दु हैं :

1. मानवी वृत्तियों को शक्ति-संपत्र बनाना।
2. चारित्रिक मूल्यों के प्रति अनास्था के दौर में आस्था का संचार।
3. शिक्षा के द्वारा शिक्षार्थी में जिज्ञासा, बुभूषा, चिकीर्षा जैसी प्रवृत्तियों का विकास।
4. शिक्षा के द्वारा संस्कृति का प्रोत्तयन।
5. कंठस्थ विद्या की उपयोगिता।
6. मातृभाषा में संप्रेषण प्रभावी।
7. प्रश्नोत्तर विधि की महत्ता।
8. स्वतः स्फूर्त अनुशासन।
9. अध्यात्म और विज्ञान की युति।
10. जीवन के लिए शिक्षा, मात्र जीविका के लिए नहीं।
11. परिक्षेन्मुखी शिक्षा अहितकर।
12. चिन्तन की त्रिपदी - 'चिन्ता नहीं चिन्तन करो, व्यथा नहीं व्यवस्था करो, प्रशंसा नहीं प्रस्तुति करो।'

आचार्य तुलसी का जीवन के हर क्षेत्र में किया गया अवदान कालजयी है। उनका शिक्षा-दर्शन भी सदैव प्रासंगिक रहेगा, और आज की विपर्यस्त स्थितियों में और भी प्रासंगिक। आएँ, हम उनके आदर्शों के पथ पर चलकर स्वयं को, तथा अपनी शिक्षा प्रणाली को सार्थक बनाएँ।

जयपुर निवासी लेखक सुप्रसिद्ध साहित्यकार, शिक्षाविद् एवं योगाचार्य हैं। इन्होंने हिन्दी और अंग्रेजी में अनेकानेक कृतियों का सृजन तथा सम्पादन किया है। आप अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित हैं।



कानून एवं नैतिकता

हम आचार्य श्री तुलसी के ‘अणुव्रत मिशन’ को लें। आज अनेक कानून अणुव्रत के नियमों पर टिके हुए हैं। जैसे निरपराध प्राणियों का वध, मिलावट, भ्रष्टाचार, कालावाजारी, पर्यावरण प्रदूषण, परीक्षा में नकल आदि। यदि हम अणुव्रत के नियमों को स्वीकार कर लें तो शायद अनेक कानूनों का यह जंगल साफ हो जाएगा।

हमारे देश में कानून का राज है। कानून के राज में कानून सर्वोपरि अर्थात् सर्वोच्च होता है। कानून से ऊपर कोई भी नहीं होता। राजा भी कानून के अधीन होता है। सभी व्यक्तियों को कानून की पालना करनी होती है। कानून का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति दंड के भागी होते हैं।

कानून क्या है?

सर्वप्रथम हम कानून का अर्थ समझ लें। विधिवेत्ताओं एवं विधिशास्त्रियों ने इसकी विभिन्न परिभाषा दी हैं।

ऑस्ट्रियन के अनुसार, कानून संप्रभु का समादेश है। इसके पालन के पीछे शास्ति अर्थात् दंड का भय रहता है।

रास्को पाउड के अनुसार, कानून एक ऐसी वैधानिक व्यवस्था है जिसके द्वारा किसी राजनीतिक संगठित समाज में मानव आचरण को सामाजिक नियंत्रण में रखा जाता है।

पेटन के अनुसार, कानून नियमों का एक ऐसा समूह है जो समाज में बाध्यकारी शक्ति के रूप में कार्य करता है।

सरलतम भाषा में यह कहा जा सकता है कि कानून संप्रभु शक्ति द्वारा निर्मित वे नियम हैं जो मानव आचरण को विनियमित करते हैं।

नैतिकता क्या है?

नैतिकता की कोई सार्वभौम परिभाषा दिया जाना कठिन है। प्रचलित अर्थों में नैतिकता सामाजिक जीवन का आधार है। यह सामाजिक व्यवहार की एक आचार संहिता है। नैतिकता एक मानवीय एवं चारित्रिक गुण है जो मानव हृदय में निवास करती है। इसका कोई बाहरी आवरण नहीं होता।

यह मानवीय मूल्यों से जुड़ी होती है। नैतिकता में दया, ममता एवं करुणा निहित रहती है। न्याय, नीति, पारदर्शिता, प्रामाणिकता, परोपकारिता, मैत्री भाव, समता, स्वतंत्रता, शिष्टता, साहचर्य आदि सभी नैतिकता के उदाहरण हैं।

कानून एवं नैतिकता में अंतर

कानून एवं नैतिकता में अंतर है। मोटे तौर पर कानून सभी व्यक्तियों पर आबद्ध कर होता है जबकि नैतिकता नहीं। कानून का पालन प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है जबकि नैतिकता का नहीं। कानून का उल्लंघन दण्डनीय होता है जबकि नैतिकता का नहीं।

हम एक उदाहरण लें। ‘क’ नामक एक व्यक्ति कुएं में गिरकर आत्महत्या करने जा रहा है। ‘ख’ नामक व्यक्ति कुएं के





कानून का मुख्य उद्देश्य न्याय प्रदान करना है अर्थात् कानून का अंतिम उद्देश्य 'न्याय' है। ऐसा माना जाता है कि न्याय का आधार नैतिकता होता है। कानून के उद्देश्यों में सामाजिक नैतिकता प्रस्फुटित होती है।

पास खड़ा है। अब प्रश्न यह है कि क्या 'ख' द्वारा 'क' को बचाया जाना चाहिए। 'ख' का यह विधिक कर्तव्य अथवा दायित्व नहीं है कि वह 'क' को बचाये, लेकिन 'ख' का यह नैतिक कर्तव्य अथवा दायित्व बन जाता है कि वह 'क' को बचाये।

कानून कैसा हो?

अब प्रश्न यह है कि कानून कैसा हो? क्या कानून में नैतिकता का निहित होना अपेक्षित है अर्थात् क्या कानून नैतिप्रक एवं नैतिकता युक्त होना चाहिए?

कानून का मुख्य उद्देश्य न्याय प्रदान करना है अर्थात् कानून का अंतिम उद्देश्य 'न्याय' है। ऐसा माना जाता है कि न्याय का आधार नैतिकता होता है। कानून के उद्देश्य में नैतिप्रक मूल्य समाहित रहते हैं। कानून के उद्देश्यों में सामाजिक नैतिकता प्रस्फुटित होती है।

स्टेमलर के अनुसार, कानून न्याय प्राप्ति का माध्यम है। नैतिप्रक सिद्धांतों से युक्त कानून ही सही अर्थों में कानून कहा जा सकता है। विख्यात विधिशास्त्री जेरेमी बेंथम ने कहा है, कानून सर्वाधिक व्यक्तियों को सर्वाधिक लाभ (Greatest good of the greatest number) पहुँचाने वाला होना चाहिए।

कानून नैतिकता से परिपूर्ण होना चाहिए। नैतिकता विहीन कानून न सविधान के उद्देश्यों को प्राप्त कर सकता है और न ही एक आदर्श समाजवादी समाज की संरचना कर सकता है। यह सुखद है कि अनेक भारतीय कानूनों में नैतिकता एवं सदाचार को स्थान दिया गया है।

एस.पी. गुप्ता बनाम भारत संघ (ए.आई.आर. 1982 एस.सी. 149) के मामले में हमारे सर्वोच्च न्यायालय ने यह कहा है कि नीतिशास्त्र एवं सदाचार में नियुण व्यक्ति सभी प्रकार के प्रलोभनों से दूर रहते हुए सदाचार के मार्ग से कभी विचलित नहीं होता है।

इन सभी उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि कानून नैतिकता से परिपूर्ण होना चाहिए। नैतिकता विहीन कानून न सविधान के उद्देश्यों को प्राप्त कर सकता है और न ही एक आदर्श समाजवादी समाज की संरचना कर सकता है।

यह सुखद है कि अनेक भारतीय कानूनों में नैतिकता एवं सदाचार को स्थान दिया गया है। अपहरण, व्यपहरण, बलात्कार, मिलावट, भ्रष्टाचार से संबंधित ऐसे अनेक कानून हैं जो नैतिकता की आधारशिला पर टिके हुए हैं। इन कानूनों में भारतीय संस्कृति की रक्षा का पुट मिलता है।

के.पी.एस. गिल बनाम श्रीमती रूपन देवल बजाज (ए.आई.आर. 2005 एस.सी. 3104) का मामला हमारे सामने है जिसमें सार्वजनिक स्थान पर एक महिला के कूलहे पर थापा मारने को हमारे सर्वोच्च न्यायालय द्वारा एक गंभीर अपराध माना गया है क्योंकि यह भारतीय संस्कृति में अनुज्ञात नहीं है।

हमारे देश में ऐसे अनेक कानून हैं जो सामाजिक न्याय, नैतिकता, मानवता एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित हैं। जैसे वृद्ध माता-पिता का भरण-पोषण, भिखारी के लिए पुनर्वास की व्यवस्था, लावारिस व्यक्तियों का मृत्यु-उपरांत दाह संस्कार आदि।

हम आचार्य श्री तुलसी के 'अणुव्रत मिशन' को लें। आज अनेक कानून अणुव्रत के नियमों पर टिके हुए हैं। जैसे निरपराध प्राणियों का वध, मिलावट, भ्रष्टाचार, कालाबाजारी, पर्यावरण प्रदूषण, परीक्षा में नकल आदि। यदि हम अणुव्रत के नियमों को स्वीकार कर लें तो शायद अनेक कानूनों का यह जंगल साफ हो जाएगा।

लावा सरदारगढ़ (राजस्थान) निवासी लेखक जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा उपसचिव (गृह एवं विधि) पद से सेवानिवृत्ति के बाद जनसेवा में संलग्न हैं। डॉ. बाबेल 'अणुव्रत गौरव' से अलंकृत हैं।



सहज स्वीकार्यता का सुख

जीवन को सहजता से जीने और प्रसन्न रहने के लिए स्वीकार्यता एक उपयोगी व अनिवार्य आदत अथवा गुण है। यदि हम हर घटना को सहज रूप में लेंगे तो इससे जीवन में हम हर प्रकार के तनाव से बचे रहेंगे। अतः जीवन में अधिकाधिक प्रसन्नता के लिए हमें अपनी स्वीकार्यता को निरंतर विकसित करते रहने का प्रयास करते रहना चाहिए।

एक बार एक व्यक्ति एक गाय दान करना चाहता था। वह पास के एक आश्रम में गया और आश्रम प्रमुख से कहा, "महाराज, मैं आश्रम को एक गाय दान करना चाहता हूँ। यदि आप इसे स्वीकार करेंगे तो बड़ी कृपा होगी।" आश्रम प्रमुख ने प्रसन्न होकर कहा, "ये तो बड़ी ही अच्छी बात है। गाय आ जाने से यहाँ रहने वाले विद्यार्थियों व अन्य आश्रमवासियों को दूध मिलने लगेगा।" गाय पाकर सभी आश्रमवासी प्रसन्न थे।

कुछ दिनों के बाद गाय दान करने वाला व्यक्ति पुनः आश्रम आया और कहने लगा, "महाराज मैं अपनी गाय वापस लेने आया हूँ। यदि आप मेरी गाय लौटा देंगे तो आपकी बड़ी कृपा होगी।" आश्रम प्रमुख ने कहा, "ये तो बड़ी ही अच्छी बात है।" यह कहकर उन्होंने बिना कुछ पूछताछ किये बड़े प्यार से गाय उसके पुराने स्वामी को लौटादी।

जब वह व्यक्ति अपनी गाय लेकर वापस चला गया तो आश्रम प्रमुख के एक शिष्य ने उनसे पूछा, "गुरुजी, जब वह व्यक्ति गाय दान करने आया था, तब भी आपने कहा था कि यह तो बड़ी ही अच्छी बात है और आज जब वह व्यक्ति गाय वापस माँगने लगा तो भी आपने कहा कि यह तो बड़ी ही अच्छी बात है। गाय वापस देने से हम सब दूध से वंचित हो गये। इसमें कौन-सी अच्छी बात है?"

गुरुजी ने कहा, "देखो, जब गाय आयी तो दूध देती थी, अतः इससे अच्छी बात और क्या हो सकती थी? गाय दूध देती थी तो गंदगी भी फैलाती थी और उसकी देखभाल भी करनी पड़ती थी। अब गाय वापस चली गयी है तो अब हम सब आश्रमवासियों को गोबर की गंदगी व गाय की देखभाल से भी तो मुक्ति मिल गयी है। और यह भी संभव है कि गाय दान करने वाले को इस समय गाय की हम सबसे अधिक आवश्यकता हो। अतः अब गाय को लौटाने से अच्छी बात और क्या हो सकती है?"

कुछ महीनों बाद गाय दान करने वाला व्यक्ति पुनः आश्रम में आया और कहने लगा, "महाराज, मैंने गाय दान में देने के बाद उसे वापस लेकर अच्छा नहीं किया। मैं गाय को वापस देने आया हूँ, कृपया गाय को स्वीकार कर मेरी भूल को क्षमा करें।" आश्रम प्रमुख ने कहा, "यह तो बड़ी ही अच्छी बात है।" उन्होंने गाय को दोबारा आश्रम में रख लिया और अपने शिष्यों को उसकी देखभाल करने का निर्देश दिया। पता चला कि अब यह गाय दूध भी नहीं देती है। जब वह व्यक्ति गाय को आश्रम में छोड़कर वापस चला गया तो आश्रम प्रमुख के एक शिष्य ने प्रतिवाद करते हुए पूछा, "गुरुजी, अब यह गाय दूध भी नहीं देती है, अतः किसी काम की नहीं है। अब मुफ्त में इसका गोबर उठाना पड़ेगा और इसकी



जब भी हम किसी घटना अथवा क्रियाकलाप को केवल लाभ की दृष्टि से देखते हैं तो उसमें हानि होने पर बहुत दुःख होता है। जीवन में हर कार्य में केवल लाभ ही लाभ हो, यह संभव भी नहीं। जो व्यक्ति किसी भी घटना अथवा क्रियाकलाप को लाभ-हानि से ऊपर ऊकर रखीकर कर लेते हैं, उन्हें हानि होने पर कोई पीड़ा या दुःख नहीं होता लेकिन लाभ होने पर स्वाभाविक रूप से प्रसन्नता अवश्य होती है।

सेवा करनी पड़ेगी। फिर भी आपने क्यों कहा कि यह तो बड़ी अच्छी बात है? अब इसमें भी कौन-सी अच्छी बात रह गयी है?"

शिष्य की इस बात पर आश्रम प्रमुख मुस्कराये और उससे कहा कि गाय की सेवा करनी पड़ेगी और इसका गोबर उठाना पड़ेगा तभी तो मैंने कहा कि ये तो बड़ी ही अच्छी बात है। गाय दूध नहीं देती तो कोई बात नहीं। दूध के कारण गाय की सेवा करना तो सकाम कर्म की श्रेणी में आता है। अब यह दूध नहीं देती तो इसकी सेवा निष्काम कर्म की श्रेणी में आएगी। निष्काम कर्म से उत्कृष्ट कोई बात हो ही नहीं सकती। वैसे भी गौमाता की सेवा करना हमारे यहाँ धर्म माना जाता है। गाय की सेवा करके हम सहज ही धर्म में प्रवृत्त हो सकेंगे। दूसरे गाय के गोबर से तैयार खाद आश्रम के पेड़-पौधों व खेतों में डालने के काम आएगी। फिर कुछ दिनों के बाद जब यह गाय पुनः व्याएगी तो दूध भी स्वतः सुलभ हो जाएगा। ये अच्छी बात हुई कि नहीं?" अब शिष्य निरुत्तर था।

वास्तव में लाभ-हानि अथवा प्रसन्नता हमारे दृष्टिकोण पर अधिक निर्भर करती है। किसी भी घटना के मुख्यतः दो पक्ष होते हैं - एक सकारात्मक पक्ष व दूसरा नकारात्मक पक्ष। यह हमारे दृष्टिकोण पर निर्भर करता है कि हम किसी भी घटना को किस रूप में लेते हैं। उसका सकारात्मक पक्ष देखते हैं या नकारात्मक पक्ष।

यदि हम हर घटना के केवल सकारात्मक पक्ष को ही देखते हैं तो हम जीवन में दुःखों से बचे रहकर असीम खुशियाँ प्राप्त कर सकते हैं। जीवन में सदैव प्रसन्न बने रहने का एकमात्र यही उपाय है कि हम घटनाओं के केवल सकारात्मक पक्ष को ही देखें और आशावादी बने रहें।

किसी भी घटना में केवल प्रत्यक्ष अथवा वर्तमान लाभ देखना हमारी अल्पज्ञता, संकुचित दृष्टि व घर व्यावसायिकता का द्योतक है। हमें इससे बचना चाहिए। गुणीजनों का मानना है कि ऊपर से कोई स्थिति चाहे जैसी भी दिखलायी पड़े लेकिन उसमें हमारे लिए लाभप्रद स्थितियाँ भी अवश्य ही निहित होती हैं।

कुछ व्यक्तियों की आदत होती है कि वे प्रायः किसी भी बात को बिना तर्क-वितर्क के स्वीकार ही नहीं करते चाहे वे बातें उनके हित में ही क्यों न हों। उनमें स्वीकार्यता का गुण ही नहीं होता। कुछ लोगों की आदत होती है कि हर स्थिति में वे केवल एक ही प्रश्न करते हैं, "इससे मुझे क्या लाभ होगा?" जीवन में हर कार्य मात्र भौतिक लाभ के लिए ही नहीं किया जाता।

जीवन को सहजता से जीने और प्रसन्न रहने के लिए स्वीकार्यता एक उपयोगी व अनिवार्य आदत अथवा गुण है। यदि हम हर घटना को सहज रूप में लेंगे तो इससे जीवन में हम हर प्रकार के तनाव से बचे रहेंगे। वैसे भी हम जिन कई बातों को मानने से मना कर देते हैं, वे हमारे दायित्व के अंतर्गत ही आती हैं। उन्हें स्वीकार करके हम अपने कर्तव्य का पालन ही करते हैं और कर्तव्य-पालन से बढ़कर अच्छी बात और क्या हो सकती है?"

जब भी हम किसी घटना अथवा क्रियाकलाप को केवल लाभ की दृष्टि से देखते हैं तो उसमें हानि होने पर बहुत दुःख होता है। जीवन में ऐसे ही अनेक दुःखों का संग्रह करके हम महादुःखी बने रहते हैं। जीवन में हर कार्य में केवल लाभ ही लाभ हो, यह संभव भी नहीं।

जो व्यक्ति किसी भी घटना अथवा क्रियाकलाप को लाभ-हानि से ऊपर ऊकर स्वीकार कर लेते हैं, उन्हें हानि होने पर कोई पीड़ा या दुःख नहीं होता लेकिन लाभ होने पर स्वाभाविक रूप से प्रसन्नता अवश्य होती है।

लाभ-हानि से निरपेक्ष अथवा निःस्पृह होकर कार्य करने से लाभ होने पर अनेकानेक प्रसन्नता के अवसर हमारे जीवन की वास्तविकता बन हमें आनंद व अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करने में पूर्णतः सक्षम होते हैं, इसमें संदेह नहीं। अतः जीवन में अधिकाधिक प्रसन्नता के लिए हमें अपनी स्वीकार्यता को निरंतर विकसित करते रहने का प्रयास करते रहना चाहिए।

दिल्ली निवासी लेखक स्वतंत्र लेखन में संलग्न हैं। प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं।



सत्संग के पारस से जीवन बनाएं सोना

सत्संग से बुद्धि की जड़ता दूर होती है। बुरे कर्मों का क्षय होता है। आत्मोन्नति के पथ पर अवसर होते हैं। पुरुषार्थ कर्जना सीखते हैं। सबसे खास बात कि साधारण से असाधारण, पुरुष से महापुरुष और नर से नारायण बनने का अवसर पाते हैं। इसलिए सत्संग के लिए आवश्यक रूप से समय निकालना चाहिए।

जै सी संगति होती है, वैसा विचार होता है और जैसा विचार होता है वैसा कर्म होता है। सत्संग का अर्थ है अच्छे व सच्चे लोगों की संगति या सत्रिधि में रहना। उनसे विचारों का आदान-प्रदान बनाये रखना। श्रेष्ठ और प्रभावशाली महापुरुषों की संगति से उनके कर्म और संस्कार अपने भीतर आते-जाते हैं। स्वयं के दोषों का परिमार्जन होता है। सत्संग से ही मन की शुद्धि होती है। बुद्धि निर्मल होती है। विवेक उत्पन्न होता है। प्रसन्नता के साथ-साथ यश और प्रतिष्ठा भी बढ़ती है।

सत्संग को हम पारसमणि मान सकते हैं। जिस प्रकार कोई लोहा पारसमणि को स्पर्श करते ही सोने में बदल जाता है, उसी प्रकार कोई अल्पज्ञानी व्यक्ति जब प्रतिभावान और गुणवान सज्जनों की संगति में आता है, तब वह भी ज्ञानी और सद्गुणी बन जाता है। सत्पुरुषों के सम्पर्क में आते ही व्यक्तित्व का विकास होने लगता है। लोगों से बात करने का सलीका आता है। तन-मन में शान्ति और पवित्रता आती है। उनके जैसा बनने की कल्पना मन में उभरती है।

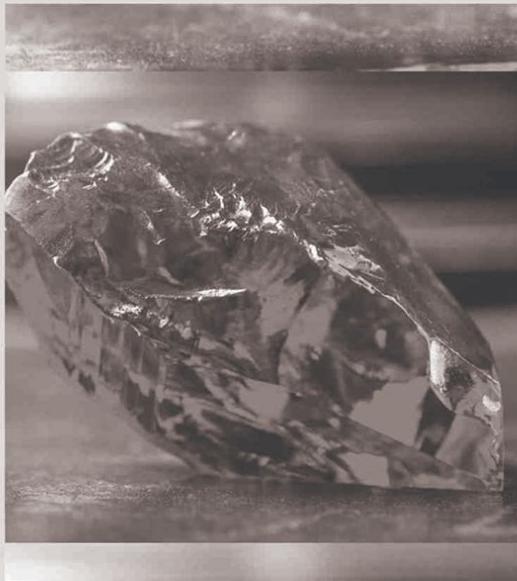
एक कहावत है 'जहाँ चाह वहाँ राह।' सत्संग की चाहत रखने वालों को समाज में सत्पुरुष मिल ही जाते हैं। जिनमें कोई बुराई नहीं है, केवल अच्छाई ही अच्छाई है, साहस है, विवेक है,

जो परोपकार करने में आगे हैं, भटके हुओं को सच्ची राह दिखाते हैं, अच्छे कार्यों की प्रशंसा करना जानते हैं, सदैव कमजोर व्यक्ति के पक्ष में खड़े रहते हैं, वही हमारे लिए श्रेष्ठ सत्पुरुष हैं। हम उन्हीं को अपना आदर्श मान सकते हैं।

हम स्वयं को, समाज को और राष्ट्र को समर्थ बनाने में योगदान कैसे करें? दुर्व्यसनों और दुराचारों से कैसे बचें? चुनौतियों का सामना कैसे करें? आत्मबल का विकास कैसे करें? हमारे आयुष्य में वृद्धि कैसे होगी? हमारे व्यक्तिगत और पारिवारिक धर्म क्या हैं? सत्संग करने वाले लोग समाज के सत्पुरुषों से इस प्रकार के शिक्षाप्रद प्रश्न पूछते हैं और उनके उत्तरों से सन्तुष्ट होते हैं। उनकी कहीं बातों का अनुसरण करने के साथ ही व्यवहार और व्यक्तित्व में अन्तर दिखना शुरू हो जाता है।

कहा जाता है कि राजा जनक ने महर्षि याज्ञवल्क्य से सत्संग करके ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था। रत्नाकर डाकू को जब कुछ क्षणों के लिए देवर्षि नारद की संगति प्राप्त हुई तो वे आदिकवि महर्षि वात्मीकि बन गये। अंगुलिमाल डाकू का भगवान बुद्ध से सत्संग हुआ और वह महात्मा बन गया। नगरवधू आम्रपाली का भी भगवान बुद्ध की संगति से उद्घार हुआ था। भगवान श्रीकृष्ण के संग से अर्जुन का मोह भंग हुआ था और वे विजयी योद्धा





श्रेष्ठ साहित्य का मूल्य उसी को पता होता है जिसने इसकी सहायता से अपने व्यक्तित्व को सँवारा है। श्रेष्ठ पुस्तकों व पत्रिकाओं को नियमित पढ़ना और आत्मसात करना भी सत्संग है। आजकल सोशल मीडिया में उपलब्ध रिकॉर्ड व्याख्यानों, कथाओं और विचारों को भी सत्संग के अन्तर्गत समझना चाहिए।

कहलाये। रामकृष्ण परमहंस की सुसंगति से विवेकानन्द महान संन्यासी बने। विरजानन्द की सुसंगति पाकर दयानन्द सरस्वती ज्ञानोपदेशक योगी बने थे।

श्रेष्ठ साहित्य का सत्संग

श्रेष्ठ साहित्य का मूल्य उसी को पता होता है जिसने इसकी सहायता से अपने व्यक्तित्व को सँवारा है। श्रेष्ठ पुस्तकों व पत्रिकाओं को नियमित पढ़ना और आत्मसात करना भी सत्संग है। आजकल सोशल मीडिया में उपलब्ध रिकॉर्ड व्याख्यानों, कथाओं और विचारों को भी सत्संग के अन्तर्गत समझना चाहिए।

इनका रखें ध्यान

> सांस्कृतिक गतिविधियों में भागीदारी निभाएं। वरिष्ठ कलाकारों के साथ कला के उद्देश्यों पर सत्संग करें।

> प्रेरक व्याख्यान के कार्यक्रमों में जाएं। वक्ता की बातों को ध्यान से सुनें।

> बुद्धिजीवियों के सम्मेलन में नियमित रूप से भाग लें। उनसे प्रश्न पूछें और उनकी राय जानें।

> साहित्य और लेखक सम्मेलन का भी व्यक्तित्व पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

> देश-विदेश के नाटकों का प्रदर्शन देखें। उनके संवाद और दृश्य विचारों की परत को खोल देते हैं।

> जब भी सत्संग में जाएं तो एक नोटबुक साथ रखें। उसमें विशेष बातों को लिखते चलें।

भर्तृहरि के 'नीतिशतक' के अनुसार कुसंग से बिगड़े लोगों का सुधार सुसंग से सम्भव है। सत्संग से बुद्धि की जड़ता दूर होती है। बुरे कर्मों का क्षय होता है। आत्मोन्नति के पथ पर अग्रसर होते हैं। पुरुषार्थ करना सीखते हैं। सबसे खास बात कि साधारण से असाधारण, पुरुष से महापुरुष और नर से नारायण बनने का अवसर पाते हैं। इसलिए सत्संग के लिए आवश्यक रूप से समय निकालना चाहिए। यह अवसर जहाँ और जब भी मिले, अवश्य प्राप्त कर लेना चाहिए।

रायगढ़ (छत्तीसगढ़) निवासी लेखक स्वतंत्र साहित्यिक पत्रकारिता में संलग्न हैं। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित सनत की कई कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

अब इतिहास रचें मिल करके

■ प्रिया देवांगन 'प्रिय' - गरियाबंद ■

स्वार्थ भरा जीवन क्या जीना, हँसकर समय बिताएँ।
नर्याँ उम्हें, नये तराने, सीखें और सिखाएँ॥

छोड़ो कल की बातों को तुम, ये तो हुईं पुरानी।
अब इतिहास रचें मिल करके, हो ये अमर कहानी॥

फूल खिले हर आँगन-गुलशन, मिले वक्त से रोटी।
मानवता को समझो सारे, रखो सोच मत छोटी॥

द्वेष भावना और हिंसा, तज दो इनकी राहें।
मानवता का दीप जलाकर, फैलाओ तुम बाहें॥

तस हृदय लेकर क्यों बैठे, जलते हैं अंगारे।
अपनेपन का मोल नहीं क्यों, हैं रिश्तों से हारे॥
करें माफ हम इक दूजे को, आओ गले लगाएँ।
मानव मन की इस बागिया को, मिल के हम महकाएँ॥

नहीं गाँठ पड़ने तुम देना, चलना सीधी रेखा।
रक्त रगों में इक सा बहता, ना करना अनदेखा॥
हम चौरासी भोग लिये, अब मानव तन है पाया।
सतयुग फिर से लाना है, हमने है स्वप्न सजाया॥



जीवंत रहकर लें जीवन का आनंद

अपने स्वाभाविक लय में जीने का अलग ही सुख है। यह दिमाग को शांत रखता है जिससे जिन्दगी का सुख जुड़ा हुआ है। जीवन का आनंद जीवंत रहने में है, इसलिए अपने स्वभाव के अनुसार जीवंत बने रहिए। याद रहे, जीवंत बने रहने का मतलब एकाकी और स्वार्थी बने रहने से नहीं है। यह तो सबको साथ लेकर चलने की कला है।

बी ता हुआ समय हमें बहुत कुछ सिखा जाता है। समय के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने वाले खुश हैं कि उन्होंने अपनी मंजिल को पाने के लिए यथायोग्य कदम उठाया। मुसीबत तब होती है जब हम समय से आगे निकलने की कोशिश में कभी अवसाद के शिकार हो जाते हैं तो कभी बीमार हो जाते हैं।

समय से बड़ा और बलवान कोई नहीं है। समय अगर जख्म देता है तो मरहम भी लगा देता है। प्रकृति में हर काम जैसे समयानुसार होता है, उसी तरह निजी जिन्दगी में भी समयानुसार ही कर्म फलते हैं। वांछित फल के लिए न तो हड्डबड़ाने की जरूरत है और न घबराने की। जाड़े के बाद गर्मी ही आएगी। चाहे लाख बारिश का इंतजार हो, आएगी वह गर्मी के बाद ही। फसल पकने का एक समय है, फूल खिलने का भी और जिंदा रहने का भी। समय से पहले न कुछ मिला है और न मिलेगा।

आज मनुष्य बहुत व्यस्त हो गया है। अपने जेहन में ज्यादा से ज्यादा जानकारी भर लेने की कवायद उसे वक्त से पहले ही बुर्जुर्ज बना दे रही है। आगे निकलने की होड़ में न तो वह अपने स्वाभाविक विकास पर ध्यान दे पाता है और न उस वक्त से जुड़ी खुशियों का आनंद ले पाता है। नैसर्गिक खुशियाँ हमें अपने चाहने

पर ही मिलेंगी, कोई उसे थोप नहीं सकता। आज नहीं-नहीं अँगुलियाँ जो मोबाइल और कम्प्यूटर के की-बोर्ड पर थिरकती हैं, उन्हें क्या पता कि स्लेट पर पेसिल से लिखने का आनंद कैसा होता है। ठंड के मौसम में ब्लॉअर लगाकर गर्मी का आनंद लेने वाले क्या जानें सर्दी की गुनगुनी धूप का एहसास। मल्टीप्लेक्स की बालकाँनी में खड़े होकर भी जिसने ढलती शाम और उगते सूरज की लालिमा को आँखों में नहीं बसाया, वह क्या जाने कि मौसमी फल-फूल से लदी बगिया सुकून भरे चैन का पर्याय होती है।

समय के साथ परिवर्तन आवश्यक है, परंतु भरसक कोशिश होनी चाहिए कि यह परिवर्तन प्रकृति के सान्त्रिध्य में उससे सामंजस्य बनाकर हो। आज कई लोगों का बहुत सारे रोगों से ग्रस्त होने का कारण ही प्रकृति से दूर हो जाना है। तेज रफ्तार से जीवन का हर जंग जीतने की कोशिश में कभी-कभी पड़ाव भी जरूरी है और हार को बर्दाशत करने की क्षमता भी। साँसों की एक लय है। न ज्यादा तेज, न ज्यादा धीमी। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए यही गति चाहिए। जिन्दगी कोई रेस नहीं है। हर व्यक्ति खास है, हरेक के अलग-अलग हुनर हैं। कोई गीत-नृत्य में पारंगत है तो कोई खेलकूद में। टीवी के रियलिटी शो ने बच्चों को कम उम्र में



खुशी महसूस करने का सबसे सटीक तरीका है अपनी शक्ति, सामर्थ्य और सीमा का मूल्यांकन करना। हर व्यक्ति अपने आप में अद्वितीय और दूसरों से भिन्न है। खुशी के लिए अपने को सुव्यवस्थित करना आवश्यक है। हमारी खुशी हम पर निर्भर करती है, किसी और पर नहीं।

प्रसिद्धि तो दिलायी, पर उनका बचपन छीन लिया। किसी भी क्षेत्र में अव्वल आने के लिए शारीरिक क्षमता से अधिक किया गया प्रयास हमेशा बुरे परिणाम ही लाता है। असफल होने का डर अलग मनोवैज्ञानिक दबाव डालता है। इसलिए ऐसे किसी काम में स्वयं को न झोकें जो आपकी प्रकृति के विरुद्ध हो।

अपने स्वाभाविक लय में जीने का अलग ही सुख है। यह दिमाग को शांत रखता है जिससे जिन्दगी का सुख जुड़ा हुआ है। अगर आपने अब तक केवल निंदा-स्तुति और दूसरों की बुराइयाँ गिनने में समय गुजारा है तो अब स्वयं में बदलाव लाएँ। यह कठिन नहीं है बस केवल आत्मानुशासन की जरूरत है। जब भी किसी पर आपकी एक अँगुली उठती है तुरंत खयाल रहे कि तीन अँगुलियाँ आपको दिखा रही हैं। यूँ भी एक लम्बे अंतराल के बाद पता चलता है कि हमने जिन्दगी उस काम में गुजार दी जिसमें खुद अपना ही अहित हुआ, तो आने वाले समय में इस बात का खयाल रहे कि अच्छे और नेक काम में समय बीते।

जीवन का आनंद जीवंत रहने में है, इसलिए अपने स्वभाव के अनुसार जीवंत बने रहिए, किसी की देखा-देखी नहीं। याद रहे, जीवंत बने रहने का मतलब एकाकी और स्वार्थी बने रहने से नहीं है। यह तो सबको साथ लेकर चलने की कला है। एक अनुभव, एक भाव और जीवन का लक्ष्य जिसके लिए जदोजहद करनी

होती है और जिसके बिना जीवन समय से पहले कुम्हला कर समाप्त हो जाये, वह है खुशी। महान दार्शनिक ओशो ने खुशी को उस क्रिया से जोड़कर देखा है जिसकी चाह हर योनि में समान रूप से होती है, जो व्यक्त या अव्यक्त के दौर से नहीं गुजरता, पर रुह की गहराइयों से महसूस किया जाता है। एक बच्चे को खिलौना पाकर जो खुशी मिलती है या एक खिलाड़ी को लंबी दौड़ के बाद जो पदक मिलता है, उसकी खुशी में तमाम तपस्या और थकावट का तुरंत विलय इस बात का परिचायक है कि खुशी परमानंद तत्त्व है, अल्टीमेट है।

समाज मानव की अंतःक्रियाओं के क्रम की एक प्रणाली है जिससे मानव चेतन-अचेतन दोनों अवस्थाओं से जुड़ा होता है। हमारी खुशियाँ, हमारे गम इसी समाज की देन हैं क्योंकि यहाँ हमारी इच्छाओं की पूर्ति होती है, लेकिन जरूरी है कि हमें अपनी सीमाएं मालूम हों। इस लिहाज से खुशी-नाखुशी के कई रूप देखने को मिलते हैं जिन्हें हम छोटी खुशी, बड़ी खुशी में बाँट देते हैं। हम एक खुशाहाल जिन्दगी या उदास जिन्दगी को तात्कालिक सफलता या असफलता से जोड़कर देखते हैं। अगर हमारी मनोकामना पूरी होती है तो हम खुश हो जाते हैं, अन्यथा नहीं। हमें पता होना चाहिए कि क्षणिक खुशी और जीवन की खुशी में अंतर है। क्षणिक खुशी में हमारी इच्छाओं की तुष्टि है, पर जीवन की खुशी में अपने अस्तित्व की पहचान जुड़ी हुई है। इसका मतलब यह नहीं कि अपना जीवन यापन, पारिवारिक जिम्मेदारी, धन का सही उपयोग और आगे बढ़ने के रास्ते बंद कर दिये जाएं। इन रास्तों से गुजर कर अपने अस्तित्व की खोज करनी चाहिए। सांसारिक उत्तरदायित्व को निभाते हुए आध्यात्मिक ऊँचाइयों को छूने का प्रयत्न करना चाहिए।

खुशी महसूस करने का सबसे सटीक तरीका है अपनी शक्ति, सामर्थ्य और सीमा का मूल्यांकन करना। हर व्यक्ति अपने आप में अद्वितीय और दूसरों से भिन्न है। खुशी के लिए अपने को सुव्यवस्थित करना आवश्यक है। हमारी खुशी हम पर निर्भर करती है, किसी और पर नहीं। किसी से उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि वह हमें खुशी दे। यह भी सच है कि खुशी बाँटने से बढ़ती है और गम बाँटने से घटता है। दोनों के लिए व्यक्ति विशेष ही जिम्मेदार है। मसलन, अपने लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करना, एक बार में कई कामों का बोझ न लेना, सज्जनों के संसर्ग में रहना आदि। उत्प्रेरित करने वाले लोग समस्याओं का समाधान सकारात्मक दृष्टि से करते हैं। आदमी अपने विचार, आदत, दृष्टिकोण और माहौल से बँधा हुआ है। अपने प्रयत्नों की सुई इन कारकों के मध्य चलाकर हम खुशी या गम पाते हैं। गम क्षणिक है और खुशी दूरगमी। इसलिए हमारा ध्येय खुशी प्राप्त करना होना चाहिए।

धनबाद में रहने वाली लेखिका शिक्षाविद् तथा सामाजिक कार्यकर्ता हैं। समाचार पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाएं छपती रहती हैं। साहित्य की विभिन्न विधाओं में इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।



अपनाएँ स्वास्थ्यप्रद जीवनशैली

संयुक्त जीवनशैली अच्छे और स्वरथ जीवन की आधारशिला है। तथाकथित आधुनिकता के अंदरानुकरण के फलस्वरूप जीवनशैली में नकारात्मक बदलाव व्यक्ति, परिवार और समाज को दुष्प्रभावित कर रहा है। हमें स्वयं अपने समाज और देश के कल्याण के लिए पुनः स्वास्थ्यप्रद जीवनशैली की ओर लौटना होगा।

जी वनशैली किसी व्यक्ति, समूह या संस्कृति की रुचियों, सम्मति एवं सद्व्यवहार का वह समुच्चय है, जिससे सही जीवन जीने की समझ आती है। जीवनशैली वही स्वास्थ्यप्रद और उत्कृष्ट कही जाएगी, जिसमें व्यक्ति सुखी-शांत वातावरण में निरोगी जीवन निर्वाह कर रहा हो। 'सादा जीवन, उच्च विचार' का भारतीय सोच ही हमारे स्वस्थ जीवनशैली का महामंत्र रहा है।

एक स्वस्थ जीवनशैली के अंतर्गत बहुत-सी बातें आती हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख हैं - पौष्टिक आहार, दैनिक व्यायाम, पर्याप्त नींद, प्रसन्न रहना, सकारात्मक सोच आदि। जब हम स्वस्थ जीवनशैली अपनाते हैं, तो हमारा जीवन सही रस्ते पर चल रहा होता है। यह आचरण न केवल व्यक्ति को लंबे समय तक जीने में सहायक होता है, अपितु अनेक बीमारियों से भी बचाता है।

स्वस्थ जीवनशैली एक व्यक्ति को ही नहीं, उसकी भावी पीढ़ियों तक को प्रभावित करती है। यदि 0-3 वर्ष तक के बच्चे की माँ स्वस्थ जीवनशैली अपनाती है, तो उस बच्चे के स्वस्थ होने और उसी जीवनशैली को अपनाने की संभावना 27 प्रतिशत अधिक बढ़ जाती है। वर्तमान परिवेश में जीवनशैली से जुड़े कुछ बिंदुओं पर चर्चा करते हैं -

आहार

आज की अस्त-व्यस्त दिनचर्या में लोगों का रहन-सहन और खान-पान अत्यंत अनियमित और अस्वास्थ्यकर हो गया है। लोग पौष्टिक आहार पर ध्यान न देकर, अस्वास्थ्यप्रद खान-पान के जाल में फँसते जा रहे हैं। स्वाद के चक्कर में वे सादे भोजन को त्याग कर घर के बाहर का भोजन या जंक फूड खाते हैं। आज के युवा अधिकतर खाने के नाम पर चाट, समोसा, मोमोज, नूडल, बर्गर, पिज्जा, पास्ता, फ्रेंचफ्राई आदि फास्टफूड पसंद करते हैं। प्यास लगने पर पानी के बजाय कोल्ड इंक पीते हैं। जूस या दूध पीने से उन्हें चिढ़ होती है। ये चीजें उनको ऊर्जा प्रदान करने के साथ उदरपूर्ति तो करती है, किंतु उन्हें कुपोषण, मधुमेह, एलर्जी, स्मृति हास, अपच, व्याकुलता, अवसाद, अनिद्रा, रक्तचाप, मोटापा, हृदयरोग जैसी बीमारियों की शिकार भी बनाती हैं। हम ऐसी घातक बीमारियों वाला खान-पान क्यों अपनाएँ, जिनसे हम आसानी से बच सकते हैं।

पर्याप्त नींद

एक स्वस्थ व्यक्ति को प्रतिदिन 7-8 घंटे की नींद आवश्यक है, किंतु लोगों की दिनचर्या ऐसी गड़बड़ा गयी है कि वे पर्याप्त नींद





काम की भागदौड़ में आज अधिकांश लोग व्यायाम के प्रति जागरूक नहीं हैं। वे शारीरिक श्रम करने वाले कामों से दूर रहना चाहते हैं क्योंकि घर के सभी कार्यों के लिए प्रायः विद्युत उपकरण उपलब्ध हैं। लोग घर-बाहर की साफ-सफाई करने से भी जी चुराते हैं। ऑनलाइन खरीदारी के चलन से लोगों ने बाजार जाना भी छोड़ दिया है। वे दस कदम पैदल चलने के बजाय मोटरसाइकिल या स्कूटी का प्रयोग करते हैं।

नहीं ले पाते। व्यस्तता और जीवनशैली में परिवर्तन के कारण लोग न तो समय से भोजन कर पाते हैं, न ठीक से सो पाते हैं और न सुबह जल्दी जग पाते हैं। इसके लिए देर से भोजन बनाना, टीवी के कार्यक्रम, सोशल मीडिया में सक्रियता, मोबाइल पर चैटिंग, ऑनलाइन गेमिंग और फिल्में देखने के शौक आदि जिम्मेदार हैं। विशेषकर, आज के युवा अपने करियर और धन कमाने के फेर में इतने अधिक व्यस्त हैं कि उन्हें खाने-पीने की कोई सुध नहीं रहती। इससे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव तो पड़ता ही है, दिनचर्या भी अस्त-व्यस्त रहती है।

रात की शिफ्ट में काम

कई लोगों को जीविकोपार्जन के लिए रात की शिफ्ट में काम करना पड़ता है। यह शारीरिक प्रकृति के अनुकूल न होने के कारण स्वास्थ्य के लिए अत्यंत घातक हो सकता है। इससे मधुमेह, रक्तचाप, हृदय रोग आदि का खतरा बढ़ जाता है। जगने के लिए रात में चाय, कॉफी अधिक लेने से भी स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। रात में काम करने वाले न व्यायाम को समुचित समय दे पाते हैं और न ही पूरी नींद ले पाते हैं। इसका दुष्प्रभाव बच्चों की शिक्षा और घरेलू कामकाज पर भी पड़ता है।

व्यायाम का अभाव

काम की भागदौड़ में आज अधिकांश लोग व्यायाम के प्रति जागरूक नहीं हैं। वे शारीरिक श्रम वाले कामों से दूर रहना चाहते हैं क्योंकि घर के सभी कार्यों के लिए प्रायः विद्युत उपकरण उपलब्ध हैं। लोग घर-बाहर की साफ-सफाई करने से भी जी चुराते हैं। ऑनलाइन खरीदारी के चलन से लोगों ने बाजार जाना भी छोड़ दिया है। वे दस कदम पैदल चलने के बजाय मोटरसाइकिल या स्कूटी का प्रयोग करते हैं।

गाँव में अब खेतों तक पैदल या साइकिल से जाने के स्थान पर युवक बाइक से जाते हैं, खेतों में काम करने की बात तो सोचना ही व्यर्थ है। बच्चे घर के बाहर के खेल खेलना भी भूल चुके हैं, बस मोबाइल में मस्त रहना ही उनका शगल है। इस स्थिति में बदलाव की जरूरत है। बच्चे जॉगिंग, खेलकूद, सुबह टहलना, दैनिक व्यायाम पर जोर दें तथा मोबाइल का सीमित प्रयोग सुनिश्चित करें।

पर्यावरण प्रदूषण से मुक्ति

शहरों में वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, गंदगी, कूड़े के ढेर और खाद्य सामग्री में विषैले तत्वों का होना स्वास्थ्य के लिए महाघातक है। कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग से अनाज, सब्जी, फल और दूध विषैले हो रहे हैं, इन पर पूर्णतः रोक लगानी होगी। हमें अपने स्वास्थ्य और पर्यावरण शुद्धीकरण के बीच सामंजस्य स्थापित करना होगा। घर में वाटर फिल्टर लगा लेना अथवा बाजार से पानी की बोतलें खरीद लेना प्रदूषण से मुक्ति का विकल्प नहीं हो सकता, जब तक सभी को स्वच्छ जल-वायु प्राप्त नहीं हो पाती।

व्यसनों से बचाव

धूम्रपान, शराब, तंबाकू आदि का सेवन स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है और यह सभ्य समाज का लक्षण भी नहीं है। आजकल इन्हीं अपद्रव्यों के सेवन के कारण कैंसर रोगियों की संख्या बढ़ रही है। अतः इन वस्तुओं की खुली बिक्री पर प्रतिबंध लगाने की आवश्यकता है।

संयमित जीवनशैली अच्छे और स्वस्थ जीवन की आधारशिला है। हमारे बड़े-बुजुर्गों ने प्रायः पौष्टिक भोजन खाने, समय पर सोने और समय पर जागने पर जोर दिया है। उन्होंने विपुल वैभव की तुलना में सुसंस्कृत जीवन को अधिक महत्व दिया है। आधुनिकता के अंधानुकरण के फलस्वरूप जीवनशैली में नकारात्मक बदलाव व्यक्ति, परिवार और समाज को दुष्प्रभावित कर रहा है। हमें स्वयं अपने, समाज और देश के कल्याण के लिए पुनः स्वास्थ्यप्रद जीवनशैली की ओर लौटना होगा।

लखनऊ निवासी लेखक डाक विभाग से सेवानिवृत्ति के पश्चात् स्वतंत्र लेखन में संलग्न हैं। आप अनेक साहित्यिक संस्थाओं से सम्मानित हो चुके हैं।



ये कहाँ जा रहे हम...

नूतन में पुरातन का समावेश करके ही हम अपनी खुशियों को बरकरार रख सकते हैं। हमारी आत्मा के भीतर का सौन्दर्य, जीवंतता, खुशियों को हमें एक बार पुनः तलाशना होगा तभी हम सच्ची खुशी का अनुभव करने के साथ ही आनन्दित, पुलिकित व हर्षित होते हुए दूसरों के जीवन में भी उजाले व खुशियों के रंग भर सकते हैं।

दटे, बिखरते संयुक्त परिवार, शहरीकरण की भागदौड़ ने हमारे समाज की मान्यताओं, परम्पराओं, नैतिक मूल्यों व संस्कारों को किसी हद तक ठहराव व अवमूल्यन के धरातल पर ला दिया है। भारतीय संस्कृति की धुरी कहे जाने वाले पारिवारिक रिश्तों में न तो आपसी तालमेल और सामजंस्य की भावना बची है, न ही मर्यादा और संस्कार।

पाश्चात्य संस्कृति, वैश्वीकरण, टीवी, इंटरनेट, सोशल मीडिया के बढ़ते मोहजाल ने आज समूचे समाज में परिवर्तन किया है। बच्चे बुढ़ापे की लाठी, सहारा बनने के बजाय बुजुर्गों को ओल्ड एज होम्स की राह दिखा रहे हैं। अपने हक के लिए माता-पिता को कानून की लड़ाई लड़नी पड़ रही है। आज के एकल परिवार में दादा-दादी, नाना-नानी, चाचा, ताऊ के रिश्तों की पहचान गुम होती जा रही है।

पारिवारिक मूल्यों में तेजी से गिरावट होती जा रही है। पूरे विश्व में वसुधैव कुटुम्बकम्, परिवारवाद के आदर्श, मूल्यों व संस्कारों की सीख देने वाले हमारे देश की युवा पीढ़ी की सोच, मानसिकता बदलती जा रही है। पढ़ाई पूरी करने के बाद आज की पीढ़ी, महानगरीय चकाचौथ से आकर्षित होकर खेत-खलिहान, जमीन-जायदाद बेचकर अपनी अलग ही दुनिया बसा रही है।

मोबाइल व इंटरनेट के युग में प्रान्तीय देश भाषाएं दम तोड़ती नजर आ रही हैं। एसएमएस, व्हाट्सएप व ई-मेल में प्रयोग की जाने वाली भाषा ने राष्ट्रभाषा हिन्दी को भी तोड़-मरोड़ कर रख दिया है। बाल पीढ़ी अपने संस्कार भूलती जा रही है। शिक्षा से नैतिक व मानवीय मूल्य विलुप्त हो रहे हैं। अंकों की प्रतिस्पर्द्धा व करियर के चक्रव्यूह में बच्चों का बचपन स्कूल-ट्यूशन-कोचिंग में सिमट कर रह गया है।

आज घनी बसावट वाली कॉलोनियों में खेल के मैदान नहीं रहे। चंगा पौआ, साँप सीढ़ी, आइस पाइस, सितोलिया, मारदड़ी जैसे खेल कहीं गुम हो गये। टीवी, मोबाइल, इंटरनेट की दुनिया में खोये बच्चे वीडियो गेम में अपनी खुशियां तलाश रहे हैं। पंचतत्र, हितोपदेश में बच्चों के लिए ढेरों मनोरंजक कहानियां हैं, पर कॉमिक्स-कार्टून्स में छोटे-छोटे बच्चे अपने बचपन की सीख ले रहे हैं।

गाँव के लोग खेत-खलिहान बेचकर रोजगार की तलाश में शहरों में आ रहे हैं। खेती की जमीनों पर बिल्डर्स शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, बड़े-बड़े मल्टीप्लेक्स बना रहे हैं। गाँवों और शहरों में कुएं, तालाब, बावड़ियां रख-रखाव के बिना अपनी पहचान खोती जा रही हैं। नलकूप के दोहन से भूजल स्तर गिरता जा रहा





आवश्यकता है टूटे संयुक्त परिवारों को समेटने की, उन्हें जोड़ने की ताकि पारिवारिक रिश्तों की बुनियाद मजबूत हो सके। पुरातन संस्कृति को नूतन परम्पराओं के साथ जोड़ते हुए हमें आगे बढ़ना होगा। तभी हमारे जीवन मूल्यों को सही व सार्थक दिशा मिल सकती है।

है। प्लास्टिक, पॉलिथीन के बढ़ते उपयोग से जमीन की उर्वरता कम हो रही है। पशु-पक्षी मर रहे हैं, तालाबों-नदियों का पानी गंदा हो रहा है। दलिया, खिचड़ी, पौष्टिक आहार, हरी सब्जियों, फल, दही-चाठ-जूस को छोड़कर मैगी, बर्गर, पास्ता, कोल्ड ड्रिंक्स की माँग करते बच्चे ऑनलाइन ऑर्डर कर अपने स्वास्थ्य के साथ खिलाड़ कर रहे हैं।

एक ओर हम पुराने रीति-रिवाज व परम्पराओं को भूल रहे हैं, वहीं दूसरी ओर एनिवर्सरी, डेज मनाने की परम्परा बढ़ रही है। प्रदर्शन व दिखावे के चलते करवा चौथ, गणगौर, नवरात्रि, दीपावली, रक्षाबंधन के त्यौहार गिफ्ट, सजावट व चमक-दमक के बीच अपने मूल स्वरूप, अपनत्व की भावना खोते जा रहे हैं। वृद्ध दिवस मनाकर एक दिन के लिए हम अपने बुजुर्गों को खुश करने की कोशिश करते हैं, पर उनके दर्द को समझ नहीं पाते। आज समाज में वृद्धाश्रमों की संख्या दिनों-दिन बढ़ रही है। आज माटी की महक से जुड़े हमारे लोकगीत, लोकनृत्य, लोककलाएं अपने मौलिक स्वरूप को खोती जा रही हैं। लोककला गोदना ने टैटू का आधुनिक रूप धारण कर लिया है।

शादी-विवाह जैसे शुभ मांगलिक अवसरों पर बजायी जाने वाली शहनाई, ढोलक की थाप व मंगल गीतों की मधुर स्वर लहरी आज डीजे के कानफोड़ शोर के बीच कहीं गुम हो गयी है। पहले

विवाह को एक वैदिक परम्परा, संस्कार माना जाता था। आज विवाह दिखावे की संस्कृति बन गया है। पहले महीनों पहले शादी की तैयारियां शुरू हो जाती थीं। घरों में गेहूं, दाल, चावल बीने के साथ पापड़, अचार, बड़ी बनाने के लिए परिवार के साथ ही आस-पड़ोस की महिलाएं इकट्ठी होकर काम के साथ ढोलक पर बन्ना-बन्नी के गीत गाती थीं। वह खुशी अब रेडीमेड चीजों में कहाँ। पहले हम खुद जाकर पीले चावल देकर मनुहार कर आदर सहित अपनों को विवाह में आमंत्रित करते थे। आज के मशीनी युग में व्हाट्सएप मैसेज भेजकर निमंत्रण की इतिश्री समझ ली जाती है। पुराने दौर में पंगत में बैठकर पतल पर खाने का स्वाद ही कुछ अलग था। आज तो बुफे में जहाँ खाने की बर्बादी होती है, वहीं मनुहार करके परोस कर खिलाने में जो आनंद था, वह अब कहाँ।

पहले हम छोटी-छोटी खुशियां अपने घर-परिवार, पास-पड़ोस में बाँटते थे। थोड़ी-सी हँसी, मुस्कुराहट हमें झूमने पर मजबूत कर देती थी, पर आज तनाव भरी जिन्दगी में हमें हँसने के लिए लाफिंग क्लब व कॉमेडी सीरियल्स का सहारा लेना पड़ता है। आज हमें न तो होली के रंगों की बौछार में सराबोर होने की चाहत रहती है न ही दिवाली में माटी के दीये हमारे मन के अंधकार को दूर कर पाते हैं। आखिर हम अपने परम्परागत रीति-रिवाज, पारिवारिक मूल्यों को क्यों भूलते जा रहे हैं। ये बात निश्चित ही विचार करने, मनन करने योग्य है।

कहाँ गयी वो गरमी की छुट्टियां जिनका बच्चे बेसब्री से इंतजार करते थे। नानी, दादी, मौसी, बुआ के घर जाने की जिद। भाई-बहनों की टोली के संग पूरे दिन धमाचौकड़ी। दोपहर में कहानी सुनने-सुनाने का सिलसिला न जाने कहाँ गुम हो गया। वह आम का चटकारे स्वाद वाला पना, दही की लस्सी, नींबू की शिकंजी जैसा मजा आज कोल्ड ड्रिंक्स में कहाँ। हम आने वाली पीढ़ी को विरासत में आखिर क्या देने वाले हैं?

ऐसे में आवश्यकता है टूटे संयुक्त परिवारों को समेटने की, उन्हें जोड़ने की ताकि पारिवारिक रिश्तों की बुनियाद मजबूत हो सके। हमारे बुजुर्गों को सम्मान, प्यार व अपनापन मिल सके जिसके बीच असल में हकदार हैं। पुरातन संस्कृति को नूतन परम्पराओं के साथ जोड़ते हुए हमें आगे बढ़ना होगा। तभी हमारे जीवन मूल्यों को सही व सार्थक दिशा मिल सकती है।

समय के बदलाव के संग मान्यताओं, परम्पराओं में बदलाव होना जरूरी है। नूतन में पुरातन का समावेश करके ही हम अपनी खुशियों को बरकरार रख सकते हैं। हमारी आत्मा के भीतर का सौन्दर्य, जीवंतता, खुशियों को हमें एक बार पुनः तलाशना होगा, तभी हम सच्ची खुशी का अनुभव करने के साथ ही आनन्दित, पुलकित व हर्षित होते हुए दूसरों के जीवन में भी उजाले व खुशियों के रंग भर सकते हैं।

भोपाल निवासी लेखिका मध्य प्रदेश स्कूल शिक्षा विभाग में संस्कृत शिक्षक पद से सेवानिवृत्ति के बाद साहित्य साधना में संलग्न हैं। आपके आलेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।



प्रगति की रेखा

प्रगति के लिए व्यक्ति को अनेक चुनौतियों एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सभी सफल व्यक्तियों की प्रगति रेखा संकरी, टेढ़ी-मेढ़ी थी, लेकिन उन्होंने प्रयास नहीं छोड़े। जो व्यक्ति प्रयास करना नहीं छोड़ता, निरंतर लगा रहता है, उसके सामने बड़े से बड़ा व्यक्ति भी हार मान लेता है।

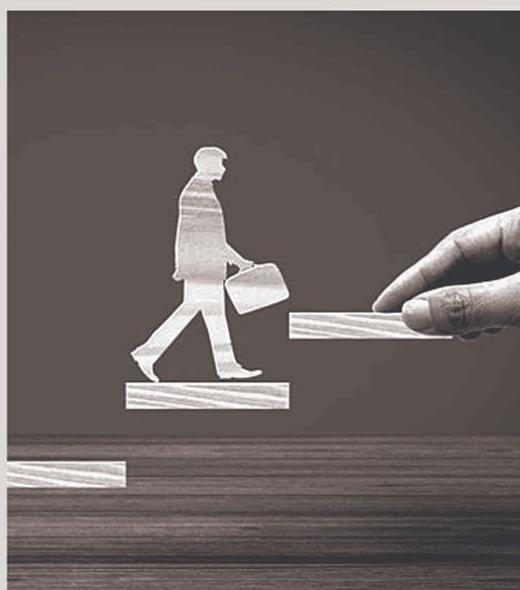
जी वन में रेखाओं का बहुत महत्व होता है। हस्तरेखा, ज्यामिति रेखा, जीवनरेखा, भाग्यरेखा एवं प्रगति रेखा। प्रगति रेखा भाग्य से अधिक मेहनत का परिणाम होती है। मैक्स ओ'रेलिंग कहते हैं, “किस्मत का मतलब है वे कष्ट और वंचनाएं जिन्हें झेलने में आप नहीं हिचकिचाएं, वे लंबी रातें जिनमें आप काम करते रहें। किस्मत का अर्थ है वे अपॉइंटमेंट्स जिन्हें आपने हमेशा निभाया, वे ट्रेनें जो आपने बिना चूके पकड़ीं।” अक्सर हम जिन रेखाओं को देखते हैं, उनमें से बहुत कम रेखाएं ही सीधी होती हैं। समानांतर और सीधी रेखाएं बहुत कम लक्ष्य तक जाती हैं। उनका कोई अंत नहीं होता। जब हम सड़क पर चलते हैं तो गंतव्य तक पहुँचने का मार्ग आँड़ा-टेढ़ा ही होता है। मार्ग में अनेक मोड़ आते हैं। सड़क पर सीधा-सीधा चलने से आप अपने गंतव्य तक नहीं पहुँच सकते।

ईसीजी से सभी परिचित हैं। यह टेस्ट हृदय की इलेक्ट्रिक गतिविधियों को दर्ज करता है। ईसीजी में यदि स्क्रीन पर सीधी रेखा आती है तो इसका अर्थ होता है कि व्यक्ति जीवित नहीं है। प्रगति की रेखा भी कई मोड़ों से होकर गुजरती है, अर्थात् प्रगति के लिए व्यक्ति को अनेक चुनौतियों एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सभी सफल व्यक्तियों की प्रगति रेखा संकरी, टेढ़ी-मेढ़ी

थी, लेकिन उन्होंने प्रयास नहीं छोड़े। जो व्यक्ति प्रयास करना नहीं छोड़ता, निरंतर लगा रहता है, उसके सामने बड़े से बड़ा व्यक्ति भी हार मान लेता है और उसकी मेहनत के आगे श्रद्धा से नत हो जाता है।

बिहार में पले-बढ़े बिधान चंद्र राय पढ़ने में मेधावी थे। उन्हें कोलकाता के मेडिकल कॉलेज में प्रवेश मिल गया। पिता साल भर कुछ रुपये भेजते रहे, लेकिन आर्थिक अभावों के कारण धीरे-धीरे रुपये आने कम और फिर बंद हो गये। किसी तरह छात्रवृत्ति का इंतजाम हुआ तो बिधान चंद्र राय ने तय किया कि पढ़ने में कभी उन्हें नहीं रहना है। कोलकाता मेडिकल कॉलेज के डिसेक्शन हॉल में एक शिलालेख पर लिखा था, “तुम्हें जो भी करने को मिले, अपनी पूरी शक्ति से करना।” बिधान चंद्र बार-बार इस उद्धरण को पढ़ते और इस पर अमल भी करते। आखिरकार उन्होंने मेडिकल की पढ़ाई पूरी की। अब उनकी तमन्ना इंग्लैंड के सबसे अच्छे मेडिकल कॉलेज में पढ़ने की थी। वे वहाँ गये तो सेंट बाथोलोम्यूज हॉस्पिटल के डीन डॉक्टर उन्हें देखते ही व्यंग्य से बोले, “एक तो एशियाई, उसमें भी भारतीय और ऊपर से बंगाली। पढ़ाई छोड़ो और किसी अस्पताल में काम करो।” बिधान अलग मिट्टी के बने थे। वे जानते थे कि सफल होने के लिए मुश्किलों को





उपाधि सौंपते हुए डीन की आँखें नम हो गयीं और बिधान चंद्र राय को बधाई देते हुए वे बोले, "जब आप मेरे पास पहली बार आये, उस समय आपको इस संस्थान में प्रवेश नहीं देने के अपने आचरण पर मुझे वास्तव में बहुत शर्म आ रही है।"

सहजता से पार करना है। उन्होंने इस व्यांग्य की परवाह नहीं की और नियम से डीन के पास जाते रहे। डेढ़ महीने में वे करीब तीस बार डीन के पास गये और यही कहते रहे - "यहाँ से शिक्षा प्राप्त करनी है।" आखिरकार डीन का हृदय पसीज गया। फिर क्या था, बिधान की इच्छा पूरी हो गयी और वे तन-मन से पढ़ाई में जुट गये। तय समय से पहले ही सर्जरी व मेडिसिन की पढ़ाई पूरी करके उन्होंने साबित कर दिया कि भारतीय धुन और दृढ़ निश्चय के पक्के होते हैं। वे सफलता का मार्ग जानते हैं, पहचानते हैं। उपाधि सौंपते हुए डीन की आँखें नम हो गयीं और बिधान चंद्र राय को बधाई देते हुए वे बोले, "जब आप मेरे पास पहली बार आये, उस समय आपको इस संस्थान में प्रवेश नहीं देने के अपने आचरण पर मुझे वास्तव में बहुत शर्म आ रही है। जाइए, आगे जब भी आप किसी छात्र को मेरे पास अपने पत्र के साथ भेजेंगे, तो मेरा वादा है, मैं एक सवाल नहीं करूँगा।"

गांधीजी के चिकित्सक रहे डॉ. बिधान चंद्र राय 14 साल पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री भी रहे। भारत रत्न बिधान चंद्र राय का भारत में चिकित्सा की नींव रखने में महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने अपनी लगन और मेहनत से प्रगति की टेढ़ी-मेढ़ी और मुश्किल रेखा को पार कर इतिहास रच दिया। इतिहास वे ही रचते

हैं जो चुनौतियों को मुश्किल न समझ कर उन्हें अवसर मानते हैं और फिर दृढ़ संकल्प के साथ जुट जाते हैं।

सीधी-सादी रेखा पर चलने का मतलब है एक ही ढर्डे पर चलना। जो लोग लीक से परे चलते हैं, नियति भी बाहें फैलाकर उनका स्वागत करने के लिए तैयार खड़ी होती है। कुछ लोग जीवन में परिवर्तन को बाधा मानते हैं और रुक जाते हैं, जबकि परिवर्तन भी तरक्की की एक सीढ़ी है। अगर आप उस सीढ़ी पर चढ़ने से इनकार कर देंगे तो मंजिल तक कैसे पहुँचेंगे।

अगर जीवन में परिवर्तन न होते तो प्रकृति और प्रगति की रेखाएं बिल्कुल सीधी होतीं। सीधी रेखा पर चलकर सभी लोग एक जैसे बनते। फिर जीवन में विविधता कैसे और कहाँ से आती? प्रगति की रेखा सीधी नहीं है, इसलिए जीवन में संघर्ष है, मार्ग में हर्ष है। खुशी मनाइए कि प्रगति की रेखा आँड़ी-टेढ़ी रेखाओं के रूप में चुनौतियाँ लेकर आती है और कुछ लोगों को मिसाल बनाकर जाती है।

दिल्ली में रहने वाली लेखिका राष्ट्रीय स्तर की एंकर और हिन्दी क्रमेटर हैं। ये भारतेन्दु हरिशंद्र पुरस्कार समेत अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हो चुकी हैं।

...प्रेम की गंगा बहे

■ नीता अवस्थी - कानपुर ■

झूठ से बाहर निकलना चाहिए,
सत्य की ही राह चलना चाहिए।

सोचिए मत गर्त में क्यों आ गिरे,
अब हमें उठकर संभलना चाहिए।

द्रेष का तम छा रहा है हर तरफ,
प्रीत का अब दीप जलना चाहिए।

हर हृदय से प्रेम की गंगा बहे,
दंभ का पर्वत पिघलना चाहिए।

याद तुमको भी जमाना अब करे,
जोश का सूरज न ढलना चाहिए।

हर अधर पर मधु भरी मुस्कान हो,
देश का चेहरा बदलना चाहिए।

एक हैं हम, राष्ट्र अपना एक है,
भाव बस ये एक पलना चाहिए।





सामंजस्य

नंदन पांडित

शिक्षक हैं कि खानसामा। घर पर एक कप चाय का मैटेसिल तक न जान सके, यहाँ व्यंजन बनवाओ। वच्चों को पढ़ाने के स्थान पर कभी यूनिफॉर्म नपवाओ, कभी गोहूँ पिसाओ। कभी गैस सिलेंडर ढोकर लाओ तो कभी वच्चों के जूते लावकर धूमो। शिक्षक नहीं, तेरहखाना रिंच समझ लिया है हमको। वे सहज नहीं हो पा रहे थे।

प्र धानाध्यापक कक्ष में बैठे रोमेश लिखते-लिखते अपने बाल नोच लेते। कभी रजिस्टर से दोनों आँखें मूँदते, कभी दोनों हथेलियों से। वे बेसिक शिक्षा विभाग के इस प्राथमिक विद्यालय में सहायक अध्यापक थे किन्तु एकल अध्यापकीय विद्यालय होने के कारण विद्यालय का प्रभार भी उहीं के पास था। छत में टैंगे पंखे की तरह उनका मस्तिष्क चक्कर काट रहा था। सामने की दीवार पर टैंगे गांधीजी मुस्कुरा रहे थे। "हँसलो बापू, हँसलो।" वे मन ही मन बुद्धिमत्ता, "पर इसमें मेरी ही नहीं, बनियादी शिक्षा के तेरे सपनों की भी हार है।"

कल सुबह से ही उनका मन खिन्न था। बहुत उत्साह से बच्चों को पढ़ाने लगे थे। ग्रीन बोर्ड पर लिखा था - सत्साहस। इतने

में मोबाइल की घंटी बजी - शिक्षा है अनमोल रत्न, पढ़ने का सब करो जतन।

ब्लॉक संसाधन केन्द्र से फोन था, "हेलो, मास्साब! कहाँ हो?"

"निःसंदेह स्कूल में।" उनकी जीवन से अनायास फिसल गया।

"तुम्हारा सांख्यिकी प्रपत्र नहीं जमा है।"

"मैंने एक महीना पहले ही जमा कर दिया था, आपको ही तो दिया था।" "दिया होता तो मिलता न। आपने जमा नहीं किया।...और डेस्क का उपभोग...?"

"जी, युनिफॉर्म उपभोग प्रमाण पत्र मेरे पास है।"

"इसी तरह सांख्यिकी प्रपत्र भी तुम्हारे ही पास होगा। तत्काल

दोनों कागजात लेकर आ जाओ, साहब तुरंत मिलना चाहते हैं।"

"पर स्कूल?"

"जितना कहा जाये, उतना करो।" उधर से चेतावनी के साथ कॉल डिस्कनेक्ट।

कितने परिश्रम से पाठैयार किया था, कितनी शानदार शिक्षण योजना बनायी थी? उन्होंने चॉक रख दिया। पाँच-पाँच कक्षाएँ और अकेला शिक्षक। किसी तरह शिक्षण व्यूह मैनेज करो तो ऑफिस वाले नहीं पढ़ाने देते। रोज कोई न कोई प्रपत्र, कोई न कोई आदेश। मानो हम टीचर नहीं, कलर्क हों। एक ही सूचना दस बार माँगे बिना इन्हें चैन नहीं मिलता।

बच्चे कैसे पढ़ेंगे, जब अध्यापक सारा दिन बाबूगीरी करते फिरेंगे। उनके भविष्य का क्या होगा? कोई नहीं सोचता, सब केवल पैसों का जुगाड़ सोचते हैं। किस तरह अध्यापकों की कमी ढूँढ़कर उनसे कमाई की जाये, बस यही ध्येय है सबका। अधिकारी से लेकर अध्यापक तक बहुतेरे ऐसे पद सृजित हैं जिनका वास्तविक कार्य शैक्षणिक उन्नयन करना है किन्तु वास्तव में वे करते क्या हैं – अपना और अधिकारियों का उन्नयन। बच्चों के साथ कितना बड़ा अन्याय हो रहा है? भाँति-भाँति के चोंचलों के द्वारा उनके भविष्य के साथ कैसे खिलवाड़ किया जाता है?

क्या इसीलिए उन्होंने एम. एससी., एम. ए., बी. एड., टीईटी किया था? क्या इसीलिए बेसिक एजुकेशन को चुना था? नहीं, उनका ध्येय यह तो कदापि न था। उनका उद्देश्य आरम्भिक शिक्षा के द्वारा बच्चों के भविष्य की ऐसी मजबूत नींव तैयार करना था, जिसका सपना बापू ने वर्धा में देखा था। जिस पर ये बच्चे विद्रोह का भावी विशाल प्राचीर निर्मित कर सकें और आगे चलकर स्वयं में, परिवार में, समाज और देश में उन्नति व खुशहाली ला सकें। क्या ऐसे ही रोज-रोज कागजी आँकड़ेबाजी करते रहने से भारत में ज्ञान का भानु दुबारा उदय होगा?

न, वे छुट्टी से पहले नहीं जाएंगे, चाहे मुख्यमंत्री स्वयं बुलाते हों।

"साहब, साहब! ऊ चलके किचन मा देखौ!" बूढ़ी रसोइया ने उन्हें झकझोरा।

"क..क..क्या हुआ?" वे जैसे तंद्रा से जगे हों।

"चलो तो!"

कौन-सी बात हो गयी? इतनी गोपनीय कि यहाँ नहीं बता सकती। वे क्रोधित कम, अधिक सशक्ति-से उसके पीछे चल दिये। आशंका विजयी हुई। बच्चों को पिलाने के लिए आया दूध फट चुका था। वे पूछे, इससे पूर्व ही तीनों रसोइया बोल पड़ीं, "दूधिया ने बासी या मिलावटी दूध दिया था।"

उनका माथा फिर गया, क्रोध सातवें आसमान पर चढ़कर बोल उठा- "तो क्या मेरे सिर पर डालना है? वहीं नहीं बता सकती थी?"

"ऊ का है साहब? आप नहीं मानते। तो मैंने सोचा...।"

"चुप कर!" वे आपा खो चुके होते, उससे पहले ही उसका चेहरा दिख गया। अचानक सारा क्रोध काफूर, वे ठण्डे पड़ गये। यह वहीं रसोइया है जिसके चलते वे सर्पेंड होते-होते बचे थे।

रसोइया चयन की प्रक्रिया गतिमान थी। चार आवेदन आये थे। विद्यालय में नामांकन के अनुसार तीन ही पद रिक्त थे। सुखना के परिवार का कोई बच्चा विद्यालय में नहीं पढ़ता था, नियमानुसार उसका चयन नहीं हो सकता था। उन्होंने शेष तीनों रसोइयों के चयन का प्रस्ताव तैयार कर ग्राम प्रधान के हस्ताक्षर के लिए प्रेषित कर दिया।

प्रधान पति अपनी कैंडिडेट का प्रस्ताव न देखकर भड़क गये। एक रसोइया न चयनित करा सकें! लानत है ऐसी प्रधानी पर, उनका घोर अपमान था। सुखना उनके चरवाहे की पत्नी थी। घर से ही वे गरियाते हुए अपने गुर्गों के साथ विद्यालय में आ धमके। 'खटाक-खटाक' की समवेत ध्वनि के साथ पाँच-सात मोटरसाइकिलों के स्टैंड खुल गये। बच्चे आशंकित से उधर देखने लगे।

रोमेश आगे बढ़कर कुछ पूछे, कुछ समझें, उससे पहले ही बला की शीघ्रता से प्रधान पति ने उनका कॉलर पकड़ लिया। उसने आव देखा न ताव, धड़ाधड़ गालियों की बौछार शुरू कर दी, "ऐ मास्टर! तुझे नौकरी नहीं करनी है का?"

"प्रधान जी, कॉलर छोड़कर शालीनता से बात करिए।" अपने बच्चों के सामने वे झोंप गये थे, फिर भी शालीन रहे।

प्रधान पति ने कॉलर तो छोड़ दी किन्तु वाणी की रौद्रता बढ़ती गयी- "बहुत चर्बी चढ़ गयी है तुझे?"

"बात क्या है?"

"ऐ मास्टर! हमको ललू समझा है का?"

"कुछ बताओगे भी?" उन्होंने तनिक रोष से पूछा।

"तूने सुखना का चयन क्यों नहीं किया?"

"उसका बच्चा नहीं पढ़ता।"

"बच्चा पढ़े, न पढ़े, हम प्रधान हैं। मेरा कहा चलेगा कि तेरा?"

"प्रधानजी, हम नियमों में बैधे हैं।" उन्होंने विवशता जतायी।

"ऐ हरवा! रजिस्टर ला रे! हम सारी कार्यवाही फाड़ देते हैं। फिर करे यह चयन?" वे रोकते रहे और वे लोग कार्यवाही रजिस्टर सहित अन्य पंजिकाएँ फाड़कर चले गये। उन्होंने सारी सूचना अपने उच्चाधिकारियों को दी। सबने सामंजस्य बनाये रखने का पाठ पढ़ाया।

प्रधान पति द्वारा किया गया अपमान उन्हें बेचैन कर दे रहा था। शिक्षक संघ के पदाधिकारियों के साथ फटे हुए रिकार्ड लेकर वे थाने पहुँच गये। पहले तो दारोगा ने एफआईआर लिखने से इनकार कर दिया किन्तु संघ की बारम्बार धमकी पर सूचना रिपोर्ट दर्ज की। रोमेश लुटे-हरे से घर लौट आये।

प्रधान पति दांवपेच का शातिर खिलाड़ी था। एफआईआर की सूचना उसे मिल गयी थी। उसने पैतरा बदला। सुखना को लेकर



वह थाने पहुँच गया। काउंटर एफआईआर दर्ज हुई - रोमेश ने नौकरी के नाम पर सुखना रसोइया के शीलभांग का प्रयास किया।

रात का किशोरवय भी न बीता था, रोमेश अनमने-से चौके में बैठ खाना खाने जा रहे थे। तभी दो कांस्टेबल दरवाजे पर आ धमके और आरोप की प्रति दिखाकर उन्हें जीप में लाद थाने ले गये। उनके सहित परिवार व गाँव वाले हैरान देखते रह गये। उनकी सशर्त रिहाई हुई। दुखिया रोना चाहे तो रो भी न पाये। दोनों पक्षों ने सुलहनामा लगाया। अगले दिन से सुखना स्कूल की चीफ रसोइया थी।

वे किंकर्तव्यविमूढ़ बस इतना कह सके, "बच्चों को मत देना। दूधदूर फेंक दो।"

शिक्षक हैं कि खानसामा। घर पर एक कप चाय का मैटेरियल तक न जान सके, यहाँ व्यंजन बनवाओ। स्कूल नहीं, पूरा होटल बना दिया है एयर कंडीशन में बैठकर नीति-नियंत्रणों ने। कितनी कठिनाई से अभिभावकों को समझा-बुझाकर बच्चों को विद्यालय बुलाओ और पढ़ाने के स्थान पर कभी यूनिफॉर्म न पवाओ, कभी गेहूँ पिसाओ। कभी गैस सिलेंडर ढोकर लाओ तो कभी बच्चों के जूते लादकर धूमों। शिक्षक नहीं, तेरहखाना रिंच समझ लिया है हमको। वे सहज नहीं हो पारहे थे।

"और मास्टर! मजे हैं?" घूमने निकले गाँव के दो-तीन निठलों में से एक ने आत्मीयता जतायी। मन मारकर चेहरे पर छद्म मुस्कान लाते हुए उन्होंने सहमति में सिर हिला दिया। यह उनके कुशलक्षेम की जिज्ञासा न थी, अपितु उन पर व्यंग्य था। वे बछूबी समझते हैं। तीनों तथाकथित शिक्षित बेरोजगार थे। उनकी नौकरी से जलते थे। ये ही क्यों? सारे लोग ही जलते हैं। बैंक में जाओ तो बैंकवाले, कार्यालय जाओ तो बाबू। निर्धारणकर्ता, नियोक्ता से लेकर जिले का कसान व मजिस्ट्रेट भी अध्यापकों से जलता है। सबको लगता है अध्यापक फोकट की तनखाह लेता है। सबको दिखते हैं अध्यापक के छः घंटे। सब भूल जाते हैं कि अध्यापक शिक्षक है, कर्मचारी नहीं। उसे बच्चों के मरिष्टक पर कार्य करना होता है। एक शिक्षक को बच्चों के दिमाग की कोरी क्यारी में ज्ञान का पौधा रोपित करना होता है। सारे शोध बतलाते हैं कि कोई भी मन लगातार चार-पाँच घंटों से अधिक सक्रिय नहीं रह सकता, ये तो फिर भी बच्चे हैं।

लोग भूल जाते हैं कि छः घंटा पढ़ाने के लिए एक शिक्षक को कम से कम दो घंटे तैयारी करनी होती है। अपने ज्ञान को बच्चों के स्तर के अनुकूल व सरस बनाना पड़ता है। नित नये-नये ज्ञान से स्वयं को अपडेट करना होता है। गाँव का सबसे गैर जिम्मेदार पियकड़, जिसको अपने बच्चे के फटे नेकर तक की फिक्र नहीं, वह भी उपदेश सुना जाता है - "मास्टर, तनिक मोबाइल से कम बतियाव!" बीमार माँ-बाप का चेहरा सामने न होता तो वे नौकरी छोड़ देते।

काफी मंथन के पश्चात् वे जैसे-तैसे कक्षा में गये। बच्चों की संख्या न्यून थी। उन्होंने चार-पाँच होशियार छात्रों एवं रसोइया को

कक्षा व स्कूल सौंप दिया और स्वयं अनुपस्थित छात्र-छात्राओं के अभिभावकों से सम्पर्क करने उनके घर चले गये। सरकारी स्कूलों में आने वाले अधिकांश बच्चों के अभिभावक अति निर्धन श्रेणी के होते हैं। वे अपने कार्यों में बच्चों से मदद लेकर गृहस्थी चलाते हैं। घंटों मजरों की खाक छानने के बाद एक दर्जन बच्चे मिले, जिन्हें जल्द आने को कहकर वे स्वयं विद्यालय चले आये।

वहाँ सफेद बोलेरो खड़ी थी। उस पर 'उत्तर प्रदेश सरकार' लिखा देखकर वे कुछ विचलित-से हो गये। साहस बटोरकर सहमे कदमों से अपने कक्ष में घुसे। सामने कुर्सी पर खण्ड शिक्षाधिकारी महोदय थे। उन्होंने अभिवादन किया तो अधिकारी ने बदले में सवाल दाग दिया- "इतने टाइम विद्यालय आते हो मास्टर साहब?"

"न... नहीं सर। विद्यालय समय पर ही आया था, आज बच्चे कम थे तो उन्हीं को बुलाने गया था। आप चाहें तो उपस्थिति पंजिका चेक कर सकते हैं।" उन्होंने सफाई पेश की।

"फर्जी नामांकन होगा तो बच्चे कैसे आएंगे?"

वे चुप रहे। अधिकारी महोदय ने शिकायतें गिनायीं - "तुम्हारी काफी शिकायतें प्राप्त हो रही हैं, जो भी सूचनाएं माँगी जाती हैं, उन्हें न समय से पूरा करते हो और न समय पर कार्यालय पहुँचाते हो?"

"न... नहीं सर।" हक्काते हुए उन्होंने कुछ रुपये रसोइया को देकर अधिकारी महोदय के लिए जलपान लाने को भेजा।

"मास्टर साहब, इससे काम नहीं चलेगा। मैनेज करना सीखो। हमसे सामंजस्य बिठाना सीखो। तुम सबको बचाने के लिए ऊपर अधिकारियों का मुँह भी बंद करना पड़ता है।" अधिकारी महोदय ने इशारा किया।

"सर, सामंजस्य तो बिठाता हूँ। प्रधान से भी मैनेज कर लिया। आप तो सब जानते हो ही हैं।"

उनकी नासमझी पर साहब के साथ आया शख्स, जो स्वयं एक शिक्षक था, से न रहा गया। वह खीसें निपोरकर बोला- "अरे, मास्टर! पाँच साल हो गये सर्विस में आये, मैनेज करना भी नहीं जानते। कुछ नोट-सोट बढ़ाओ, ऐसे थोड़े सामंजस्य बनता है।" उसने तर्जनी पर अँगूठे को रगड़ते हुए कहा।

"सर, पैसा कहाँ से दूँ?"

"यह मैं नहीं जानता। सरकार आपको वेतन देती है।" कहकर सहयोगी सहित खण्ड शिक्षाधिकारी उठ खड़े हुए।

लाचार रोमेश ने काँपते हाथों से दो हजार रुपये अधिकारी महोदय की ओर बढ़ा दिये। वह दो डग पीछे हट गये। सहयोगी बोला- "क्या कर रहे हो? अधिकारी को रिश्वत देते हो? लाओ मुझे दो।"

उन्होंने रुपये बढ़ा दिये। सहयोगी और अधिकारी में कानाफूसी हुई। सहयोगी ने रुपये फेंक दिये। काफी मान-मनौव्वल पर पाँच हजार रुपये में उनकी जान छूटी।

गाड़ी बढ़ गयी। उसके साइलेंसर से निकले धुएं के छल्ले के साथ





उनका दिमाग भी घूम गया। उन्होंने ऑन दि स्पॉट, एट दि मोमेंट डिसीजन लिया। अब और इस विभाग में नहीं घुटना है। अपनी आत्मा नहीं मारनी है। सम्मान खोकर धन नहीं कमाना है।

हेडमास्टर रूम में जाकर उन्होंने एक सादे कागज पर कुछ लिखा और फिर बाहर आकर स्वयं असेम्बली की बेल बजाने लगे। घंटी सुनते ही कुछ हर्षित कुछ विस्मित से बच्चे प्रार्थना स्थल पर इकट्ठे होने लगे। अधिकारी का दौरा सुनकर आसपास के एकाध अभिभावक भी आ गये थे। रुँधे गले से उन्होंने बोलना शुरू किया- "बच्चो! मुझे क्षमा करना।" सभी बच्चे व गर्जियन चौकन्ने हो गये।

"मैं तुम लोगों के साथ पूरा न्याय नहीं कर पाया। न्याय मैं अपनी आत्मा के साथ भी नहीं कर पाया। अध्यापक पद की गरिमा की रक्षान कर सका। अस्तु, मैं अभी से यह विद्यालय और नौकरी छोड़ रहा हूँ।" बोलते-बोलते उनकी आँखें पनिया गयीं।

पत्ते हिलने बंद हो गये। काले बादलों के समूह ने सूरज को कैद कर लिया। क्षण भर में पूरे विद्यालय परिसर में रुदन व विषाद छा गया। छात्र-छात्राओं की मूक आँखों से याचना बरस रही थी। साहस बटोरकर कुछ बच्चों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया। आँखों में होड़ छिड़ गयी, कौन अधिक अश्रु निकालेगा। बच्चे एक साथ रोते हुए बोल पड़े- "सर जी, आप न जाओ। हम आपको जाने न देंगे।"

रोमेश के मुख से बोल न फूट रहे थे, बड़ी कठिनाई से बोल पाये- "नहीं बच्चो! मैं अध्यापक के योग्य नहीं हूँ। मैं कभी आप सबको जी भर पढ़ा न पाया।"

बच्चे और जोर से रोने लगे। वे भी उतने ही रोते जा रहे थे- "मुझे और पापी न बनाओ, जाने दो।"

खबर पूरे गाँव में जंगल की आग की तरह फैल गयी। अनेक

अभिभावक अपना काम-धाम छोड़कर स्कूल में आ गये। उन्होंने उनके सामने हाथ जोड़ दिये- "हम सब आपकी इज्जत नहीं कर सके क्योंकि हम जाहिल थे, मगर आप तो पढ़े-लिखे हैं। हमारे कर्मों की सजा इन नन्हे-मुन्हे बच्चों को न दो।"

"मास्टर साहब, आपको दूसरी नौकरी मिल जाएगी लेकिन हमारे बच्चे अज्ञानी रह जाएंगे। इनका जीवन स्याह हो जाएगा।"

"पाँच साल में ही हमारे बच्चों का चाल-चलन बदल गया। ये ढंग से उठना-बैठना और पढ़ना-लिखना सीख लिये।"

"आपके बाद ऐसा गुरु न मिलेगा। आपको अपने बच्चों की कसमा।"

कई जुड़े हुए हाथ एक साथ हवा में लहरा उठे।

उन्होंने बड़ी विनम्रता से हाथ जोड़कर कहा- "मुझे मत रोको। मैं आप सबके स्नेह व सम्मान का ऋणी हूँ। परन्तु..."

"परन्तु-वरन्तु कुछ नहीं। हम आपको यहाँ से जाने न देंगे।" चारों ओर अभेद्य दीवार बनाये भीड़ ने दोहराया।

वे दुविधा में पड़ गये। कम आँखों में ईर्षा थी, प्रेम अधिक आँखों में था। मुट्ठी भर अपमान की तुलना में सम्मान कुंतलों में था। प्रकाश तिमिर से जीत रहा था। एक नहीं बच्ची उनका पैट खींचकर भीगी आँखों से तुतलाकर बोली- "थलजी, मत दाओ!"

उनका हृदय लरज गया। कंठ भर आया। वेगवती भावनाएँ वे न रोक सके। उस लड़की को उठाकर चूम लिया। अगले पल लड़की को नीचे उतारकर उनका हाथ जेब के अंदर रखा और चिन्दी-चिन्दी कागज के टुकड़े हवा में लहराने लगे।

गोण्डा निवासी लेखक बेसिक शिक्षा के विद्यालय में अध्यापन के साथ ही साहित्य साधना में संलग्न हैं। विभिन्न विधाओं में इनकी कई कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं।



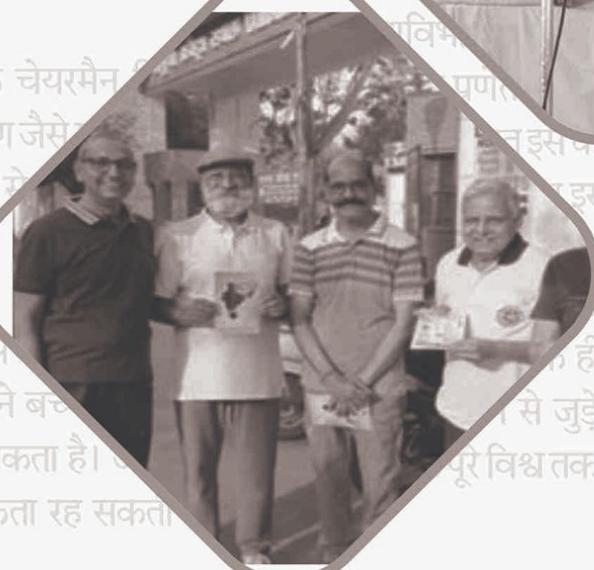
भारती सोसायटी की ओर से समाजी अभिशाप से मुक्त कराने के लिए इन के तहत 19 दिसम्बर को बॉम्बे मातुश्री सभागार में 'एलीवेट : हाई' कार्यक्रम का आयोजन किया

मणुक्रत अनुशास्ता आचार्य श्री
पाथेय प्रदान करते हुए कहा था-
दुःख भी है। दुःख से आदमी को
मिलती है। जीवन में कष्ट, कठिनाइ
मिलता है, कठिनाइयों से पार पाने का
और इससे वह मजबूत बनता है।
क, कभी मानसिक दुःख होता है।
क मूल में राग-द्वेष ही है।
न्मूलन कर दिया जाए।

अप्रत्यक्ष समाचार

अप्रूपत समावार

बाएमसी के म्यूनिसिपल कमिशनर डा. इकबाल सिंह चहल ने कहा कि मुंबई को ड्रग्स एडिक्शन से मुक्त कराने की दिशा में बीएमसी काम कर रही है। अणुव्रत विश्वारती के साथ जुड़कर हम इस मुहिम को और गतिहाँस उन्होंने कहा कि माता-पिता बच्चों के बाल मॉडल होते हैं। माता-पिता यदि अपने बच्चों को रोल मॉडल के रूप में प्र



प्रसिद्ध अभिनेता सुनील शे
डीन व न्यूरो फिजिशियन डॉ.
एमएमआरडीए के कमिशनर संजय
भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक
डॉ. अभिजीतकुमार, मुनि जागृत
गोठी ने भी विचार व्यक्त किये।
मुनिश्रीकुमारश्रमणने किया।



आचार्यश्री महाश्रमण
दीक्षा कल्याण महोत्सव



आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव

के उपलक्ष में

अनुव्रत विश्व भारती सोसायटी
द्वारा

हार्दिक अभिवंदना

अनुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में
आचार्य श्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव
के उपलक्ष में
अनुव्रत समितियों एवं मंचों द्वारा आयोजित
अनुशास्ता अभिवंदना समारोह
की रिपोर्ट आगामी अंक में





आचार्य श्री का दीक्षा कल्याण महोत्सव

जन्म से अजन्म की दिशा में आगे बढ़ने का हो प्रयास : आचार्य महाश्रमण

महाराष्ट्र के जालना में आयोजित समारोह में
देशभर से पहुँचे श्रद्धालु

जालना। अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण की दीक्षा के 50वें वर्ष का समापन समारोह 17 मई से 22 मई तक आयोजित किया गया। इस बीच 17 मई को आचार्यप्रवर का जन्म दिवस तथा 18 मई को आचार्य पदारोहण दिवस भी आयोजित किया गया। इस दौरान देशभर से पहुँचे श्रावक-श्राविकाओं ने आचार्यप्रवर को अभिवंदना स्वरूप आध्यात्मिक उपहार अर्पित करते हुए विभिन्न संकल्प ग्रहण किये।

आचार्यश्री महाश्रमणजी का 63वां जन्मोत्सव 17 मई को महाराष्ट्र के जालना की धरती पर नव्य-भव्य रूप में समायोजित हुआ। इस अवसर पर जनमेदिनी व चतुर्विध धर्मसंघ को पावन संबोध प्रदान करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा कि मानव जीवन में अध्यात्म की उत्कृष्ट साधना के द्वारा परम पद मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है। मानव जीवन जो हमें प्राप्त हुआ है, उसमें कुछ अच्छा करने का प्रयास होना चाहिए। जीवन में आदमी को अच्छा

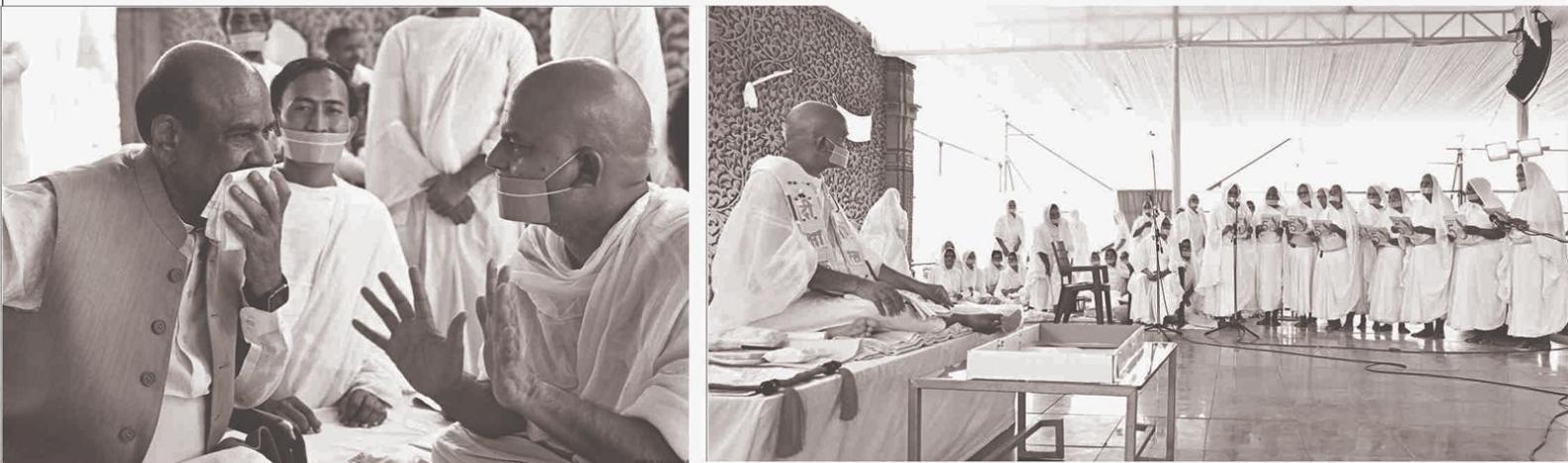
पुरुषार्थ करने का प्रयास करना चाहिए। भाग्य भरोसे नहीं, निरंतर कुछ करने का प्रयास होना चाहिए। अच्छी राह मिले, भीतर में चाह और भीतर में उत्साह रहे तो आदमी अपने जीवन में कुछ प्राप्त भी कर सकता है। जन्म से अजन्म की ओर आगे बढ़ने का प्रयास करें, यह हम सभी के लिए श्रेयस्कर हो सकता है।

समारोह के दूसरे दिन 18 मई को आचार्यश्री महाश्रमणजी के 15वें पट्टोत्सव समारोह का आयोजन किया गया। आचार्यश्री मंच पर पधारे तो पूरा वातावरण जयघोष से गुजायमान हो उठा।

साध्वीप्रमुखा विश्वतिविभाजी ने कहा कि पूज्यप्रवर के सफल नेतृत्व में धर्मसंघ निरंतर विकास कर रहा है। साध्वीप्रमुखाजी ने आचार्यश्री को नयी पूंजणी उपहत की।

मुख्यमन्त्री महावीरकुमारजी ने कहा कि आज के दिन भगवान महावीर को परम ज्ञान की प्राप्ति हुई थी और आज के ही दिन आचार्यप्रवर तेरापंथ के ग्यारहवें अधिशास्ता के रूप में विधिवत पट्टासीन हुए थे। आप अपने पदाभिषेक के इन चौदह वर्षों में वीतरागता की मनोज्ञ मूरत बन गए हैं।





आचार्य श्री महाश्रमण ने अपने पावन उद्बोधन में कहा कि आज का दिन ज्ञान प्राप्ति, वीतरागता प्राप्ति, शक्ति सम्पन्न व सर्वदर्शी होने का दिन है। मुझे संन्यास लिये हुए भी पचास वर्ष पूर्ण होने वाले हैं। आज मुझे दायित्व मिले चौदह वर्ष पूर्ण हो गये हैं। आगे कालमान बढ़ रहा है। हम अध्यात्म की साधना को पुष्ट बनाने का प्रयास करते रहें।

गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने कहा कि आचार्य श्री ने बहुत छोटी आयु में जीवन के परम तत्व को समझते हुए इस भौतिक संसार से विरक्ति का मार्ग चुना और मानवता के कल्याण के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। हम महान ऋषियों की संतान हैं। हमारी परंपरा वैदिक, अध्यात्मवादी और विश्वकल्याण की सोच वाली है। हमें आचार्यजी जैसे संतों के निर्देशों व प्रेरणाओं पर चलने का प्रयास करना चाहिए। पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी अपने साधु-साधियों व आप सभी अनुयायियों के द्वारा अभियान चला रहे हैं। निःसंदेह यह मानवता का महान कार्य है। ऐसे लोग हो जाएं तो यह धरती ही स्वर्ग हो जाएगी। व्यवस्था समिति जालना व स्थानीय सभा-संस्थाओं द्वारा राज्यपाल महोदय को सम्मानित किया गया।

समारोह के तीसरे दिन 19 मई को साधु-साधियों तथा श्रावक समाज ने वक्तव्य, गीत, काव्य पाठ द्वारा अपने गुरु की वर्धापना की। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में उद्बोधन प्रदान करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि पाँच महाव्रत, तीन समितियों व तीन गुप्तियों को लेकर आचार्य छत्तीस गुणों के धारक होते हैं। ये पुष्ट बनने का मतलब उनकी आचार संपदा अच्छी है। मोक्ष की दृष्टि से आचार-संपदा का सर्वाधिक महत्व होता है। आचार संपदा का अच्छा पालन करने वाले आचार्य का तीन से पाँच भव में मोक्ष जाना निश्चित है। यदि आचार पुष्ट हो तो मोक्ष जाना निश्चित है। वाणीसंपदा, श्रुतसंपदा, शरीर संपदा, शिष्य-संपदा सब कुछ का योग आचार्य की आचार संपदा के साथ हो तो सोने में सुहागा बन सकता है।

दीक्षा कल्याण महोत्सव के चौथे दिन 20 मई को आचार्य श्री महाश्रमण ने उपस्थित चतुर्विध धर्मसंघ व विशाल जनमेदिनी को पावन प्रतिबोध प्रदान करते हुए कहा कि साधु जीवन प्राप्त होना बड़े भाग्य की बात होती है। अनन्त जन्मों के बाद तो दुर्लभ मानव जीवन प्राप्त होता है और यदि उसमें भी साधुत्व की प्राप्ति हो जाये तो बहुत बड़ी बात होती है। साधुत्व को अंतिम श्वास तक सुरक्षित रखने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में कैसी भी परिस्थिति आये, कभी शरीर भी छूट जाये, किन्तु साधुत्व न छूटे, ऐसा प्रयास करना चाहिए। साधु को सभी स्थितियों, परिस्थितियों में समता रखने का प्रयास करना चाहिए। साधु समतामूर्ति, अहिंसामूर्ति, दयामूर्ति, क्षमामूर्ति व शांतिमूर्ति हो। गृहस्थों में समता भाव व शांति का विकास होता रहे। उनके जीवन में सद्भावना, कार्य में नैतिकता और जीवन पर्यन्त नशामुक्तता रहे। जीवन अच्छा रहे, गृहस्थ जीवन में भी चित्त समाधिरहे, धर्म के पथ पर चलते रहें।

महोत्सव के पाँचवें दिन 21 मई को नगर भ्रमण के उपरान्त प्रवास स्थल में पथरे आचार्य श्री महाश्रमण ने पावन संबोध प्रदान करते हुए कहा कि आत्मवाद से ही जुड़ा हुआ कर्मवाद भी है। सबके अपने-अपने कर्म हैं। सभी प्राणी अपने किये गये कर्मों का फल ही भोगते हैं। आदमी कर्मवाद को अच्छे से समझ से तो उसे पापों से बचने की प्रेरणा भी प्राप्त हो सकती है। आदमी साधुत्व की प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ सकता है। किसी घटना से अभिप्रेरित होकर भी आदमी संयम के पथ पर चलने को तत्पर हो सकता है। जीवन में दीक्षा लेना तो बड़ी बात होती ही है, संयम का जीवन प्राप्त कर उसे अंतिम श्वास तक निभा देना और भी बड़ी बात होती है। संयम का खण्डन न हो, ऐसा प्रयास करना चाहिए।

वैशाख शुक्ल चतुर्दशी, 22 मई, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण के 50वें दीक्षा कल्याण महोत्सव वर्ष की सम्पन्नता का शिखर दिवस। इस अवसर पर आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि संन्यास जीवन की आधी शताब्दी सम्पन्न हुई है और शताब्दी का उत्तरार्द्ध शुरू हुआ है। आचार्यश्री तुलसी के समय दीक्षा हुई और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के सन्निध्य में रहने, साधना करने, पढ़ने का अवसर मिला। गुरुओं का चिंतन, भाग्य का योग हुआ, जिस संघ में मैं बाल संत के रूप में दीक्षित हुआ था, उस धर्मसंघ का सर्वोच्च नेतृत्व मुझे सौंपा गया। संन्यास व साधुता इतनी बड़ी चीज है कि उसके सामने भौतिक सुविधाएं नाकुछ के समान होती हैं। आज युवा दिवस भी है। सभी खूब अच्छा विकास का कार्य करते रहें। आचार्यश्री ने समस्त मानव जाति के लिए सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति की प्रेरणा प्रदान की तथा चतुर्विध धर्मसंघ को शुभाशीष प्रदान किया।

इससे पहले साध्वीवर्याश्री सम्बुद्धयशा, मुख्यमुनि महावीरकुमार व साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा ने आचार्यश्री के 'संवाद महाश्रमण भगवान से' कार्यक्रम की आध्यात्मिक व रोचक प्रस्तुति दी तो पूरा वातावरण आध्यात्मिकता से आप्लावित हो उठा। साध्वी समाज की ओर रजोहरण, प्रमार्जनी व दीक्षा कल्याण महोत्सव का एलवान भी गुरुचरणों में समर्पित किया गया जिसे मुख्यमुनिश्री ने गुरुदेव को धारण करवाया। साध्वीवृद्ध ने मंगल मंत्रों का संगान किया।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने कहा कि मानव के कल्याण के लिए समर्पित आचार्य श्री महाश्रमण का जीवन दूसरों को जीने की राह दिखाता है। आपने करोड़ों लोगों को नशामुक्ति का संकल्प कराया। आपका कार्य समस्त मानव के कल्याण के लिए है। आपकी यात्रा आने वाले समय में देश व दुनिया में शांति, सद्भावना व नैतिकता का विचार प्रदान करती रहेगी। जालना के सांसद व रेलवे एवं कोयला राज्यमंत्री रावसाहेब दानवे ने कहा कि हमारी इस पवित्र भूमि पर आचार्य श्री महाश्रमण का शुभागमन हम जालनावासियों के लिए परम सौभाग्य की बात है। आचार्य श्री महाश्रमण के मंगलपाठ से छह दिवसीय दीक्षा कल्याण महोत्सव सम्पन्न हुआ।



अणुव्रत समाचार



अणुव्रत चुनावशुद्धि अभियान

लोकसभा चुनाव में मतदाताओं को किया जागरूक

■■ संयोजक राजकरण दफ्तरी की रिपोर्ट ■■

अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में लोकसभा चुनाव के दौरान चुनाव शुद्धि अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत देश भर की अणुव्रत समितियों और अणुव्रत मंचों के कार्यकर्ता सभाओं और कार्यक्रमों के साथ ही नुकड़ नाटक, परिचर्चा, रैली, बैनर, पोस्टर, पैम्फलेट के माध्यम से योग्य प्रत्याशियों को चुनने की अपील कर रहे हैं।

► गाजियाबाद अणुव्रत समिति द्वारा चुनावशुद्धि अभियान के तहत 21 अप्रैल को नुकड़ नाटक का मंचन किया गया। इस अवसर पर अणुविभा अध्यक्ष अविनाश नाहर, महामंत्री भीखम सुराणा, संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया, सूर्यनगर निगम पार्षद कृष्ण शशि खेमका आदि ने चुनावशुद्धि अभियान पर विचार रखे। इससे पहले समिति की अध्यक्ष कुसुम सुराणा ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ उपाध्यक्ष शरद वार्ष्ण्य ने किया। दीपिका नाहाटा और उनकी टीम द्वारा प्रस्तुत नुकड़ नाटक की प्रस्तुति को सभी ने खूब सराहा। आभार ज्ञापन वीरेन्द्र जैन ने किया।

► अणुव्रत समिति दिल्ली की ओर से 18 मई को यमुना कीड़ा स्थल विवेक विहार में चुनाव शुद्धि एवं मतदान जागरूकता अभियान आयोजित हुआ। अणुविभा के महामंत्री भीखमचंद सुराणा के नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रम में लोगों से अपील की गयी कि आवश्यक रूप से मताधिकार का प्रयोग करके राष्ट्र निर्माण में सहयोगी बनें। इस अवसर पर दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, अणुव्रत समिति दिल्ली के निर्वत्मान अध्यक्ष शांतिलाल पटाकरी, संगठन मंत्री राजीव महनोत, अनु अंशु जैन, प्रेम भंसाली, ईशा बोथरा, पूर्व मंत्री तेरापंथ महिला मंडल दिल्ली व निर्मल जैन की गरिमामयी उपस्थिति रही।

► गुवाहाटी अणुव्रत समिति ने चुनावशुद्धि अभियान के तहत अनोखी पहल करते हुए विभिन्न स्थानों पर 'मेरा एक बोट-राष्ट्र का सही निर्माण' नामक नाटिका का मंचन किया। अवकाश जम्मड़ के निर्देशन में प्रस्तुत नाटिका में लोगों को संदेश दिया गया कि मतदान करें एवं राष्ट्रीय कर्तव्य का निर्वहन करें। साथ ही दूसरों को भी मतदान के लिए प्रेरित करें। नाटिका में अवकाश जम्मड़, प्रचार प्रसार मंत्री सरोज बरड़िया, कार्यकारिणी सदस्य मंजू भंसाली, मीनाक्षी बुच्चा, रजनी पगारिया और उषा सुराणा ने शानदार अभिनय किया। इस दौरान समिति अध्यक्ष बजरंग बैद, निर्वत्मान अध्यक्ष बजरंग डोसी, परामर्शक राजकरण बुच्चा, उपाध्यक्ष नवरत्न गढ़ैया, मंत्री संजय चौरड़िया, सह मंत्री संपत्त

मिश्र तथा कार्यक्रम संयोजक संतोष नौलखा, प्रमोद बैद आदि उपस्थित थे। लक्ष्मीपत घोड़ावत ने बताया कि इसके अलावा समिति ने बैनर एवं पोस्टर के द्वारा भी अभियान का प्रचार-प्रसार किया।

► चिकमंगलूर अणुव्रत समिति की ओर से 22 अप्रैल को तेरापंथ भवन में चुनावशुद्धि अभियान बैनर का अनावरण किया गया। समिति की अध्यक्ष मंजू भंसाली ने लोगों से निवेदन किया कि मताधिकार का सही उपयोग करके राष्ट्रहित में अपना योगदान देना चाहिए। ऐसे उम्मीदवार का चयन करना चाहिए जो राष्ट्रहित व लोकहित में कार्य करे, जो ईमानदार हो, चरित्रवान हो, नशामुक हो, जो जाति-संप्रदाय से बंधा हुआ न हो। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष ताराचंद सेठिया, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष गुणवंती नाहर ने भी विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री भरत बरलोटा ने किया। गौतम आच्छा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इसके बाद स्कूलों, कॉलेजों और दुकानों में चुनावशुद्धि अभियान के पोस्टर लगाये गये। इस दौरान पूर्व अध्यक्ष लालचंद भंसाली, राकेश कावड़िया समेत अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

► धुबड़ी अणुव्रत समिति ने चुनावशुद्धि अभियान के तहत अनेक स्थानों पर मतदाता जागरूकता का कार्य किया। इस दौरान अणुव्रत समिति की अध्यक्ष शाति बरड़िया व मंत्री चंदा तातेड़ अपनी टीम के साथ पहुँचीं तथा लोगों को समझाया कि कैसा प्रत्याशी आपके अमूल्य वोट का अधिकारी होना चाहिए। कार्यकर्ता दिलीप तातेड़ ने छोटे-छोटे गाँवों में जाकर लोगों को बताया कि प्रलोभन में आकर वोट नहीं दें। आपका वोट अमूल्य है, आप सही व्यक्ति को वोट देकर राष्ट्र का सही निर्माण कर सकते हैं।

► फारबिसगंज अणुव्रत समिति की टीम ने एक महीने से भी अधिक समय तक मतदाता जागरूकता कार्यक्रम चलाया। इस दौरान बैनर, परिपत्र, नुकड़ नाटक के माध्यम से मतदाताओं को मतदान के लिए प्रेरित किया गया। सदर रोड स्थित सभी छोटे-बड़े प्रतिष्ठानों में चुनावशुद्धि अभियान के परिपत्र बाँटे गये। इस मौके पर वार्ड पार्षद अशोक फुलसरिया सहित अन्य लोग मौजूद रहे। टीम ने कोठीहाट रोड में महिलाओं को आगे बढ़कर मतदान करने के लिए प्रेरित किया। अणुव्रत समिति की संयोजिका निशा राखेचा ने सदर रोड स्थित बड़ी मस्जिद गली में परिपत्र का वितरण किया।



अणुव्रत समाचार



► अणुव्रत समिति कानपुर के अध्यक्ष टीकमचंद सेठिया ने मर्चेन्ट चैम्बर ॲफ उत्तर प्रदेश सभागार में 6 मई को अखिल भारतीय वैश्य एकता परिषद् द्वारा आयोजित परिचर्चा में भाग लिया और अणुव्रत चुनाव शुद्धि साहित्य गणमान्यजनों को भेंट किया।

► ग्रेटर सूरत अणुव्रत समिति ने सूरत रेलवे स्टेशन परिसर एवं प्लेटफॉर्म पर यात्रियों को प्रिटेंड हैंड बिल वितरण कर लोकसभा चुनाव में मतदान अवश्य करने का अनुरोध किया। सूरत के स्टेशन डायरेक्टर मुकेश कुमार सिंह, स्टेशन अधीक्षक अश्विन कुमार वर्मा ने इस कार्य की सराहना की। कार्यक्रम में रेलवे के मुख्य वाणिज्य निरीक्षक गणेश जादव, आनंद शर्मा, कौशिक पटेल एवं अन्य अधिकारियों व स्टाफ का अच्छा सहयोग रहा। समिति के अध्यक्ष विमल लोढ़ा के निर्देशन में सदस्य दीपक राजगुरु एवं संयोजिका कल्पना बच्छावत ने लोगों को मतदान करने का संकल्प भी करवाया।

ग्रेटर सूरत अणुव्रत समिति ने मतदान जागृति हेतु अणुव्रत द्वारा तथा साइकिल सर्किल पर 5 मई को संसद की थीम पर एक बड़ी रंगोली बनायी एवं सेल्फी प्वाइंट भी लगाया। गुजरात सरकार के गृहमंत्री हर्ष भाई संघवीरैली के साथ यहाँ पधारे तथा समिति की महिलाओं द्वारा बनायी रंगोली का अवलोकन किया तथा इसकी सराहना की। समिति अध्यक्ष विमल लोढ़ा एवं पूर्व अध्यक्ष विजय कांत खटेड़ ने संस्था के खेस द्वारा मंत्री का सम्मान किया।

► अहमदाबाद अणुव्रत समिति की ओर से 23 अप्रैल को चुनावशुद्धि अभियान के बैनर का अनावरण मुनिश्री सुक्रत कुमार एवं शासनश्री साध्वीश्री सरस्वती के सान्निध्य में किया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने नैतिकता के साथ मतदान करने की प्रेरणा दी। शासनश्री साध्वीजी ने फरमाया कि जिस व्यक्ति में विचारों की गहराई हो, आचरण में ऊँचाई हो, वह व्यक्ति सफल और श्रेष्ठ होता है। चुनाव में व्यक्ति नैतिकता, सद्भावना एवं नशामुक्ति इन तीन बातों का विशेष ध्यान रखे। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश धींग, उपाध्यक्ष सुरेंद्र लूनिया, सुरेश बागरेचा, विमल बोरदिया, महेंद्र चोपड़ा, जवेरीलाल संकलेचा, पिस्ता छाजेड़ तथा सभा-संस्था के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

► जोधपुर अणुव्रत समिति की ओर से राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय श्याम सदन सरदारपुरा एवं अन्य कार्यालयों में लोगों को संदेश दिया गया कि आवश्यक रूप से मतदान कर राष्ट्रीय कर्तव्य का निर्वहन करें। इस अवसर पर जयपुर, जोधपुर, उदयपुर संभाग सह राज्य प्रभारी डॉ. सुधा भंसाली, एडवोकेट मुकुल अंगिरस, सेवानिवृत्त शिक्षा अधिकारी अरविंद कुमार व्यास, प्रीति शर्मा, विद्यालय की प्रधानाचार्य डॉ. शीला आसोपा, उप प्रधानाचार्य ओम प्रकाश बिश्नोई, पुलिस सेक्टर प्रभारी अधिकारी नारायण सिंह उपस्थित रहे।

► हावड़ा अणुव्रत समिति द्वारा अग्रवाल महिला मंडल के बीच जाकर उन्हें मतदान करने हेतु संकलिपत कराया गया। समिति की सहमंत्री लीना सिंधी ने अपने वक्तव्य में बताया कि राष्ट्र निर्माण के लिए ज्यादा से ज्यादा मतदान करना चाहिए। अग्रवाल महिला मंडल की अध्यक्ष ने इस अभियान की प्रशंसा की।

► सिलीगुड़ी अणुव्रत समिति ने चुनावशुद्धि अभियान के तहन जन जागरूकता अभियान चलाया। इस दौरान ऑटो रिक्षा तथा अन्य स्थानों पर चुनावशुद्धि अभियान के पोस्टर लगाये गये।

► अणुव्रत समिति इंदौर द्वारा कोठारी कॉलेज इंदौर के तत्त्वावधान में मतदाता जागरूकता अभियान का शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर अणुविभा की संगठन मंत्री साधना कोठारी, अणुव्रत सेवी सुरेश कोठारी, अणुव्रत प्रबक्ता गौतम कोठारी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष मनीष कठोतिया, कोठारी कॉलेज की डायरेक्टर प्रो. मधुलिका शुक्ला, कोठारी कॉलेज की प्राचार्य डॉ. प्रियदर्शिनी अग्निहोत्री उपस्थित रहीं। इस अभियान के अंतर्गत विद्यार्थियों को अणुव्रत संकल्प दिलाने के साथ ही अपने जीवन के प्रथम मतदान के लिए जागरूक किया गया। वहीं कोठारी कॉलेज के छात्रों ने देवी अहिल्या विश्वविद्यालय परिसर में एवं विभिन्न व्यावसायिक स्थानों पर नुककड़ नाटक प्रस्तुत कर लोगों को मतदान के लिए जागरूक किया। विद्यार्थी मित्र संसद व सखी संसद के माध्यम से घर-घर जाकर लोगों से मतदान करने की अपील की गयी।

► झाबुआ अणुव्रत समिति के तत्त्वावधान में मतदाता जागरूकता अभियान कार्यक्रम के अंतर्गत झाबुआ जिला कलेक्टर कार्यालय से आजाद चौक तक रैली निकाली गयी। जिला निर्वाचन पदाधिकारी-नोडल अधिकारी जितेन्द्र चौहान, पुलिस अधीक्षक पदम विलोचन शुक्ला, एडीएम एस. एस. मुजाल्दे, डिटी कलेक्टर रितिका पाटीदार ने हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया। रैली के साथ ही कोठारी कॉलेज, इंदौर के छात्रों द्वारा मतदान जागरूकता के लिए नुककड़ नाटक की भी प्रस्तुति दी गयी। व्यावसायिक स्थानों पर कार्ड के माध्यम से मतदान के लिए आमंत्रण दिया गया तथा जनसंपर्क किया गया। समिति की ओर से झाबुआ कलेक्टर नेहा मीना को अणुव्रत डायरी एवं शॉल भेंट की गयी। रैली में समिति अध्यक्ष पंकज कोठारी, मंत्री पीयूष गांदीया, अभियान के जिला संयोजक महेश सेठिया, प्रदीप पिपाडा, दिलीप जैन, दीपा गांदीया तथा तेरापंथ समाज व अन्य समाजों के प्रतिनिधि शामिल हुए। इस अभियान में विशेष तौर पर इंदौर से अणुव्रत सेवी सुरेश कोठारी, अणुविभा की संगठन मंत्री साधना कोठारी, कोठारी कॉलेज की डायरेक्टर मधुलिका शुक्ला, अंकिता पिपाडा, डॉ. निधि शर्मा उपस्थित रहीं।



अणुव्रत कार्यकर्ताओं का सम्मान



राजसमंद। अणुविभा मुख्यालय पर 25 अप्रैल को अणुव्रत कार्यकर्ता सम्मान समारोह का आयोजन अणुविभा के प्रबंध न्यासी तेजकरण सुराणा के मुख्य आतिथ्य एवं अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर की अध्यक्षता में किया गया। समारोह में डॉ. महेन्द्र कर्णावट, जीतमल कच्छारा, अशोक दूंगरबाल तथा मदन धोका को 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' के अवसर पर किये गये अणुव्रत कार्यकर्ता सम्मान के क्रम में स्मृति चिह्न भेट कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर अविनाश नाहर ने कहा कि अणुव्रत आन्दोलन के 75 वर्षों के गौरवशाली इतिहास में अनेकानेक समर्पित कार्यकर्ताओं ने आचार्य तुलसी के दर्शन 'संयम ही जीवन है' को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया। उन्होंने अणुव्रत के महारथी स्व. देवेन्द्रभाई कर्णावट एवं स्व. मोहनभाई को भी याद किया।

अणुविभा के प्रबंध न्यासी तेजकरण सुराणा ने कहा कि किसी भी बड़े काम में नींव के पथर सबसे महत्वपूर्ण होते हैं। अणुव्रत आन्दोलन को सींचने में भी अनेक समर्पित कार्यकर्ताओं का श्रम है। अणुविभा के निवर्तमान अध्यक्ष संचय जैन ने कहा कि राजसमंद अणुव्रत दर्शन की प्रयोगशाला है। नयी

पीढ़ी में सदसंस्कारों के जागरण में बालोदय जैसे प्रकल्प मील का पथर सिद्ध हो रहे हैं।

कार्यक्रम का संयोजन अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा ने किया। इस अवसर पर अणुविभा के उपाध्यक्ष डॉ. विमल कावड़िया, गणेश कच्छारा, सह मंत्री जगजीवन चौरड़िया, डॉ. सीमा कावड़िया, रमेश माण्डोत आदि उपस्थित थे।

अगस्त अंक का विषय

पर्दिंचर्चा

क्या हैं स्वतंत्रता के असली मायने?

हम हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं। 15 अगस्त 1947 को मिली आजादी का स्मरण कर अपने स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। तिरंगा फहराते हैं, देशभक्ति के गीत गाते हैं और अपनी स्वतंत्रता पर नाज करते हैं। लेकिन, क्या हैं स्वतंत्रता के असली मायने? हम किन मायनों में स्वतंत्र हैं और किन मायनों में परतंत्र? क्या हम एक स्वतंत्र नागरिक की भूमिका बखूबी निभा रहे हैं? आचार्य तुलसी के 'असली आजादी अपनाओ' के आह्वान का हार्द क्या था? क्या 75 वर्ष बाद भी हम असली आजादी हासिल कर पाये हैं?

'अणुव्रत' पत्रिका के अगस्त 2024 अंक में प्रकाशित होने वाली परिचर्चा हेतु इन्हीं सब मुद्दों पर आमंत्रित हैं आपके विचार। रचनात्मक, प्रयोगधर्मी और अनुभवजन्य विचारों को प्रकाशन में प्राथमिकता दी जाएगी। अपने विचार अधिकतम 200 शब्दों में हमें 10 जुलाई 2024 तक 9116634512 पर व्हाट्सएप के माध्यम से भेजें।





अणुविभा मुख्यालय में तीन दिवसीय बालोदय शिविर का आयोजन

■ ■ ■ स्कूल विद ए डिफरेंस के संयोजक डॉ. राकेश तैलंग की रिपोर्ट ■ ■ ■



राजसमंद। अणुविभा मुख्यालय में 9 से 11 मई तक तीन दिवसीय बालोदय शिविर का आयोजन किया गया। इसमें श्री कृष्णा पब्लिक सेकण्डरी स्कूल बदनोर भीलवाड़ा के बच्चों के साथ ही उनके अध्यापक और अभिभावक भी शामिल हुए। अणुव्रत गीत संगान के साथ हुए संवाद में बच्चों और शिक्षक-शिक्षिकाओं ने स्वीकार किया कि छोटे-छोटे संकल्पों से सकारात्मक परिवर्तन लाये जा सकते हैं। अणुविभा की स्कूल विद ए डिफरेंस (स्वाद) प्रायोजना के संयोजक डॉ. राकेश तैलंग ने अणुव्रत गीत की अन्तश्वेतना का विवेचन करते हुए नैतिकता की सुर सरिता में अवगाहन हेतु बच्चों से अणुव्रत आचार संहिता के अनुसार अपनी जीवनशैली बनाने का अनुरोध किया।

शिविर के दौरान व्यक्तित्व निर्माण के प्रयासों की शृंखला में बच्चों के मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य के दो विशेष सत्र संचालित किये गये। योग सत्र में जहाँ जीवन विज्ञान के विविध प्रयोगों के अभ्यास द्वारा बालोदय प्रकल्प की संयोजिका डॉ. सीमा कावड़िया ने बच्चों को स्वास्थ्य के प्रति संचेतित किया, वहाँ चिकित्सक व अणुविभा के उपाध्यक्ष डॉ. विमल कावड़िया ने बच्चों को स्वास्थ्य की रक्षा व चुस्त-दुरुस्त बने रहने हेतु टिप्पणियों को दिये।

यह शिविर बाल केन्द्रित उपागम के साथ बच्चों में अच्छी आदतों और जीवन मूल्यों के विकास के लिए अपनी दैनिक चर्चा को कैसे खूबसूरत बनाएं, इस पर केन्द्रित रहा। इसी दृष्टि से कला सत्र के अंतर्गत क्षेत्र के कलावंत शिक्षा सेवी कमल सांचीहर ने अक्षरों से बनने वाले चित्रों की जानकारी देकर बच्चों की आंतरिक कलागत वृत्ति को प्रेरित किया। डॉ. विनीता पालीवाल ने

बुद्धि कौशल विकास पर बच्चों से रोचक संवाद किये। विद्यालय के संचालक संस्था प्रधान गोविंद सिंह ने बाल संसद कक्ष में उपस्थित विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए संसद की लोकतांत्रिक व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण में भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वे अणुविभा के साथ मिलकर अपने विद्यालयों में ऐसा शिविर आयोजित करना चाहते हैं।

शिविर के दौरान बच्चों ने पुस्तकालय, दीर्घाओं, फिल्म कक्ष सहित समस्त परिसर को जिज्ञासा से देखा। उनके साथ आये अभिभावकों ने अणुविभा को शिक्षा व्यवस्था का सहयोगी घटक बताते हुए भावात्मक शिक्षा के लिए इसे उपयोगी बताया। शिविर समाप्त अवसर पर मुख्य अतिथि गणेश कच्छारा ने अणुविभा के बारे में बताते हुए संस्था के गांधीवादी कर्मयोगी स्व. मोहनभाई को याद किया। शिविर में देवेन्द्र आचार्य, मोनिका बापना, शिवागिनी शकावत, संतोष राठोड़, मनोरमा सोलंकी, मीनाक्षी राणावत, सुमन राठोड़, जानकी रांका, भूमि सोनी आदि का सहयोग रहा।

एक दिवसीय शिविरों का आयोजन

अणुविभा मुख्यालय में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के 30 बालक-बालिकाओं व अध्यापक-अध्यापिकाओं का एक दिवसीय बालोदय शिविर 16 मार्च को आयोजित किया गया। कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रेक्षाध्यान के साथ मुक्त भ्रमण, कक्ष प्रवृत्ति अवलोकन व अन्तर्निहित क्षमताओं की पहचान हेतु संवाद किया गया। संवाद में वरिष्ठ अध्यापक कमलेश रेगर ने बताया कि बालोदय शिविर जीवन में आगे बढ़ने का एक उत्कृष्ट मार्ग है।

प्रगति सीनियर सेकण्डरी स्कूल, एमडी के 24 बालक-बालिकाओं व अध्यापक-अध्यापिकाओं का एक दिवसीय बालोदय शिविर 20 अप्रैल 2024 को अणुविभा में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में बालोदय की राष्ट्रीय संयोजक डॉ. सीमा कावड़िया ने बालोदय कार्यक्रम व उसके कार्यान्वयन की सैद्धान्तिक व व्यावहारिक जानकारी दी तथा प्रेक्षाध्यान का अभ्यास कराया। डॉ. विमल कावड़िया ने बीमारियों के कारण और निवारण पर जानकारी दी। जगदीश बैरवा व प्रतिभा जैन के मार्गदर्शन में दोनों शिविरों के संभागियों ने अणुव्रत दीर्घा, बाल संसद, गुड़ियाघर, भाव जागरण गुफा, चित्त एकाग्रता गुफा, संग्रहालय, विश्वदर्शन दीर्घा का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया।



जीवन विज्ञान प्रशिक्षक प्रशिक्षण

देशभर में 182 जीवन विज्ञान प्रशिक्षकों की टीम हुई तैयार

■ ■ राष्ट्रीय संयोजक रमेश पटावरी की रिपोर्ट ■ ■



अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के जीवन विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित ऑनलाइन जीवन विज्ञान प्रशिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला के सफल प्रशिक्षकों का प्रमाण-पत्र वितरण समारोह 10 मई को ऑनलाइन आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कहा कि जिस निष्ठा, लगान और कर्मठता के साथ जीवन विज्ञान विभाग की पूरी टीम लगी हुई है, वह सराहनीय है। उन्होंने देशभर में 182 जीवन विज्ञान प्रशिक्षकों की नयी टीम तैयार करने के लिए मास्टर ट्रेनर राकेश खटेड़ तथा उनके सहयोगी प्रशिक्षकों को बधाई देते हुए कहा कि अब आपका श्रम मुखरित होता हुआ नजर आ रहा है। उन्होंने प्रमाण-पत्र प्राप्त करने वाले नव-प्रशिक्षित प्रशिक्षकों से कहा कि हम सबको मिलकर देश की भावी पीढ़ी को संस्कारित करते हुए जीवन विज्ञान को जन-जन तक पहुँचाना है।

इस हेतु अणुविभा के नेतृत्व में देश भर में संचालित अणुव्रत समितियां और हजारों अणुव्रती कार्यकर्ताओं का सहयोग आपको प्राप्त होगा। जीवन विज्ञान की पाठ्य-पुस्तकें और अन्य सामग्री नये कलेक्टर में उपलब्ध हैं, जिनका अधिकाधिक उपयोग होना चाहिए। उन्होंने सभी प्रमाण-पत्र प्राप्तकर्ताओं को बधाई दी।

मास्टर ट्रेनर राकेश खटेड़ ने कहा कि आज की भाग-दौड़ भरी जिन्दगी में समय, श्रम और श्रद्धा का नियोजन करना दुर्लभ है परन्तु जब बात जीवन विज्ञान की आती है तो एक अतिरिक्त उत्साह जागृत हो जाता है। जीवन मिलना सौभाग्य की बात है परन्तु जीवन को जनोपयोगी कार्यों में नियोजित करना स्वयं को जीवन का सुदृढ़ आधार प्रदान करते हुए जीवन की सार्थकता प्राप्त करना होता है। उन्होंने प्रमाण-पत्र धारक प्रशिक्षकों को बधाई देते हुए कहा कि अब आप एक प्रज्वलित दीपक हैं और अन्य दीपकों को रोशनी प्रदान करना आपका दायित्व है। जीवन विज्ञान के प्रयोग न केवल विद्यार्थियों के लिए अपितु समाज के प्रत्येक नागरिक के लिए उपयोगी हैं। अतः आप अपने परिचित साथियों, इष्ट मित्रों को भी इसके प्रयोगों का अभ्यास करवा सकते हैं।

अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा एवं निर्वर्तमान अध्यक्ष संचय जैन ने भी जीवन विज्ञान विभाग की पूरी टीम एवं नव-प्रशिक्षित प्रशिक्षकों को बधाई देते हुए कहा कि जो गति जीवन विज्ञान ने पकड़ी है, वह निश्चित ही शुभ भविष्य की सूचक है।

प्रमाण-पत्र प्राप्तकर्ताओं में से मीना ओस्तवाल, ललिता धारीवाल, रचना कटारिया, नवीन दूगड़, पुष्पलता पींचा, नीलम बुच्चा, जयश्री होंगड़, पिंकी सालेचा, रामावतार यादव तथा कमल बैंगानी ने जीवन विज्ञान के लिए निष्ठापूर्वक काम करने का संकल्प व्यक्त किया।

इससे पहले प्रशिक्षक हनुमानमल शर्मा द्वारा जीवन विज्ञान गीत की प्रस्तुति से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। अणुविभा की उपाध्यक्ष तथा जीवन विज्ञान प्रभारी माला कातरेला ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि स्वस्थ समाज की संरचना हेतु देश की भावी पीढ़ी को संस्कारित करना अत्यन्त जरूरी है। इस दिशा में जीवन विज्ञान विभाग पूरी निष्ठा से कार्य कर रहा है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए जीवन विज्ञान के राष्ट्रीय सह-संयोजक कमल बैंगानी ने बताया कि अभी लगभग 28 प्रशिक्षकों को सांकेतिक रूप से प्रमाण-पत्र दिये जा रहे हैं। शेष प्रमाण-पत्र शीघ्र ही दे दिये जाएंगे। ऑनलाइन प्रशिक्षण प्रभारी रीना गोयल ने आभार ज्ञापन किया। ऑनलाइन आयोजित कार्यक्रम में डॉ. हंसा संचेती, प्रभारी उच्च शिक्षा प्रबंधन जीवन विज्ञान सहित अनेक जीवन विज्ञान कार्यकर्ता उपस्थित रहे।



मुंबई और गाजियाबाद में अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन

■■ संयोजक डॉ. धनपत लुनिया की रिपोर्ट ■■



मुंबई। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति मुंबई द्वारा 13 मई की शाम अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन विष्णुदास भावे नाट्यगृह वाशी में अणुविभा के अध्यक्ष अविनाश नाहर की अध्यक्षता में किया गया। इस दौरान विभिन्न कवियों ने अणुव्रत आचार सहिता को जब अपनी काव्य रचनाओं में पिरोकर उसे प्रस्तुत किया तो श्रोता मंत्रमुग्ध हो गये।

सांताकूज भजन मंडली ने अणुव्रत गीत का सुमधुर संगान कर कार्यक्रम की शुरूआत की। जोधपुर से समागत कवयित्री आयुषि राखेचा ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। नाथद्वारा से समागत कवि कानू पंडित ने अपनी काव्य रचना के माध्यम से बताया कि काम, क्रोध, लोभ को छोड़ना एवं हिंसा से दूर रहकर संयमित जीवन जीना सिखाता है अणुव्रत। मावली उदयपुर से आये कवि मनोज गुर्जर ने कहा कि अणुव्रत के सिद्धांतों को अपनाकर शांतिप्रिय जीवन जी सकते हैं, इससे विश्व का कल्याण हो सकता है। मनोज गुर्जर व कानू पंडित ने मेवाड़ी शैली में काव्य रचनाएँ सुनाकर सभी को हँसा-हँसाकर लोट-पोट कर दिया। इंदौर से आये मुकेश मोलवा ने वीररस एवं देशभक्ति पर रचनाएं प्रस्तुत कीं।

शाजापुर मध्यप्रदेश से आये कवि दिनेश देसी धी ने छोटे-छोटे उदाहरणों से अणुव्रत के

नियमों पर सारांभित प्रस्तुति दी। कवि सम्मेलन का सफल संचालन केकड़ी से आये कवि बुद्धिप्रकाश दाधीच ने किया। इस दौरान पूरा ऑडिटोरियम अणुव्रतमय बन गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सोहनलाल, मेघराज, अजीत धाकड़, सुंदरलाल परमार, गेहरीलाल चौधरी, गणपतलाल डागलिया तथा स्वागताध्यक्ष माणकलाल कच्छारा, नरेश मादरेचा, कैलास सियाल थे। इससे पहले अणुव्रत समिति मुंबई के अध्यक्ष रोशनलाल मेहता ने स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम में अणुविभा के उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, महामंत्री भीखम सुराणा,



सहमंत्री मनोज सिंघवी, महाराष्ट्र प्रभारी रमेश धोका, मीडिया प्रभारी महावीर बड़ाला, विशेष अतिथि माणक, रवि, ऋषि, कवीर धींग, सुशीला, रोशन, जैनिश मेहता उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में संयोजक देवेंद्र लोढा, सहमंत्री मनोहर कच्छारा, किशोर धाकड़, उपाध्यक्ष चन्द्रप्रकाश बोहरा, संगठन मंत्री मनीषा चंडालिया, मंत्री राजेश चौधरी, कोषाध्यक्ष ख्याली कोठरी, पूर्व अध्यक्ष अर्जुनलाल बाफना आदि की विशेष भूमिका रही।

गाजियाबाद। अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति गाजियाबाद ने अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन 12 मई को केबीसी बैंकेट हॉल सूर्यनगर में किया। अणुविभा महामंत्री भीखम सुराणा की मंगलकामनाओं से कार्यक्रम की



शुरुआत हुई। कार्यक्रम में गाजियाबाद जिला अधिकारी इंद्र विक्रम सिंह, निगम पार्षद कृष्ण शशि खेमका, वन विभाग के अधिकारी विकास सिंटोरिया, अणुविभा की संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया, काव्यधारा के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. धनपत लुनिया व विभिन्न समाज के पदाधिकारी गण की गरिमामयी उपस्थिति रही।

खचाखच भरे हॉल में वीर रस के कवि गजेन्द्र सोलंकी, प्रसिद्ध कवयित्री डॉ. कीर्ति काले, ओमप्रकाश कल्याणे, प्रियंका राय, सुधा संजीवनी आदि ने अणुव्रत आधारित काव्यपाठ से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। डॉ. कीर्ति काले के संचालन में कवयित्री प्रियंका राय ने नारी जागृति पर काव्य पाठ किया। ओमप्रकाश कल्याणे के हास्य व सुधा संजीवनी की काव्य रचनाओं को सभी ने खूब सराहा। गजेन्द्र सोलंकी द्वारा महावीर स्तुति व अणुव्रत आचार संहिता पर आधारित रचनाओं से कार्यक्रम में चार चाँद लग गये। डॉ. कीर्ति काले ने जब अणुव्रत आंदोलन के

प्रवर्तक आचार्य तुलसी के जीवन पर आधारित रचना सुनायी तो सभी श्रोता भाव विभोर होकर आचार्यश्री के सम्मान में अपने स्थानों पर खड़े हो गये तथा करतल ध्वनि से सभागर को गुंजायमान कर दिया। निकिता बेगवानी व रिद्धि अग्रवाल ने भी कविताएं पढ़ीं। डॉ. कुसुम लुनिया ने इस मंच के माध्यम से अणुव्रत आचार संहिता के तीन संकल्प दिलवाये - 1. निरपराध प्राणी का संकल्प पूर्वक वध नहीं करूँगा, 2. व्यसनमुक्त जीवन जीऊँगा 3. मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा।

मंचीय कार्यक्रम का संचालन समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष शरद बार्ष्ण्य ने किया। अणुव्रत समिति की अध्यक्ष कुसुम सुराणा ने आभार ज्ञापन किया।

कार्यक्रम के संयोजक हेमंत सुराणा और उनकी टीम की मेहनत की बदौलत कार्यक्रम खूब शानदार रहा। मंत्री अनिल लुनिया, कोषाध्यक्ष महेंद्र धीया, वीरेंद्र आदि ने सभी गणमान्य लोगों को पटका पहना कर स्वागत किया व कविगण और अर्थ सहयोगियों को अणुव्रत आचार संहिता का प्रतीक चिह्न देकर सम्मान किया। आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष विशाल संचेती ने किया।





'विश्व पर्यावरण दिवस'

के सन्दर्भ में

आचार संहिता का 11वां अणुव्रत

मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा।
हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा।
पानी, बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

ग्यारहवें अणुव्रत को जीवन में उतारने के लिए निम्नांकित लघु-सूत्र आपके सहयोगी बनेंगे। इन्हें अपनी सुविधा और धारणा के अनुरूप व्रत के रूप में स्वीकार कर अपनी जीवनशैली का अभिन्न अंग बनाएं।

- मैं पॉलिथीन थैलियों के उपयोग से यथासंभव बचने का प्रयास करूँगा।
- मैं पेड़ नहीं काटूँगा न किसी से कटवाऊँगा।
- कहीं पेड़ काटे जा रहे हों तो उन्हें न काटने हेतु समझाने का प्रयास करूँगा।
- मैं स्नान, ब्रश और शेविंग आदि करते समय पानी के उपयोग को कम से कम करने की कोशिश करूँगा।
- हफ्ते में तीन दिन से अधिक शॉवर बाथ नहीं करूँगा और बाथ टब के उपयोग से बचूँगा।
- कागज या कागज से बनी वस्तुओं का अपव्यय नहीं करूँगा, उनके उपयोग में संयम रखूँगा।
- जहाँ रुमाल, तौलिया, कपड़ा आदि का उपयोग हो सके, वहाँ टिश्यू पेपर का उपयोग नहीं करूँगा।
- सिंगल यूज़ प्लास्टिक का उपयोग करने से यथासम्भवतया बचूँगा।

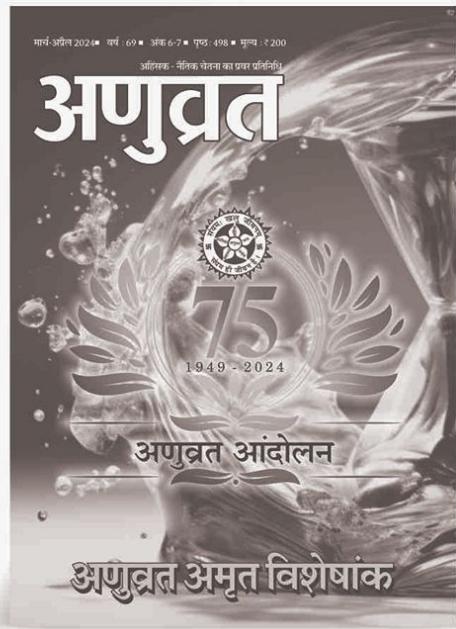
अणुव्रत संकल्प लेने के लिए इस क्यूआर कोड को स्कैन करें -



 **अणुव्रत विश्व
भारती सोसायटी**



अणुव्रत अमृत विशेषांक पाठक परख



अणुव्रत आंदोलन के गैरवशाली 75 वर्षों की सफल सम्पूर्ति पर वर्ष पर्यन्त मनाये गये 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' के क्रम में वैविध्यपूर्ण प्रकल्पों की एक वृहद् शृंखला आयोजित हुई। इस शृंखला की अंतिम कड़ी के रूप में प्रस्तुत हुआ - 'अणुव्रत अमृत विशेषांक'। हमारा विनम्र प्रयास रहा कि इस विशेषांक को पठनीय, मननीय और संग्रहणीय बनाया जा सके।

अणुव्रत अमृत विशेषांक के संदर्भ में हमें निरंतर संवाद और सम्मतियाँ प्राप्त हो रही हैं। कुछ संवाद तो इतने विस्तृत हैं कि स्थानाभाव के कारण उन्हें जस का तस प्रकाशित करना संभव नहीं हो पा रहा है। आप सब के स्मेह व समर्थन के हम हृदय से आभारी हैं। 'पाठक परख' के अंतर्गत आगामी अंकों में आप कुछ और प्रबुद्ध पाठकों के मूल्यवान विचारों से परिचित हो सकेंगे।

अणुव्रत दर्शन के प्रसार में सहायक

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा अणुव्रत आंदोलन के 75 वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' के अवसर पर प्रकाशित अणुव्रत पत्रिका के 'अणुव्रत अमृत विशेषांक 2024' की प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पुस्तक में अणुव्रत आंदोलन के दौरान किये गये रचनात्मक कार्यक्रमों का सजीव चित्रण सराहनीय है। मुझे विश्वास है कि पुस्तक पाठकों के लिए अणुव्रत दर्शन के संबंध में ज्ञानवृद्धि में उपयोगी सिद्ध होगी।

-आनंदीबेन पटेल, राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

अमृत घट के तुल्य

अहिंसा एवं नैतिक चेतना की प्रतिनिधि पत्रिका 'अणुव्रत' का अमृत विशेषांक प्राप्त हुआ। लगभग 500 पृष्ठ के इस महा विशेषांक में अध्यात्म-ज्ञान के साथ जीवन से जुड़े विषयों पर विद्वत जन के महत्वपूर्ण लेख समाहित हैं। इन सभी विचारों के मूल में है जीवन में शांति, अहिंसा, पर्यावरण एवं जल सुरक्षा, संयम, देश में बदलती जीवनशैली से उपजी वर्तमान गंभीर समस्याएं, मर्यादित जीवनशैली, संस्कार एवं अन्य चारित्रिक मूल्य। संक्षेप में कहूं तो अणुव्रत ने जो पाँच महत्वपूर्ण सूत्र बनाये हैं – बौद्धिकता, प्रायोगिकता, समाधानप्रक्रिया, वर्तमान को प्रधानता और धार्मिक सद्भावना। इन पाँचों के पालन से जीवन में आने वाले सकारात्मक बदलाव पूरे समाज को परिवर्तित करेंगे। समाज की यही बदलती तस्वीर ही आचार्य तुलसी का सपना था। आज विश्व जिस अशांति के दौर से गुजर रहा है, उसने अणु अस्त्रों का जमघट लगा रखा है और यही अणु

अस्त्र समाज में भय और हिंसा फैला रहे हैं। यदि इसके स्थान पर इन पाँच सिद्धांतों का अणुव्रत ले लिया जाये तो विश्व में सर्वत्र शांति स्थापित हो जाएगी, इसमें कोई संदेह नहीं। वहीं अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी अपने प्रेरणा पाथेर में मनुष्य को कर्मयोगी होने का संदेश देते हैं। इस अंक में समाजोत्थान के तमाम विषय आपको पढ़ने को मिलेंगे। साथ ही नशामुक्ति, दूरदर्शी सोच, अस्पृश्यता उन्मूलन, सद्भाव, साहित्य व कला के प्रति अनुराग, महिला उत्थान, संगठन, भावी पीढ़ी में संस्कारों का बीजारोपण, नैतिक मूल्य आदि। इस साहित्यिक अनुष्ठान में मुझे भी शामिल करने हेतु संपादक आदरणीय संचय जैन सर एवं मोहन मंगलम जी का आभार।

कुल मिलाकर अगर कहूं तो अतिशयोक्ति न होगी कि यह विशेषांक एक अमृत घट के तुल्य है। जो भी इसका रसापन करेगा और सम्पूर्ण न सही कुछ बूँद मात्र भी अपने भीतर अगर समाहित करेगा तो उसके जीवन का मंगल निश्चित है। यह विशेषांक संग्रहणीय तो है ही, जीवन को सही दिशा, विचारों को सही गति प्रदान करने के साथ ही हम जीवन में कैसे अणुव्रत को धारण कर एक सुसंस्कृत समाज निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं, इस संबंध में मार्ग प्रशस्त करेगा।

-डॉ. लता अग्रवाल, भोपाल

हरियल मानवीय भावों की संदूकची

अणुव्रत पत्रिका का अमृत विशेषांक मानवीय भावों को पोसने वाली सामग्री लिये हैं। जीवनशैली से लेकर आत्मीय धरातल तक सभी विषयों को छूते लेख, विचार और गुरुजनों के अनमोल वचन इसे एक सहेजने योग्य अंक बनाते हैं। विशेषांक के पत्रों से गुजरते हुए यह समझना कठिन नहीं कि इसे तैयार

करने में कितना श्रमसाध्य कार्य किया गया है। अपने-आप में एक पूर्ण-सम्पूर्ण अंक बनाती सामग्री का संकलन सचमुच सराहनीय है। लुप्त होती चेतना और चारित्रिक बल के वर्तमान दौर में ऐसी सामग्री मन-जीवन को दिशा देने वाली है। हर मोर्चे पर छीजें जीवन मूल्यों के बीच कुछ सहेज लेने के सुंदर प्रयास के समान।

देखा जाये तो आज ठहरकर मानवीय जीवन के बहुत से पक्षों पर सोचने की आवश्यकता भी है। हर ओर हिंसा और द्रेष के विस्तार पाते भावों के बीच आलेख, मंगल संदेश, लघुकथाएं, कहानियाँ और वरिष्ठजनों के ये आलेख वैचारिक आलेख वाकई पठनीय हैं। विचार और व्यवहार में सहिष्णुता लाने का संदेश देते हैं। सहिष्णुता हर जीव के प्रति। प्रकृति के प्रति। इंसानी जीवन और मन के भाव-चाव के प्रति। नैतिक विचार, आत्मसंयम और चरित्र निर्माण के विचारों से मिलने वाली दिशा हर किसी के लिए अनुकरणीय है। समाज में मौजूद आडम्बरों के विरोध से लेकर विश्व शांति को बढ़ावा देने वाले विचारों तक, बहुत कुछ इस विशेषांक के पत्रों में समाया है। सम सामयिक विषयों के साथ ही चिंतनशील टिप्पणियाँ भी इस संग्रहणीय अंक का हिस्सा बनी हैं।

'भावपूर्ण जुड़ाव से बचेगी मानवता' लेख के माध्यम से इस सार्थक अंक में भागीदारी करने का मुझे सौभाग्य मिला है। अणुव्रत पत्रिका के समृद्ध-सार्थक अंक के लिए पूरी टीम को बधाई, शुभकामनाएं।

-डॉ. मोनिका शर्मा, मुंबई

अणुव्रत के साथ जीवन की कदमताल

अणुव्रत अमृत विशेषांक में 9 खंड नौ दुर्गा जैसे हैं और जब नौ दुर्गा एकाकार हो जाती हैं तो शक्ति पुंज बन जाती हैं तथा तेज व ऊर्जा का संचार होने लगता है। ठीक वैसे ही 9 खंडों से मिलकर यह असीम ऊर्जा से ओतप्रोत 'अणुव्रत अमृत विशेषांक' बना है। हर भाग को पढ़ते हुए ऐसा महसूस होने लगता है जैसे जीवन में संभावनाओं के द्वारा खुले पड़े हैं। हमें तो महज अपने सत्कर्मों से उसमें प्रवेश करने की जरूरत है। विशेषांक का संपादकीय अणुव्रत आंदोलन के आधारभूत सिद्धांतों के प्रसार को बढ़ावा देता है।

विशेषांक के दूसरे भाग का शीर्षक 'अणुव्रत आंदोलन का अध्यात्म बल' है। इस खंड में अणुव्रत के विभिन्न पहलुओं की बहुत ही सुंदर ढंग से व्याख्या की गयी है, जैसे व्यक्ति-व्यक्ति का चारित्रिक उत्थान, साम्प्रदायिक सद्भावना का विकास, अहिंसक चेतना का जागरण, नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना और नशामुक्त समाज का निर्माण। अणुव्रत के माध्यम से मानवता के

उत्थान के लिए किये गये प्रयासों को समझाने के लिए ये आलेख बहुत महत्वपूर्ण हैं।

तीसरे भाग में शांतिप्रिय विश्व और अणुव्रत की अपरिहार्यता के तहत मानव निर्मित समस्याओं के समाधान सुझाकर एक उम्मीद जगाने का प्रयास किया गया है। बताया गया है कि आत्मसंयम का अणुव्रत लेकर आज का युवा जीवन मूल्यों की मशाल जला सकता है। एक आलेख में डिजिटल एडिक्शन के मोहपाश से बचने के लिए अलर्ट करने का प्रयास किया गया है। साथ ही यह संदेश देने का प्रयास किया गया है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण बेहद महत्वपूर्ण विषय है।

विशेषांक के चौथे भाग में देश-दुनिया में अणुव्रत दर्शन को प्रसारित करने वाले कार्यकर्ताओं ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए अणुव्रत की ताकत को प्रमाणित किया है। पाँचवें भाग में 'अणुव्रत आंदोलन की अमृत यात्रा - 75 वर्ष : 75 झलकियाँ' ऐतिहासिक घटनाओं का गौरवशाली सफर है। इनमें विनोबा भावे जैसी शर्कियत का अणुव्रत आंदोलन से जुड़ना, आचार्य तुलसी का विनोद से विरोध को निपटाना, अणुव्रत पाक्षिक पत्रिका का प्रारंभ, यूएनओ तक अणुव्रत आंदोलन की गूँज आदि का प्रस्तुतीकरण इतना जीवंत है जैसे हर घटना सामने घटित हो रही हो।

विशेषांक का छठा भाग अणुव्रत के पुरोधाओं को समर्पित है। इसमें प्रथम अणुव्रती और प्रमुख चारित्रिकात्माओं को स्थान दिया गया है जिन्होंने अपने चिंतन और परिश्रम से अणुव्रत आंदोलन को सींचा है। सातवें भाग में अणुव्रत की आधारभूमि तैयार की गयी है जिस पर आसीन होकर चरित्र निर्माण की मंजिल हासिल की जा सकती है। आठवें प्रखंड में अमृत महोत्सव वर्ष के दौरान होने वाली कार्यशाला, प्रदर्शनी, अधिवेशन, समारोह, नाटक मंचन जैसी अनेक गतिविधियों को सचित्र सुव्यवस्थित, सुसंगठित और क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया गया है।

विशेषांक के नौवें और अंतिम खंड तक पहुँचते-पहुँचते ऐसा एहसास होने लगता है जैसे अमृत पान कर लिया हो। वैचारिक शुद्धता आ गयी हो। इस खंड में उन संस्थाओं का जिक्र है जिनसे जुड़कर कार्यकर्ताओं के एक सुदृढ़ नेटवर्क को खड़ा करने में अहम भूमिका निभायी। इस खंड में अणुव्रत आंदोलन का प्रबंधन और संचालन करने वाली संस्थाओं की भूमिका नींव की ईंट की मानिंद नजर आ रही है। अंत में यही कह सकती हूँ कि अणुव्रत अमृत विशेषांक को पढ़ें और जीवन में आगे बढ़ें।

-डॉ. नीलम जैन, बीकानेर



चित्रकला एवं स्लोगन प्रतियोगिता

सिलीगुड़ी। अणुव्रत समिति द्वारा भगवान महावीर जन्म कल्याण महोत्सव के अवसर पर चित्रकला एवं स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें लगभग 65



प्रतिभागियों ने भाग लिया। शाम में संगीत कार्यक्रम से पूर्व स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन समर्णी मंजूप्रज्ञाजी एवं समर्णी स्वर्णप्रज्ञाजी के सान्निध्य में हुआ। प्रतियोगिता के निर्णायक मण्डल में जज कमल किशोर पुगलिया, नीलू जैन व शान्ति संचेती रहे। इसमें लगभग 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

सुबह बच्चों की स्लोगन प्रतियोगिता में प्रथम प्रतीक पगारिया, द्वितीय पहल जैन व तृतीय मयंक जैन रहे। चित्रकला प्रतियोगिता बच्चों में प्रथम हिती जैन, द्वितीय प्रज्ञा जैन, तृतीय सिद्धि गिरिया रहे। स्लोगन प्रतियोगिता में बड़ों में प्रथम कुसुम सुराणा, द्वितीय मदनलाल जैन व तृतीय रश्मि भंसाली, चित्रकला में प्रथम सोनिया जैन, द्वितीय जूही जैन व तृतीय मुकेश जैन रहे। कार्यक्रम संयोजिका उमा देवी नौलखा ने बताया कि रात्रिकालीन स्लोगन प्रतियोगिता में प्रथम सुधा मालू, द्वितीय संगीता घोषल, तृतीय समता पगारिया रहे।

नशामुक्ति का संदेश

वापी। अणुव्रत समिति वापी तथा तेरापंथ महिला मंडल वापी के तत्त्वावधान में 29 अप्रैल को कैंसर अवेयरनेस कार्यक्रम के तहत श्रमिकों को नशामुक्त होने की प्रेरणा दी गयी। कार्यक्रम में डॉ. पूजा शाह ने पान, गुटखा और अल्कोहल से होने वाली जानलेवा बीमारी कैंसर के बारे में जानकारी दी।

अणुव्रत समिति की अणुव्रत सप्ताह प्रभारी शिल्पा लोढ़ा ने नशे से बचने के उपाय बताये और मंत्री हेमा बोथरा ने मजदूरों को नशे के कारणों के साथ ही उससे मुक्ति के लिए कैसे संकल्पबद्ध हों, इसके बारे में बताया। कार्यक्रम में कई मजदूरों ने नशामुक्ति के संकल्प पत्र भी भरे। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति की जीवन विज्ञान प्रभारी मधु गोलछा, सह प्रभारी निर्मला शेखावत, संगठन मंत्री सरोज सुराणा का सहयोग रहा।

विश्व पृथ्वी दिवस के उपलक्ष्मे कार्यक्रम

मंडीगोविंदगढ़ अणुव्रत समिति ने श्री गुरु हरगोबिंद हायर सेकंडरी स्कूल (खालसा स्कूल) में विश्व पृथ्वी दिवस के उपलक्ष्मे में कार्यक्रम आयोजित किया। इस दौरान बच्चों ने पृथ्वी बचाओ, पानी बचाओ, पर्यावरण बचाओ, पॉलिथीन भगाओ



विषय पर विचार रखे। इसमें करीब 800 बच्चे शामिल हुए। प्रिसिपल डॉ. गुरदीप सिंह ने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए कहा कि अणुव्रत समिति पर्यावरण, नशामुक्ति, भूणहत्या समेत कई विषयों पर तन-मन-धन से काम कर रही है। समिति के अध्यक्ष पुरखोत्तम जैन ने कहा कि हर विद्यार्थी 'एक पेड़ देश के नाम' अवश्य लगाये और उसकी सार-संभाल करे ताकि हमें आँकसीजन मिलती रहे।

'जल संवर्धन में समुदाय की भूमिका'

अणुव्रत समिति इंदौर की ओर से 23 अप्रैल को राऊ, इंदौर स्थित आईआईएसटी कैम्पस में 'जल संवर्धन में समुदाय की भूमिका' विषय पर पर्यावरण जागरूकता सत्र का आयोजन हुआ।



मुख्य बक्ता रेमन मैसेसे तथा जमनालाल बजाज पुरस्कार से सम्मानित तथा द वाटरमैन ऑफ इंडिया के नाम से प्रसिद्ध डॉ. राजेंद्र सिंह ने शहर के पर्यावरण विशेषज्ञों व भावी पीढ़ी के समक्ष अपने अनुभव साझा किये। कार्यक्रम में समिति की ओर से निलेश पोखरना, मनीष कठोतिया और राजेंद्र सिंह 'वृक्षमित्र' ने डॉ. राजेंद्र सिंह को अणुव्रत के बारे में बताया व उन्हें अणुव्रत डायरी तथा साहित्य भेंट किया। आईआईएसटी के डायरेक्टर जनरल अरुण एस. भट्टाचार्य को भी अणुव्रत डायरी भेंट की गयी।

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

अरे वाह, नेताजी के साथ
आपका फोटो छपा है!

हाँ, कल अपनी सोसायटी के
खाली सूखे पड़े पार्क में नेताजी
ने वृक्षारोपण किया था।

वाह, ये तो बहुत
नेक काम हुआ।

हाँ, इसके लिए हमने पौधे लाने,
गड़े खोदने, पानी और खुरपी
की सारी व्यवस्था की थी।

एक बात बताओ, आपने वहाँ
पौधों की रोजाना देखभाल के लिए
क्या व्यवस्था की है?
पेड़-पौधों की सुरक्षा के बिना
वृक्षारोपण एक दिखावा मात्र है।

तुम सही कह रही हो। इस बारे में
हम सोच रहे हैं लेकिन अभी 2-4 ही
स्वयं सेवक तैयार हुए हैं।
क्या तुम और तुम्हारी सहेलियाँ
इसमें मदद करोगी?

हाँ-हाँ, क्यों नहीं!
यह जिम्मेदारी अब मेरी।



Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional



International



Akash Ganga®

— *Integrity at work* —

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom,
Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur,
New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahmedabad • Bangalore • Chennai
Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguri • Surat





नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता
को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान



अनुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट - 2024



प्रतियोगिताएं

चित्रकला
निबंध

गायन (एकल)
गायन (समूह)

भाषण
कविता

मुख्य विषय
व्यक्तित्व निर्माण से
राष्ट्र निर्माण

राष्ट्रीय विजेताओं को
आकर्षक पुरस्कार

समूह-1 कक्षा 5-8 ■ समूह-2 : कक्षा 9-12

सहभागिता

15+ राज्य

200+ शहर/कस्बे

1+ लाख बच्चे

अधिक जानकारी
के लिए संपर्क करें

<https://anuvibha.org/acc> acc@anuvibha.org

+91-91166-34514 +91-91166-34517

आयोजक

अनुव्रत
विश्व भारती
सोसायटी

ANUVRAT
RNI No. 7013/57
June, 2024

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2024-26
Licence No. U(C)-215/2024-26
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/05/2024
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month



पर्यावरण जागरूकता अभियान



**अनुव्रत विश्व
भारती सोसायटी**

अभियान से जुड़ने के लिये सम्पर्क करें
9116634512, 80581 83197

आइए,
**अनुव्रत की
अलख जगाएं
धरती को
स्वर्ग बनाएं**

प्रकाशक एवं मुद्रक संचय जैन द्वारा स्वत्वाधिकारी अनुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 के लिए एड किंग डी-55/बी, हर्ष नगर, हरि नगर, ओखला फेस-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - संचय जैन